

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय  
विश्व विद्यालय, पाण्डव भवन,  
आबू पर्वत, राजस्थान

अप्यक्त शिष्याया औऱ ब्रह्माया ने  
ब्रह्माकुमारी हृदयमोहिनी जी के माध्यम से  
ब्रह्मा-पुत्रों के अमुख जो कल्याणकारी  
महापुत्र उच्चारण किये,  
यह पुस्तक उनका संकलन है।

प्रकाशक :

साहित्य विभाग

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

19/17, शक्ति नगर, दिल्ली - 110 007

☎ 7142877, 7142912

पुस्तक मिलने का पता :

साहित्य विभाग,

पाण्डव भवन,

आबू पर्वत-307 501 (राजस्थान)

मुद्रक :

ओम्शान्ति प्रेस,

शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)

☎ 28124, 28125

---

© Copyright : Brahma Kumaris Ishwariya Vishwa Vidyalaya, Mount Abu, (Raj)

No part of this book may be printed without the permission of the publisher.

## अमृत-सूची

1. सेवा के साथ देह में रहते  
विदेही अवस्था का अनुभव बढ़ाओ (21-11-98)..... 5
2. मेरे-मेरे का देह-अभिमान छोड़  
ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो (12-12-98) ..... 13
3. इस नये वर्ष में हिम्मत के आधार पर स्वयं को मेहनत मुक्त  
सदा विजयी अनुभव करो (31-12-98)..... 24
4. वर्तमान समय के प्रमाण वैराग्य वृत्ति को इमर्ज कर  
साधना का वायुमण्डल बनाओ (18-1-99) ..... 42
5. शिव अवतरण और एकानामी के अवतार (13-2-99) ..... 51
6. होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनकर  
संस्कार मिलन मनाना (1-3-99) ..... 59
7. कर्मातीत अवस्था तक पहुंचने के लिए कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ  
स्वराज्य अधिकारी बनो (15-3-99) ..... 75
8. तीव्र पुरुषार्थ की लगन को ज्वाला रूप बनाकर  
बेहद के वैराग्य की लहर फैलाओ (30-3-99) ..... 83

## अव्यक्त सन्देश

1. आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए  
मन-बुद्धि की एक्सरसाइज़ करो (6-8-94)..... 93
2. सेवा का प्रोग्राम और स्व प्रोग्रेस  
दोनों के बैलेन्स से ब्लैसिंग की प्राप्ति (22-10-94) ..... 95
3. सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्षफल का अनुभव करना (23-1-95) .... 97
4. प्रत्यक्षता होना अर्थात् संगमयुग की समाप्ति होना (24-6-95)... 98
5. विश्व रक्षक मेरा साथी है –  
इसी रूहानी फखुर में रहो (7-8-95) ..... 101
6. हिम्मत रखने से हिम्मत के फल की प्रत्यक्ष प्राप्ति (21-9-95) 102
7. एक बाप दूसरा न कोई –  
इस अनुभव से सेवाओं का विस्तार (18-7-96) ..... 104

8.	दीपावली – तीन स्मृतियों का यादगार (8-11-96) .....	106
9.	अचानक के हर दृश्य में एवररेडी रहो (13-3-97) .....	107
10.	स्वयं को दृढ़ संकल्प रूपी धागा बाँध बाप की आशाओं को पूरा करो (20-7-97) .....	110
11.	पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ्टी का साधन (7-8-97) .....	112
12.	बालक और मालिकपन के बैलेन्स से सफलतामूर्त बनो (27-8-97) .....	113
13.	होली बनकर होलीएस्ट बाप के साथ सच्ची होली मनाओ (12-3-98) .....	114
14.	विशेष आत्माओं के हर कदम में सेवा (16-3-98) .....	117
15.	सेवा के साथ-साथ स्व-उन्नति का बैलेन्स रखो (7-4-98) .....	118
16.	समय की समीपता बाप की समीपता का अनुभव कराती है (21-4-98) .....	120
17.	बेहद के वैराग्य वृत्ति से विश्व परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करो (19-6-98) .....	122
18.	4 गेट और उनसे पार होने की विधि – बेहद का वैराग्य (25-6-98) .....	124
19.	बुद्धि से उपराम रह अब घर चलने की तैयारी करो (30-7-98) .....	129
20.	रियलाइज़ के साथ-साथ उसे बार-बार रिवाइज़ करो तो परिवर्तन स्थाई हो (22-8-98) .....	133
21.	सफलता का आधार – ब्राह्मणों के शुभ संकल्प (20-2-99) ..	136
22.	समीप और समान भव (20-3-99) .....	137
23.	बार-बार पोज़ बदलने के बजाए अपनी पोज़ीशन में रहो (6-4-99) .....	138
24.	वरदानों और दुआओं से प्रकृति का हिसाब-किताब सहज चुक्तू हो जाता है (21-4-99) .....	142
25.	“यह समय है – हिम्मत से उड़ने का घबराने का नहीं” (29.4.99) .....	144
26.	“बीती को बिन्दी लगाओ और बिन्दु बन परमात्म-स्मृति में रहो” (10.5.99) .....	144

## भैया के साथ देह में रहते विदेही अवस्था का अनुभव थड़ाओ

आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि बाप जानते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा चाहे लास्ट पुरुषार्थी भी है फिर भी विश्व में सबसे बड़े ते बड़े भाग्यवान है क्योंकि भाग्य विधाता बाप को जान, पहचान भाग्यविधाता के डायरेक्ट बच्चे बन गये। ऐसा भाग्य सारे कल्प में किसी आत्मा का न है, न हो सकता है। साथ-साथ सारे विश्व में सबसे सम्पत्तिवान वा धनवान और कोई हो नहीं सकता। चाहे कितना भी पद्मपति हो लेकिन आप बच्चों के खज़ानों से कोई की भी तुलना नहीं है क्योंकि बच्चों के हर कदम में पद्मों की कमाई है। सारे दिन में हर रोज़ चाहे एक दो कदम भी बाप की याद में रहे वा कदम उठाया, तो हर कदम में पद्म... तो सारे दिन में कितने पद्म जमा हुए? ऐसा कोई होगा जो एक दिन में पद्मों की कमाई करे! इसलिए बापदादा कहते हैं अगर भाग्यवान देखना हो वा रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड आत्मा देखनी हो तो बाप के बच्चों को देखो।

आप बच्चों के पास सिर्फ़ एक स्थूल धन का खज़ाना नहीं, वो तो सिर्फ़ धन के साहूकार हैं और आप बच्चे कितने खज़ानों से भरपूर हैं! खज़ानों की लिस्ट जानते हो ना? यह स्थूल धन तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन आपके पास जो ज्ञान का खज़ाना, शक्तियों का खज़ाना, सर्व गुणों का खज़ाना, खुशी का खज़ाना और सर्व को सुख-शान्ति का रास्ता बताने से जो दुआओं का खज़ाना मिलता है, यह अविनाशी खज़ाने सिवाए परमात्म बच्चों के अविनाशी किसके पास नहीं हैं। तो बापदादा को ऐसे खज़ानों के मालिक बच्चों पर कितना रूहानी नाज़ है। बापदादा सदा बच्चों को ऐसे सम्पन्न देख यही गीत गाते वाह बच्चे वाह! आपको भी अपने पर इतना रूहानी नाज़ अर्थात् नशा है ना! हाथ की ताली बजा सकते हो। (सभी ने तालियाँ बजाईं) दोनों हाथ को क्यों तकलीफ़

देते हो, एक हाथ की बजाओ। एक हाथ की ताली बजाना आता है ना! ब्राह्मणों का सब कुछ निराला है। ब्राह्मण शान्त पसन्द हैं इसलिए ताली भी शान्ति की ठीक है। तो नशा तो सभी को सदा है भी और आगे भी रहेगा। निश्चित है।

बापदादा समय के परिवर्तन की तीव्र रफ़्तार को देख बच्चों के पुरुषार्थ की रफ़्तार को भी देखते रहते हैं। बापदादा हर एक बच्चे को जीवनमुक्त स्थिति में सदा देखने चाहते हैं। आप सबका यह चैलेन्ज है कि बाप से मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा आकर लो। लेकिन आपको तो मुक्ति वा जीवनमुक्ति का वर्सा मिल गया है ना? या नहीं मिला है (मिला है) सतयुग में या मुक्तिधाम में मुक्ति व जीवनमुक्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे। मुक्ति-जीवनमुक्ति के वर्से का अनुभव अभी संगम पर ही करना है। जीवन में रहते, समय नाज़ुक होते, परिस्थितियाँ, समस्यायें, वायुमण्डल डबल दूषित होते हुए भी इन सब प्रभावों से मुक्त, जीवन में रहते इन सर्व भिन्न-भिन्न बन्धनों से मुक्त एक भी सूक्ष्म बन्धन नहीं हो – ऐसे जीवन मुक्त बने हो वा अन्त में बनेंगे? अब बनेंगे या अन्त में बनेंगे? जो समझते हैं अन्त में बनने के बजाए अभी बनना है, वा बने हैं या बनना ही है, वह हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) दोनों में मिक्स हाथ उठा रहे हैं, चतुर हैं। भले चतुराई करो। लेकिन बापदादा अभी से स्पष्ट सुना रहे हैं, अटेन्शन प्लीज़। हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से, लेकिन बनाना ज़रूर है। जानते हो ना कि विधियाँ क्या हैं? इतने तो चतुर हो ना! तो बनना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे चाहो, चाहे नहीं चाहो, बनना तो पड़ेगा ही। फिर क्या करेंगे? (अभी से बनेंगे) आपके मुख में गुलाबजामुन। सबके मुख में गुलाबजामुन आ गया ना। लेकिन यह गुलाबजामुन है – अभी बन्धनमुक्त बनने का। ऐसे नहीं गुलाबजामुन खा जाओ।

हाल की शोभा बहुत अच्छी है। एकदम माला लगती है। यहाँ से आकर देखो तो ऐसे माला लगती है। यह कुर्सियों वालों की माला तैयार हो गई है। अच्छा है। कारणे-अकारणें जैसे अभी कुर्सी ली है ना ऐसे ही जब बापदादा

फ़ाइनल समय प्रमाण सीटी बजायेंगे कि जीवनमुक्ति की कुर्सी पर बैठ जाओ तो भी बैठेंगे या अभी कुर्सी पर बैठे हैं? ऐसे नहीं कि धरनी पर बैठे हुए कुर्सी नहीं लेंगे, पहले आप। धरनी पर बैठना – यह है तपस्या की निशानी। तन्दरुस्ती की निशानी है। हेल्थ भी है, तपस्या द्वारा खज़ानों की वेल्थ भी है तो जहाँ हेल्थ है, वेल्थ है वहाँ हैपी तो है ही। तो अच्छा है –हेल्दी हो, वेल्दी हो।

तो बापदादा आज देख रहे थे कि बच्चों की तीन प्रकार की स्टेजेंस हैं। एक हैं – पुरुषार्थी, उसमें पुरुषार्थी भी हैं और तीव्र पुरुषार्थी भी हैं। दूसरे हैं – जो पुरुषार्थ की प्रालब्ध जीवनमुक्त अवस्था की स्टेज में अनुभव कर रहे हैं। लेकिन लास्ट की सम्पूर्ण स्टेज है – देह में होते भी विदेही अवस्था का अनुभव। तो तीन स्टेज देखीं। पुरुषार्थ की स्टेज में ज़्यादा देखे। प्रालब्ध जीवनमुक्त की, प्रालब्ध यह नहीं कि सेन्टर के निमित्त बनने की वा स्पीकर अच्छे बनने की वा ड्रामा अनुसार अलग-अलग विशेष सेवा के निमित्त बनने की..... यह प्रालब्ध नहीं है, यह तो लिफ्ट है और आगे बढ़ने की, सर्व द्वारा दुआयें लेने की लेकिन प्रालब्ध है जीवनमुक्त की। कोई बन्धन नहीं हो। आप लोग एक चित्र दिखाते हो ना! साधारण अज्ञानी आत्मा को कितनी रस्सियों से बंधा हुआ दिखाते हो। वह है अज्ञानी आत्मा के लिए लोहे की जंजीर। मोटे-मोटे बंधन हैं। लेकिन ज्ञानी तू आत्मा बच्चों के बहुत महीन और आकर्षण करने वाले धागे हैं। लोहे की जंजीर अभी नहीं है, जो दिखाई दे देवे। बहुत महीन भी है, रॉयल भी है। पर्सनैलिटी फील करने वाले भी हैं, लेकिन वह धागे देखने में नहीं आते, अपनी अच्छाई महसूस होती है। अच्छाई है नहीं लेकिन महसूस ऐसे होती है कि हम बहुत अच्छे हैं। हम बहुत आगे बढ़ रहे हैं। तो बापदादा देख रहे थे – यह जीवन-बन्ध के धागे मैजारिटी में हैं। चाहे एक हो, चाहे आधा हो लेकिन जीवनमुक्त बहुत-बहुत थोड़े देखे। तो बापदादा देख रहे थे कि हिसाब के अनुसार यह सेकण्ड स्टेज है जीवनमुक्त, लास्ट स्टेज तो है – देह से न्यारे विदेहीपन की। उस स्टेज और जो स्टेज सुनाई उसके लिए और बहुत-बहुत-बहुत अटेन्शन चाहिए। सभी बच्चे पूछते हैं 99 आयेगा क्या होगा? क्या करें? क्या करें, क्या

नहीं करें ?

बापदादा कहते हैं 99 के चक्कर को छोड़ो। अभी से विदेही स्थिति का बहुत अनुभव चाहिए। जो भी परिस्थितियाँ आ रही हैं और आने वाली हैं उसमें विदेही स्थिति का अभ्यास बहुत चाहिए। इसलिए और सभी बातों को छोड़ यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा। क्या होगा, इस क्वेश्चन को छोड़ दो। विदेही अभ्यास वाले बच्चों को कोई भी परिस्थिति वा कोई भी हलचल प्रभाव नहीं डाल सकती। चाहे प्रकृति के पांचों ही तत्व अच्छी तरह से हिलाने की कोशिश करेंगे परन्तु विदेही अवस्था की अभ्यासी आत्मा बिल्कुल ऐसा अचल-अडोल पास विद् ऑनर होगा जो सब बातें पास हो जायेंगी लेकिन वह ब्रह्मा बाप के समान पास विद् ऑनर का सबूत रहेगा। बापदादा समय प्रति समय इशारे देते भी हैं और देते रहेंगे। आप सोचते भी हो, प्लैन बनाते भी हो, बनाओ। भले सोचो लेकिन क्या होगा!... उस आश्चर्यवत होकर नहीं। विदेही, साक्षी बन सोचो लेकिन सोचा, प्लैन बनाया और सेकण्ड में प्लेन स्थिति बनाते चलो। अभी आवश्यकता स्थिति की है। यह विदेही स्थिति परिस्थिति को बहुत सहज पार कर लेगी। जैसे बादल आये, चले गये। और विदेही, अचल-अडोल हो खेल देख रहे हैं। अभी लास्ट समय को सोचते हो लेकिन लास्ट स्थिति को सोचो।

चारों ओर की सेवाओं के समाचार बापदादा सुनते रहते हैं और दिल से सभी अथक सेवाधारियों को मुबारक भी देते हैं, सेवा बहुत अच्छे उमंग-उत्साह से कर रहे हैं और आगे भी करते रहो लेकिन सेवा और स्थिति का बैलेन्स थोड़ा-सा कभी इस तरफ झुक जाता है, कभी उस तरफ इसलिए सेवा खूब करो, बापदादा सेवा के लिए मना नहीं करते और ज़ोर-शोर से करो लेकिन सेवा और स्थिति का सदा बैलेन्स रखते चलो। स्थिति बनाने में थोड़ी मेहनत लगती है और सेवा तो सहज हो जाती है। इसलिए सेवा का बल थोड़ा स्थिति से ऊँचा हो जाता है। बैलेन्स रखो और बापदादा की, सर्व सेवा करने वाले आत्माओं की, संबंध-सम्पर्क में आने वाले ब्राह्मण परिवार की ब्लैसिंग लेते चलो। यह दुआओं का खाता बहुत जमा करो। अभी की दुआओं का खाता आप



आत्माओं में इतना सम्पन्न हो जाए जो द्वापर से आपके चित्रों द्वारा सभी को दुआयें मिलती रहेंगी। अनेक जन्म में दुआयें देनी हैं लेकिन जमा एक जन्म में करनी हैं। इसलिए क्या करेंगे? स्थिति को सदा आगे रख सेवा में आगे बढ़ते चलो। क्या होगा, यह नहीं सोचो। ब्राह्मण आत्माओं के लिए अच्छा है, अच्छा ही होना है। लेकिन बैलेन्स वालों के लिए सदा अच्छा है। बैलेन्स कम तो कभी अच्छा, कभी थोड़ा अच्छा। सुना क्या करना है? क्वेश्चन मार्क सोचने के हिसाब से आश्चर्यवत् होके सोचने को फिनिश करो, यह तो नहीं होगा, यह तो नहीं होगा....। वह स्थिति को नीचे ऊपर करता है। समझा।

नये-नये भी बहुत आये हैं, जो इस कल्प में पहले बारी मधुबन में आये हैं, वह हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। बापदादा नये-नये बच्चों को देख खुश होते हैं और बड़े खुशी से बापदादा वेलकम बच्चे, वेलकम बच्चे कर रहे हैं। अच्छा है जो फाइनल समाप्ति के पहले पहुँच गये हो। फिर भी मिलने के समय पर पहुँचे हो। इसलिए पीछे आने वालों को अभी भी चांस है, आगे बढ़ने का। तो आप लोग गोल्डन चांस ले लो। अच्छा।

गुजरात से समर्पण वाली कुमारियों का ग्रुप आया है (अहमदाबाद मेले में 38 कुमारियों का समर्पण समारोह 13 नवम्बर को मनाया गया था, वे सभी बापदादा के सम्मुख बैठी थीं) समर्पण तो हुए बहुत अच्छा हुआ। सेवा भी हुई, मनाया भी और सेवा का भाग्य भी बनाया। अभी और भी कोई समर्पण समारोह मनाना है वा मना लिया बस फ़िनिश हुआ? तो बापदादा यही कहेंगे कि यह पूरा ग्रुप बंधनमुक्त का समर्पण समारोह मनावे। है ताकत? अगर है तो हाथ की ताली बजाओ। एक दो को देखकर नहीं उठाना। अहमदाबाद को तो वरदान है, सेवा का फल भी है और सेवा का बल भी है। इसलिए ऐसा समर्पण समारोह मनाना। फिर बापदादा आफ़रीन देंगे। ठीक है ना! पहले मैं। इसमें दूसरों को नहीं देखना। पहले बड़े-बड़े करें फिर हम करेंगे। नहीं। पहले मैं। ठीक है। अच्छा - आपस में इस पर रूह-रूहान करना और एक दो को वायदा याद कराते आगे बढ़ते रहना। बहुत अच्छा।

(एज्युकेशन विंग की ट्रेनिंग में लगभग 100 टीचर्स आये हैं) बहुत अच्छी ट्रेनिंग हुई, अच्छी लगी? अभी सेवा में आगे बढ़ेंगे, यह तो बहुत अच्छा। परन्तु जो आज बापदादा ने कहा अपने आपको भी ट्रेन्ड करना। पहले स्व की ट्रेनिंग साथ में सर्व के प्रति ट्रेनिंग। तो डबल कार्य करते हुए आगे बढ़ते जाना। उड़ते जाना। उड़ने वाले हो ना? अच्छा। यह मधुबन की ट्रेनिंग को अविनाशी रखना। जैसे सेवा में चांस लेने का संकल्प रहता है, चांस लें, ऐसे ही स्व-स्थिति में आगे बढ़ने का भी चांस लेते रहना। अच्छा है ना! बापदादा देखेंगे कौन नम्बर वन अर्थात् बैलेन्स में विन प्राप्त करने वाले हैं। बहुत अच्छा।

(पंजाब वालों ने पहले ग्रुप में सेवा की है) अच्छा बड़ा ग्रुप है। अच्छा चांस मिला है। पंजाब को बापदादा विशेष एक बात की मुबारक देते हैं। जानते हो कौन सी? पंजाब ने कलराठी ज़मीन को फलदायक बनाने में अच्छी उन्नति की है। प्रोग्रेस अच्छी है इसलिए मुबारक हो। और भी पंजाब शेर गाया हुआ है। आपकी दादी (चन्द्रमणी दादी) को भी पंजाब का शेर कहते थे। तो सभी शेर हो ना! तो शेर किसका शिकार करेंगे? बकरी का? नम्बरवन शेर वह है जो शेर का शिकार करे। अभी पंजाब की धरनी तो अच्छी बन गई है, अभी ऐसे विशेष वारिस बनाओ। यह है शेर का शिकार। कोई मण्डलेश्वर की विशेष सेवा करके दूसरी सीज़न में लेकर आओ। देखेंगे अगली सीज़न में पंजाब से कितने वारिस आते हैं। अच्छा – सेवा की खुशबू तो अच्छी है। सब सन्तुष्ट रहते भी हैं और सन्तुष्ट करते भी हैं। मुबारक हो।

(डबल विदेशी भी बहुत आये हैं) विदेश का ग्रुप उठो। विदेश में भी एक विशेषता बापदादा को बहुत अच्छी लगती है। कौन सी? सभी को उमंग-उत्साह बहुत है कि विदेश के कोने-कोने में बाप का स्थान बनायें और बनाया भी है। इस वर्ष कितने नये स्थान बनाये हैं? (12-15) अच्छा उमंग है कि सन्देश चारों ओर मिल जाए। यह लक्ष्य बहुत अच्छा है। जहाँ जाते हैं वहाँ कोई-न-कोई को निमित्त बनाने की सेवा का लक्ष्य अच्छा रखते हैं। यह विशेषता है। हर एक जितना हो सकता है उतना अपने आपको सेवा के निमित्त बनाने की आफ़र भी

करते हैं और प्रैक्टिकल में भी करते हैं। यही सोचते हैं कि घर-घर में बाबा का घर हो, यह उमंग-उत्साह बहुत अच्छा है। इसलिए इस उमंग-उत्साह के लिए बापदादा और एडवांस में आगे बढ़ने की मुबारक दे रहे हैं। बापदादा विदेशी अर्थात् विश्व-कल्याण करने के निमित्त बनने वाले बच्चों को यही कहते हैं कि अब सेवा और विदेही अवस्था में नम्बरवन विदेशी बच्चों को बनना ही है। बनना है – कब? 99 में या 2 हजार में बनना है? कब नहीं, अब। अव्यक्त बाप की पालना का प्रत्यक्ष सबूत देना है। जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त बन विदेही स्थिति द्वारा कर्मातीत बनें, तो अव्यक्त ब्रह्मा की विशेष पालना के पात्र हो इसलिए अव्यक्त पालना का बाप को रेसपाण्ड देना – विदेही बनने का। सेवा और स्थिति के बैलेन्स का। ठीक है, मंजूर है? करना ही है। बापदादा यह नहीं सोचते – देखेंगे, सोचेंगे। नहीं। करना ही है। अपनी भाषा में बोलो – करना ही है। जो भी सभी टी.वी. में भी देख रहे हैं वह सभी भी ऐसे बोल रहे हैं ना? बापदादा देख रहे हैं। चाहे भारत में देख रहे हैं, चाहे फ़ारेन में देख रहे हैं लेकिन सभी को उमंग आ रहा है हम करेंगे, हम करेंगे। हमें करना ही है। एडवांस में मुबारक हो। अच्छा।

(विदेश के बहुत से भाई-बहिनें पहली बार आये हैं,  
रिट्रीट में आये हुए गोस्ट भी बैठे हैं)

बहुत अच्छा – सब नम्बरवन लेने वाले हैं। बहुत अच्छा, मेहमान बनकर आये और बाप के बच्चे अधिकारी बन गये। अधिकारी हो गये ना? अधिकारी हैं? बहुत अच्छा, अभी आगे बढ़ते रहना।

(हॉस्पिटल के ट्रस्टियों से) – सभी डबल ट्रस्टी हो। एक प्रवृत्ति में रहते ट्रस्टी और दूसरा हॉस्पिटल में रहते ट्रस्टी। हॉस्पिटल के भी ट्रस्टी तो जीवन में भी ट्रस्टी। अच्छा है। हॉस्पिटल आत्माओं की भी सेवा कर रही है और शरीर की भी सेवा कर रही है। तो डबल सेवा हो रही है इसलिए जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हो उन्हीं को भी डबल दुआयें मिलती रहती हैं। बहुत अच्छे प्लैन

बनाये हैं ना। सेवा का चांस लेना यह है चांसलर बनना। वह चांसलर नहीं, रूहानी यूनिवर्सिटी के चांसलर। अच्छा है।

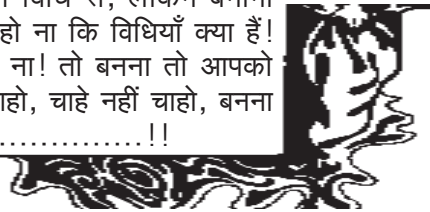
(आस्ट्रेलिया वाले ओलम्पिक गेम के समय बड़ा प्रोग्राम करने का प्लैन बना रहे हैं, बापदादा को प्लैन दिखाया) जहाँ उमंग-उत्साह है और सबकी एकमत है। तो जहाँ एकमत है और उमंग-उत्साह है तो सफलता है ही है। अच्छा है भले करो। फ़ारेन में नाम बाला करो। बहुत अच्छा।

जो भी सभी भारत से आये हैं, तो भारत वालों को तो विशेष नशा है कि बापदादा अवतरित भी भारत में होते हैं और साथ-साथ अगर मिलने आते हैं तो भी भारत में ही आते हैं। तो डबल नशा है ना! भारत ने ही विदेश में सन्देश दिया, तो भारत ने विदेश में भी अपने परिवार को ढूँढ एक परिवार बना दिया। इसलिए भारतवासी बच्चों का सदा महत्त्व है और भारत का महत्त्व बढ़ना है तो भारतवासियों का महत्त्व तो है ही। इसीलिए जो भी नये-पुराने बच्चे आये हैं वह बहुत प्यार से पहुँचे हैं, बापदादा सभी बच्चों का स्नेह और चारों ओर सेवा के सहयोग को देख खुश हैं और बच्चे भी सदा खुश हैं। खुश रहते हो ना? कभी खुशी कम नहीं करना। यह स्पेशल बाप का खज़ाना है। इसलिए खुशी कभी नहीं छोड़ना। सदा खुश। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ भाग्यवान, सर्व श्रेष्ठ खज़ानों के मालिक, सदा सेवा और स्थिति का बैलेन्स रखने वाले ज्ञानी तू आत्मा, सर्व शक्ति सम्पन्न आत्मायें, सदा बंधनमुक्त, जीवनमुक्त आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।



लेकिन बापदादा अभी से स्पष्ट सुना रहे हैं, अटेन्शन प्लीज़। हर एक ब्राह्मण बच्चे को बाप को बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त बनाना ही है। चाहे किसी भी विधि से, लेकिन बनाना जरूर है। जानते हो ना कि विधियाँ क्या हैं! इतने तो चतुर हो ना! तो बनना तो आपको पड़ेगा ही। चाहे चाहो, चाहे नहीं चाहो, बनना तो पड़ेगा ही.....!!



## “मेरे-मेरे का देह-अभिमान छोड़ ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखो”

आज बापदादा अपने चारों ओर के श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को देख रहे हैं। ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मा मुख वंशावली। हर ब्राह्मण आत्मा के भाग्य को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। हर ब्राह्मण आत्मा को जन्मते ही स्वयं ब्रह्मा बाप द्वारा मस्तक में स्मृति का तिलक लगता है। स्वयं भगवान तिलकधारी बनाते हैं। साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को पवित्रता के महामन्त्र द्वारा लाइट का ताज धारण कराते हैं और साथ-साथ हर ब्राह्मण आत्मा को विश्व-कल्याणकारी आत्मा बनाए ज़िम्मेवारी का ताज धारण कराते हैं। डबल ताज है और भगवान स्वयं अपने दिल तख़्तनशीन बनाते हैं। तो जन्मते ही तिलक, ताज और तख़्तधारी बन जाते हैं। ऐसा श्रेष्ठ भाग्य सारे कल्प में कोई आत्मा का नहीं हो सकता। तो इतने श्रेष्ठ भाग्य की स्मृति रहती है कि हम ब्राह्मण जन्मते ही ऐसे भाग्यवान बनते हैं? आप ब्राह्मणों की निशानी दुनिया वालों ने कृष्ण रूप में दिखा दी है। लेकिन वह विश्व का राजकुमार है इसलिए राज्य की निशानी तिलक, ताज, तख़्त देते हैं। फिर भी उसको छोटे-पन में तिलक ताज, तख़्त नहीं मिलता लेकिन आप ब्राह्मणों को तिलक, ताज और तख़्त तीनों ही प्राप्त होता है। परमात्म-बाप द्वारा यह तीनों प्राप्तियाँ होना यह सिर्फ़ ब्राह्मणों के भाग्य में है। तो बापदादा देख रहे थे कि मेरे बच्चों का कितना बड़ा भाग्य का सितारा हर एक के मस्तक पर चमक रहा है। ऐसा भाग्य का सितारा आपको अपने में दिखाई देता है? सदा चमकता हुआ दिखाई देता है या कभी बहुत अच्छा चमकता है और कभी सितारे की चमक कम हो जाती है? यह भाग्य का सितारा विचित्र सितारा है। तो बापदादा आप सभी बच्चों को जब भी देखते हैं, मिलते हैं तो हर एक बच्चे के मस्तक में सितारा चमकता हुआ देख हर्षित होते हैं। सितारा चमकते-चमकते चमक कम

क्यों होती है ? उसके कारण को आप सब अच्छी तरह से जानते हो ।

बापदादा को बच्चों का चार्ट देखकर मुस्कराहट भी आती, जब भी किसी से पूछो कि क्या बनना है ? लक्ष्य क्या है ? तो मैजॉरिटी का एक ही जवाब होता है कि नम्बरवन बनना है । सूर्यवंशी बनना है । चन्द्रवंशी राजा राम-सीता भी बनने नहीं चाहते । लेकिन जब लक्ष्य सूर्यवंशी नम्बरवन का है, तो जैसा लक्ष्य वैसे लक्षण सदा सूर्यवंश का दिखाई देना आवश्यक है । बच्चों का लक्ष्य सूर्यवंश का है अर्थात् सदा विजयी का है, नम्बरवन सूर्यवंशी की निशानी है सदा विजयी । सूर्य की कलायें कम और ज़्यादा नहीं होतीं । उदय होता है और अस्त होता है लेकिन चन्द्रवंशी मुआफ़िक कलायें कम नहीं होतीं । तो सूर्यवंश की निशानी है सदा एकरस और सदा विजयी । चन्द्रवंश को क्षत्रिय कहा जाता है, क्षत्रिय जीवन में कभी हार होती, कभी जीत होती । कभी सफलतामूर्त और कभी मेहनत की मूर्त । युद्ध करना अर्थात् मेहनत करना । चन्द्रवंश की कलायें एकरस नहीं होतीं, इसलिए लक्ष्य और लक्षण को समान बनाओ । जैसे लक्ष्य रखा है बाप समान बनने का, हर एक बच्चा यही कहता है कि बाप समान बनना है । तो बाप सदा सहज विजय स्वरूप है । अगर एकरस अवस्था नहीं है तो क्या नम्बरवन बनेंगे वा नम्बरवार में आयेंगे ? एक है नम्बरवन और दूसरा है नम्बरवार । तो अपने से पूछो हम नम्बरवन हैं वा नम्बरवार की लिस्ट में हैं ? नम्बरवन अर्थात् फ़ालो ब्रह्मा बाप ।

बापदादा सहज साधन बताते हैं कि फ़ालो करने में मेहनत कम लगती है । ब्रह्मा के पाँव अर्थात् कदम, हर कार्य के कदम रूपी पाँव के निशान हैं । तो पाँव पर पाँव रखकर चलना सहज होता है । नया रास्ता नहीं ढूँढना है, पाँव पर पाँव अर्थात् कदम पर कदम रखना है । जो भी कार्य करते हो चाहे मन्सा संकल्प करते हो, चाहे बोल बोलते हो, चाहे कर्म में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो, हर कर्म करने के पहले यह सोचो कि जो मैं ब्राह्मण आत्मा कर्म कर रही हूँ, कर रहा हूँ, क्या यह ब्रह्मा बाप समान है ? ब्रह्मा बाप का संकल्प क्या रहा ? मेरा संकल्प भी उसी प्रमाण है ? हर बोल ब्रह्मा समान है ? अगर नहीं है तो नहीं

करना है। न सोचना है, न बोलना है, न करना है। ऐसे नहीं ब्रह्मा बाप का कदम एक और बच्चों का कदम दूसरा, तो जो लक्ष्य है, मंजिल है बाप समान बनने का, वह कैसे होगा? अगर ब्रह्मा के हर कदम समान कदम पर कदम फ़ालो करते चलेंगे तो एक तो सदा अपने को सहज पुरुषार्थी अनुभव करेंगे और सदा सम्पूर्णता की मंजिल समीप अनुभव करेंगे।

ब्रह्मा बाप समान अर्थात् सम्पूर्णता के मंजिल पर पहुँचना। तो ब्रह्मा बाप वतन में आप सब बच्चों के सम्पूर्ण अव्यक्त फ़रिश्ते बनने का आह्वान कर रहे हैं। ब्रह्मा बाप के आह्वान का गीत वा मधुर आह्वान का आवाज़ सुनाई नहीं देता? “आओ बच्चे, मीठे बच्चे, जल्दी-जल्दी आओ” यह गीत वा बोल सुनाई नहीं देता? ब्रह्मा बाप का आवाज़ सुनो, कैच करो। ब्रह्मा बाप यही कहते कि बच्चे 99 वर्ष का सोचते बहुत हैं, क्या होगा, यह होगा, वह होगा... यह होगा वा नहीं होगा...! यह होगा! – इस सोच में ज़्यादा रहते हैं। यह तो नहीं होगा! कभी सोचते होगा, कभी सोचते नहीं होगा। यह होगा, होगा का गीत गाते रहते हैं। लेकिन अपने फ़रिश्तेपन के, सम्पन्न सम्पूर्ण स्थिति में तीव्रगति से आगे बढ़ने का श्रेष्ठ संकल्प कम करते हैं। होगा, क्या होगा!... यह गा-गा के गीत ज़्यादा गाते हैं। बाप कहते हैं कुछ भी होगा लेकिन आपका लक्ष्य क्या है? जो होगा वह देखने और सुनने का लक्ष्य है वा ब्रह्मा बाप समान फ़रिश्ता बनने का है? उसकी तैयारी कर ली है? प्रकृति अपना कुछ भी रंग-रूप दिखाये, आप फ़रिश्ता बन, बाप समान अव्यक्त रूपधारी बन प्रकृति के हर दृश्य को देखने के लिए तैयार हो? प्रकृति की हलचल के प्रभाव से मुक्त फ़रिश्ते बने हो? अपनी स्थिति की तैयारी में लगे हुए हो वा क्या होगा, क्या होगा – इसी सोचने में लगे हो? क्या कोई भी परिस्थिति सामने आये तो आप प्रकृतिपति अपने प्रकृतिपति की सीट पर सेट होंगे वा अपसेट होंगे? यह क्या हो गया? यह हो गया, यह हो गया... इसी नज़ारों के समाचारों में बिज़ी होंगे वा सम्पन्नता की स्थिति में स्थित हो किसी भी प्रकृति की हलचल को चलते हुए बादलों के समान अनुभव करेंगे?

तो ब्रह्मा बाप बच्चों से पूछ रहे हैं कि मेरे समान फ़रिश्ते सदाकाल के लिए बने हो ? क्योंकि आप बच्चों को व्यक्त में रहते अव्यक्त बनना है। आप कहेंगे – बाप तो अव्यक्त हो गया, हमें भी ऐसे अव्यक्त बना देवे ना। ब्रह्मा बाप कहते हैं पहले अपने आपसे पूछो कि जो विश्व-कल्याण की ज़िम्मेवारी का ताज बाप ने पहनाया है, वह सम्पन्न कर लिया है ? विश्व-कल्याणकारी, विश्व का कल्याण सम्पन्न हुआ है ? ब्रह्मा बाप तो अव्यक्त इसलिए बनें कि बच्चों को विश्व-कल्याण का कार्य देकर, बंधन से भी मुक्त हो सेवा की रफ़्तार तीव्र कराने के निमित्त बनना था, जिसका प्रत्यक्ष स्वरूप चारों ओर देख रहे हो। चाहे देश में, चाहे विदेश में अव्यक्त ब्रह्मा द्वारा तीव्रगति हुई है और होनी भी है। सेवा में तीव्र गति का निमित्त आधार ब्रह्मा बाप को बनना था। लेकिन राज्य अधिकारी एक ब्रह्मा बाप को नहीं बनना है, साथ में बच्चों को भी राज्य अधिकार लेना है। इसलिए साकार में निमित्त आप साकार रूपधारी बच्चों को बनाया है। लेकिन अन्त में आप सब बच्चों को व्यक्त में अव्यक्त फ़रिश्ता बन विश्व-कल्याण के सेवा की रफ़्तार तीव्र कर समाप्ति और सम्पन्न होना है और करना है।

ब्रह्मा बाप कहते हैं कि क्या 99 में समाप्ति करें ? प्रकृति को एक ताली बजायेंगे और प्रकृति तो तैयार खड़ी है। क्या फ़रिश्ते समान डबल लाइट बन गये हो ? कम से कम 108 ऐसे सदा विजयी बने हैं, जो किसी भी प्रकार के व्यर्थ और निगेटिव संकल्प, बोल वा कर्म अर्थात् सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में पास हों ? व्यर्थ वा निगेटिव – यही बोझ सदाकाल के लिए डबल लाइट फ़रिश्ता बनने नहीं देता। तो ब्रह्मा बाप पूछते हैं – इस बोझ से हल्के फ़रिश्ते बने हैं ? अण्डरलाइन है – सदा। कम से कम 108 तो सदा फ़रिश्ता जीवन का अनुभव करें तब कहेंगे ब्रह्मा बाप समान बनना। तो बाप पूछते हैं – ताली बजायें ? या 2000 में ताली बजायें, 2001 में ताली बजायें, कब बजायें ? क्या सोचते हो ताली बजेगी तो बन जायेंगे, ऐसे ? क्या सोचते हो – ताली बजेगी उस समय बनेंगे ? क्या होगा ? बजायें ताली ? बोलो तैयार हो ? पेपर लेवें ? ऐसे थोड़ेही मान जायेंगे, पेपर लेंगे ? टीचर्स बताओ – पेपर लें ? सब छोड़ना



पड़ेगा। मधुबन वालों को मधुबन छोड़ना पड़ेगा, ज्ञान सरोवर वालों को ज्ञान सरोवर, सेन्टर वालों को सेन्टर, विदेश वालों को विदेश, सब छोड़ना पड़ेगा। तो एवररेडी हैं? अगर एवररेडी हो तो हाथ की ताली बजाओ। एवररेडी? पेपर लें? कल एनाउन्समेंट करें? वहाँ जाकर भी नहीं छोड़ना है, वहाँ जाकर थोड़ा ठीक करके आऊँ, नहीं। जहाँ हूँ, वहाँ हूँ। ऐसे एवररेडी। अपना दफ़्तर भी नहीं, खटिया भी नहीं, कमरा भी नहीं, अलमारी भी नहीं। ऐसे नहीं कहना थोड़ा-सा काम है ना, दो दिन करके आयें। नहीं। आर्डर इज़ आर्डर। सोचकर हाँ कहो। नहीं तो कल आर्डर निकलेगा, कहाँ जाना है, कहाँ नहीं जाना है। निकालें आर्डर, तैयार हैं? इतना हिम्मत से हाँ नहीं कह रहे हैं। सोच रहे हैं थोड़ा-सा एक दिन मिल जाये तो अच्छा है। मेरे बिना यह नहीं हो जाए, यह नहीं हो जाए, यह वेस्ट संकल्प भी नहीं करना। ब्रह्मा बाप ट्रांसफर हुआ तो क्या सोचा कि मेरे बिना क्या होगा? चलेगा, नहीं चलेगा। चलो एक डायरेक्शन तो दे दूँ, डायरेक्शन दिया? अपनी सम्पन्न स्थिति द्वारा डायरेक्शन दिया, मुख से नहीं। ऐसे तैयार हो? आर्डर मिला और छोड़ो तो छूटा। हलचल करें? ऐसा करना है – यह बता देते हैं। आर्डर होगा, पूछकर नहीं, तारीख नहीं फ़िक्स करेंगे। अचानक आर्डर देंगे आ जाओ, बस। इसको कहा जाता है डबल लाइट फ़रिश्ता। आर्डर हुआ और चला। जैसे मृत्यु का आर्डर होता है फिर क्या सोचते हैं, सेन्टर देखो, आलमारी देखो, जिज्ञासु देखो, एरिया देखो.....! आजकल तो मेरे-मेरे में एरिया का झमेला ज़्यादा हो गया है, मेरी एरिया! विश्व-कल्याणकारी की क्या हद की एरिया होती है? यह सब छोड़ना पड़ेगा। यह भी देह का अभिमान है। देह का भान फिर भी हल्की चीज़ है, लेकिन देह का अभिमान यह बहुत सूक्ष्म है। मेरा-मेरा इसको ही देह का अभिमान कहा जाता है। जहाँ मेरा होगा ना वहाँ अभिमान ज़रूर होगा। चाहे अपनी विशेषता प्रति हो, मेरी विशेषता है, मेरा गुण है, मेरी सेवा है, यह सब मेरापन – यह प्रभू पसाद है, मेरा नहीं। प्रसाद को मेरा मानना, यह देह-अभिमान है। यह अभिमान छोड़ना ही सम्पन्न बनना है। इसीलिए जो वर्णन करते हो फ़रिश्ता अर्थात् न देह-

अभिमान, न देह-भान, न भिन्न-भिन्न मेरे-पन के रिश्ते हों, फ़रिश्ता अर्थात् यह हृद का रिश्ता खत्म। तो अब क्या तैयारी करेंगे? ब्रह्मा बाप का आवाज़ अटेन्शन से सुनो, आह्वान कर रहे हैं। बाप कहते हैं समाप्ति का नगाड़ा बजाना तो बहुत सहज है, जब चाहें तब बजा सकते हैं लेकिन कम-से-कम सतयुग आदि के 9 लाख तो एवररेडी हो ना! चाहे नम्बरवार हों, नम्बरवन तो थोड़े होंगे। कम से कम 108 नम्बरवन, 16 हजार नम्बर टू, 9 लाख नम्बर थी। लेकिन इतने तो तैयार हो जाँ। राजधानी तो तैयार होनी चाहिए।

अभी रिज़ल्ट में बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय माया का स्वरूप निगेटिव और व्यर्थ संकल्प का मैजारिटी में है। विश्व-कल्याणकारी की स्टेज है – सदा बेहद की वृत्ति हो, दृष्टि हो और बेहद की स्थिति हो। वृत्ति में ज़रा भी किसी आत्मा के प्रति निगेटिव या व्यर्थ भावना नहीं हो। निगेटिव बात को परिवर्तन कराना, वह अलग चीज़ है। लेकिन जो स्वयं निगेटिव वृत्ति वाला होगा वह दूसरे के निगेटिव को भी पॉजेटिव में चेंज नहीं कर सकता। इसलिए हर एक को अपनी सूक्ष्म चेकिंग करनी है कि वृत्ति, दृष्टि सर्व के प्रति सदा बेहद और कल्याणकारी है? ज़रा भी कल्याण की भावना के सिवाए हृद की भावना, हृद के संकल्प, बोल सूक्ष्म में भी समाये हुए तो नहीं हैं? जो सूक्ष्म में समाया हुआ होता है, उसकी निशानी है कि समय आने पर वा समस्या आने पर वह सूक्ष्म स्थूल में आता है। सदा ठीक रहेगा लेकिन समय पर वह इमर्ज हो जायेगा। फिर सोचते हैं यह है ही ऐसा। यह बात ही ऐसी है। यह व्यक्ति ही ऐसा है। व्यक्ति ऐसा है लेकिन मेरी स्थिति शुभ भावना, बेहद की भावना वाली है या नहीं है? अपनी ग़लती को चेक करो। समझा।

बातों को नहीं देखो, अपने को देखो। बस 99 में यह अपने अन्दर धुन लगाओ जो ब्रह्मा बाप का कदम वह ब्रह्मा बाप समान मेरा हर कदम हो। ब्रह्मा बाप से सभी को प्यार है ना। तो प्यारे को ही फ़ालो किया जाता है। बाप समान बनना ही है। ठीक है ना? 99 में सब तैयार हो जायेंगे? एक वर्ष है। यह हो गया, यह हो गया... यह नहीं सोचना। यह तो होना ही है। पहले से ही पता है यह होना है

लेकिन बाप समान फ़रिश्ता बनना ही है। समझा। करना है ना ? कर सकेंगे ? एक वर्ष में तैयार हो जायेंगे कि आधे वर्ष में तैयार हो जायेंगे ? आपके सम्पन्न बनने के लिए ब्रह्मा बाप भी आह्वानन कर रहा है और प्रकृति भी इन्तज़ार कर रही है। 6 मास में एवररेडी बनो, चलो 6 मास नहीं एक वर्ष में तो बनो। हलचल में नहीं आना, अचल। लक्ष्य नहीं छोड़ना, बाप समान बनना ही है, कुछ भी हो जाए। चाहे कई ब्राह्मण हिलावें, ब्राह्मण रुकावट बनकर सामने आयें फिर भी हमें समान बनना ही है। पसन्द है यह राय ? (बापदादा ने सभी से हाथ उठवाया और सबका वीडियो, फ़ोटो निकलवाया) यह फ़ोटो सभी को भेजेंगे। यहाँ की मूवी में कोई मिस भी हो सकता है। वतन की मूवी में तो कोई मिस नहीं हो सकता है।

अच्छा – बाप कहते हैं एक सेकण्ड में सभी अभी-अभी विदेही बन सकते हो ? तो अभी एक सेकण्ड में विदेही स्थिति में स्थित हो जाओ। (ड्रिल) अच्छा – अभी देह में आ जाओ।

अभी फिर विदेही बन जाओ। ऐसे सारे दिन में बीच-बीच में एक सेकण्ड भी मिले, तो बार-बार यह अभ्यास करते रहो। अच्छा।

सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्माओं को सदा ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखने वाले फ़ालो फ़ादर आज्ञाकारी बच्चों को, सदा ब्रह्मा बाप समान फ़रिश्ता स्थिति में स्थित रहने वाले समीप आत्माओं को, सदा प्रकृतिपति बन प्रकृति के हर दृश्य को साक्षी हो देखने वाले अचल-अडोल आत्माओं को, सदा बेहद की वृत्ति और दृष्टि में रहने वाले भाग्यवान बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते। बाहर जो भी सुन रहे हैं चाहे देश में, चाहे विदेश में उन बच्चों को भी विशेष यादप्यार।

दादियों से – निमित्त बनने से दुआयें मिलती हैं। आप लोगों की तो दवाई भी दुआयें हैं। सभी जो भी निमित्त दादियाँ हैं वा जो भी निमित्त कार्य में मददगार बनते हैं उन्हीं को विशेष दुआओं की लिफ़्ट है। यज्ञ हिस्ट्री में जो-जो आत्मा जिस कार्य के आदि से अब तक निमित्त बनी है, उनको उस निमित्त

बने हुए कार्य की विशेष दुआयें मिलती हैं। निमित्त बनने का समझो एक भाग्य मिलता है। एक तो निमित्त बनने वाले पर सभी की नज़र होने के कारण उसका स्व पर भी अटेन्शन रहता है। उनका पुरुषार्थ अपने प्रति भी सहज हो जाता है। जैसे स्टेज पर बैठते हैं तो स्टेज पर बैठने से स्वतः अटेन्शन होता है, तो निमित्त बनना अर्थात् स्टेज पर हैं। तो स्टेज पर होने के कारण स्व का पुरुषार्थ सहज हो जाता है। सबके सहयोग की दुआयें भी मिलती हैं। अगर निमित्त बनी हुई आत्मा यथार्थ पार्ट बजाती है तो औरों के सहयोग की भी मदद मिलती है। अच्छा है। (ड्रिल बहुत अच्छी लग रही थी) यह रोज़ हर एक को करनी चाहिए। ऐसे नहीं हम बिज़ी हैं। बीच में समय प्रति समय एक सेकण्ड चाहे कोई बैठा भी हो, बात भी कर रहा हो, लेकिन एक सेकण्ड उनको भी ड्रिल करा सकते हैं और स्वयं भी अभ्यास कर सकते हैं। कोई मुश्किल नहीं है। दो-चार सेकण्ड भी निकालना चाहिए इससे बहुत मदद मिलेगी। नहीं तो क्या होता है, सारा दिन बुद्धि चलती रहती है ना, तो विदेही बनने में टाइम लग जाता है और बीच-बीच में अभ्यास होगा तो जब चाहें उसी समय हो जायेंगे क्योंकि अन्त में सब अचानक होना है। तो अचानक के पेपर में यह विदेहीपन का अभ्यास बहुत आवश्यक है। ऐसे नहीं बात पूरी हो जाए और विदेही बनने का पुरुषार्थ ही करते रहें। तो सूर्यवंशी तो नहीं हुए ना! इसलिए जितना जो बिज़ी है, उतना ही उसको बीच-बीच में यह अभ्यास करना ज़रूरी है। फिर सेवा में जो कभी-कभी थकावट होती है, कभी कुछ-न-कुछ आपस में हलचल हो जाती है, वह नहीं होगा। अभ्यासी होंगे ना। एक सेकण्ड में न्यारे होने का अभ्यास होगा, तो कोई भी बात हुई एक सेकण्ड में अपने अभ्यास से इन बातों से दूर हो जायेंगे। सोचा और हुआ। युद्ध नहीं करनी पड़े। युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार सूर्यवंशी बनने नहीं देंगे। लास्ट घड़ी भी युद्ध में ही जायेगी, अगर विदेही बनने का सेकण्ड में अभ्यास नहीं है तो। और जिस बात में कमज़ोर होंगे, चाहे स्वभाव में, चाहे सम्बन्ध में आने में, चाहे संकल्प शक्ति में, वृत्ति में, वायुमण्डल के प्रभाव में, जिस बात में कमज़ोर होंगे, उसी रूप में जान-बूझकर

भी माया लास्ट पेपर लेगी। इसीलिए विदेही बनने का अभ्यास बहुत ज़रूरी है। कोई भी रूप की माया आये, समझ तो है ही। एक सेकण्ड में विदेही बन जायेंगे तो माया का प्रभाव नहीं पड़ेगा। जैसे कोई मरा हुआ व्यक्ति हो, उसके ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ना। विदेही माना देह से न्यारा हो गया तो देह के साथ ही स्वभाव, संस्कार, कमज़ोरियाँ सब देह के साथ हैं, और देह से न्यारा हो गया, तो सबसे न्यारा हो गया। इसलिए यह ड्रिल बहुत सहयोग देगी, इसमें कण्ट्रोलिंग पावर चाहिए। मन को कण्ट्रोल कर सकें, बुद्धि को एकाग्र कर सकें। नहीं तो आदत होगी तो परेशान होते रहेंगे। पहले एकाग्र करें, तब ही विदेही बनें। अच्छा। आप लोगों का तो अभ्यास 14 वर्ष किया हुआ है ना! (बाबा ने संस्कार डाल दिया है) फाउण्डेशन पक्का है। आप लोगों की तो 14 वर्ष में नेचर बन गई। सेवा में कितने भी बिज़ी रहो लेकिन कोई बहाना नहीं चलेगा कि हमको समय नहीं था क्योंकि बापदादा को अभी जल्दी-जल्दी 108 और 16 हज़ार तो तैयार करने हैं। नहीं तो काम कैसे चलेगा। साथी तो चाहिए ना। तो 108 फिर 16 हज़ार, फिर 9 लाख। अभी अगर आपको कहें कि 108 ऐसे नाम बताओ जो वेस्ट और निगेटिव से मुक्त हों, तो आप लोग माला बना सकती हो? सिर्फ 108 कह रहे हैं। 99 तक तो 16 हज़ार चाहिए। 9 लाख तो बन जायेंगे, उसकी कोई बड़ी बात नहीं है। पहले तो 108 तैयार हो जाँ। (सभा से) आप सोचते हो हम 108 में आयेंगे? अभी जो कुछ हो उसे निकाल लेना, और दादी को कहना कि हम एवररेडी हैं। हाँ अपना-अपना नाम देवें, आफ़र करो - हम 108 में हैं फिर वेरीफ़ाय करेंगे। सबसे अच्छा तो अपना नाम आपेही देवें।

एक बारी सबको चेंज़ करना ज़रूर है। अभी इतला कर रहे हैं तो एवररेडी हो जाना फिर आर्डर करेंगे। मधुबन वालों को भी चेंज़ करेंगे। मधुबन वाले सेन्टरों में जायें, सेन्टर वाले मधुबन में आयें। अपनी अलमारियाँ खाली कर देना। कोई को ताला लगाने नहीं देंगे। अच्छा - यह भी मज़ा है ना। यह भी मज़े का खेल है। अच्छा - अभी क्या करना है।

(काठमाण्डू, देहली, अहमदाबाद, कलकत्ते में बहुत अच्छी सेवायें हुई हैं,  
काठमाण्डू वालों ने आज विशेष याद भेजी है)

जहाँ भी सेवा की है, वह एक दो से अच्छी है। आरम्भ दिल्ली ने किया, तो दिल्ली में प्रगति मैदान में पहुँचना, यह भी एक अच्छी सेवा की रिज़ल्ट है और दिल्ली राजधानी में अभी ऐसे स्थान पर फ्री ज़मीन लेना – यह सेवा की सफलता है। जो भी आये, जितने भी आये लेकिन दिल्ली में नाम बाला होना अर्थात् चारों ओर आवाज़ फैलना, इसीलिए अभी प्रगति मैदान में झण्डा लहराया, अभी और आगे बढ़ना है। अभी आध्यात्मिक झण्डा, आध्यात्मिकता का नाम बाला करने वाला झण्डा, दिल्ली में करना ही है। और आगे बढ़ना है क्योंकि दिल्ली का आवाज़ टी.वी. द्वारा या अखबारों द्वारा फैलता है। और साथ-साथ जो भी यज्ञ के कार्य होते हैं वह यज्ञ के कार्य में विशेष आत्मायें जो निमित्त बनती हैं, उनके ऊपर भी बड़े प्रोग्रामस का, नाम का प्रभाव पड़ता है। इसलिए देहली के ऊपर तो बापदादा की नज़र है। आखिर में आध्यात्मिकता का झण्डा, स्थापना में सेवा का झण्डा देहली में लहराया। ऐसे प्रत्यक्षता का झण्डा, आध्यात्मिकता ही श्रेष्ठ है और आध्यात्मिक आत्मायें यही हैं, यह आवाज़ फैलना ही है।

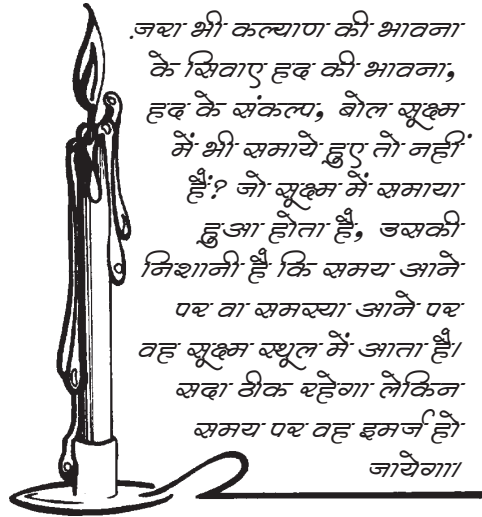
काठमाण्डू में भी वहाँ के महाराजा का प्यार है जनता में। इसलिए महाराजा का आना, यह सभी देशवासियों के ऊपर सहज प्रभाव पड़ गया। और देखा गया है कि नेपाल की धरनी में वहाँ की निमित्त बनी हुई आत्मायें अच्छी पावरफुल हैं। इसलिए नेपाल में सेवा होना सहज है। बच्चों ने मेहनत की है और अच्छे-अच्छे प्रभावित हुए हैं, समीप आये हैं। एक होता है प्रभावित होना, दूसरा होता है समीप सहयोगी बनना। तो नेपाल में समीप सहयोगी आत्मायें भी हैं, यह रिज़ल्ट अच्छी है।

और गुजरात ने बहुत अच्छी मेहनत की है। सहयोगी बनाने का जो लक्ष्य रखा उसमें सफलता अच्छी मिली। इसलिए जो सहयोगी बने तो सहयोगियों को बाप वा ड्रामा द्वारा कुछ न कुछ पुण्य का फल मिलता है। इसलिए वह सहयोग

आगे चलकर समीप आते जायेंगे और उन्हीं द्वारा सेवा फैलती जायेगी। यह कार्य तो सबसे बड़ा भी किया, बढ़िया भी किया। लक्ष्य अच्छा रखा और हर एक ने अपना जो भी कार्य लिया वह बिना खर्चा सोचने के, बिना हद की बातें सोचने के, जो दिल से, तन से, आपसी प्यार से किया इसमें सफलता है। गुजरात को भी सफलता हुई है और आगे भी होती रहेगी।

कलकत्ता में भी हिम्मत बहुत अच्छी रखी। है सब छोटे-छोटे लेकिन हिम्मत बड़ी रखी। और हिम्मत का फल यज्ञ से विशेष मदद मिली। उमंग-उत्साह में आकर काम कर ही लिया और अच्छा नाम भी हुआ। और योग शिविर में भी अच्छे आये, मेले में भी अच्छे आये। और सब बातों को न देख समय पर उमंग-उत्साह से काम चल ही गया। अच्छा चला। इसलिए छोटे और बड़ा कार्य किया तो उन्हीं को विशेष मुबारक हो। अभी जो भी प्रोग्रामस होंगे, वह बहुत अच्छे होंगे क्योंकि समय को वरदान मिला हुआ है। अभी जहाँ भी करेंगे, रिज़ल्ट अच्छे-ते-अच्छी होगी। अच्छा।

लखनऊ, बेंगलोर, हैदराबाद - तीन जगह बड़े प्रोग्राम होने हैं। तीनों अच्छे हैं। बापदादा तो पहले से ही कहते अच्छा होगा। (मद्रास और बाम्बे में भी बड़े प्रोग्राम होने हैं) सभी को होवनहार मुबारक हो। अच्छा। ओमशान्ति।



जरा भी कल्याण की भावना  
के सिवाए हृद की भावना,  
हृद के अंकल्प, बौल सूक्ष्म  
में भी समाये हुए तो नहीं  
हैं? जो सूक्ष्म में समाया  
हुआ होता है, उसकी  
निशानी है कि समय आने  
पर वा समस्या आने पर  
वह सूक्ष्म स्थूल में आता है।  
सदा ठीक रहेगा लेकिन  
समय पर वह इमर्ज हो  
जायेगा।

## इस नये वर्ष में हिम्मत के आधार पर स्वयं को मेहनत मुक्त, सदा विजयी अनुभव करो

आज नव युग रचता बापदादा अपने अति स्नेही, सदा सहयोगी और अति समीप बच्चों को नव युग, नव जीवन और नव वर्ष की मुबारक देने आये हैं। चारों ओर के बच्चे अति स्नेह से बापदादा को दिल में सम्मुख रख मुबारक ले रहे हैं। बापदादा बच्चों के नव वर्ष के उमंग-उत्साह को देख हर्षित हो रहे हैं। मैजारिटी बच्चे चाहे दूर बैठे हैं, चाहे समीप बैठे हैं सभी के मन में यही उमंग-उत्साह है कि इस वर्ष में नवीनता करके ही दिखायेंगे। चाहे स्व के परिवर्तन में, चाहे सेवा की सफलता में, चाहे हर आत्मा को शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा परिवर्तित करने में उमंग भी अच्छा है, उत्साह भी बहुत अच्छा है। साथ-साथ हिम्मत भी यथा शक्ति है। बापदादा ऐसे हिम्मत वाले बच्चों को एक संकल्प के पीछे पद्मगुणा मदद अवश्य देते हैं। इसलिए हिम्मत से सदा आगे बढ़ते चलो। कभी भी स्व प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति हिम्मत को कम नहीं करना क्योंकि यह नवयुग है ही हिम्मत रखने से उड़ने का युग, वरदानी युग, पुरुषोत्तम युग, डायरेक्ट विधाता द्वारा सर्व शक्तियाँ वरसे में सहज प्राप्त होने का युग, इसलिए इस युग के महत्त्व को सदा स्मृति में रखो। कोई भी कार्य आरम्भ करते हो चाहे स्व-पुरुषार्थ, चाहे विश्व-सेवा, सदा हिम्मत और बापदादा की मदद द्वारा निश्चय है ही कि स्व-पुरुषार्थ में वा सेवा में सफलता हुई पड़ी है। होना ही है। असम्भव, सम्भव होना ही है क्योंकि यह युग सफलता का युग है। असम्भव, सम्भव होने का युग है। इसलिए होगा या नहीं होगा, कैसे होगा, इसका क्वेश्चन इस युग में आप ब्राह्मण आत्माओं के लिए है ही नहीं। ब्राह्मणों की जन्म पत्री में है – ‘सफलता उसका जन्म सिद्ध अधिकार है।’ अधिकारी आत्माओं को यह सोचने की आवश्यकता नहीं है, वसा मिलना ही है।



तो नये वर्ष में यह विशेष स्मृति इमर्ज करो कि सब तरफ से सफलता मुझ श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा का अधिकार है ही। इस निश्चय से, रूहानी नशा से उड़ते चलो। (अभिमानि नशा नहीं, रूहानी नशा) निश्चय बुद्धि सदा हर कार्य में विजयी है ही है। ऐसे निश्चय बुद्धि ब्राह्मण आत्मा के मस्तक पर विजय के तकदीर की लकीर सदा है ही है। विजय का तिलक सदा ही मस्तक पर चमक रहा है। इसलिए इस वर्ष को सदा विजयी वर्ष अनुभव करते चलो। ऐसा निश्चय और नशा है? डबल विदेशियों को है? डबल विदेशी होशियार हैं। (सबने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। तिलक नज़र आ रहा है। और भारतवासी तो हैं ही भाग्यवान, क्यों? भारत की धरनी ही भाग्यवान है। इसलिए चाहे विदेशी, चाहे भारतवासी दोनों ही भाग्य विधाता के बच्चे हैं इसलिए हर ब्राह्मण बच्चा विजयी है। सिर्फ हिम्मत को इमर्ज करो। हिम्मत समाई हुई है क्योंकि मास्टर सर्वशक्तिवान हो - ऐसे हो ना? (सभी हाथ हिला रहे हैं) हाथ तो बहुत अच्छा हिलाते हैं। अभी मन से भी सदा हिम्मत का हाथ हिलाते रहना। बापदादा को खुशी है, नाज़ है कि मेरा एक-एक बच्चा अनेक बार का विजयी है। एक बार नहीं, अनेक बार की विजयी आत्मायें हो। तो कभी यह नहीं सोचना, पता नहीं क्या होगा? होगा शब्द नहीं लाना। विजय है और सदा रहेगी। सब पक्के हैं? बहुत अच्छा। अभी फिर वहाँ जाकर ऐसा कमज़ोर समाचार नहीं लिखना कि दादियां, बाबा माया आ गई, ऐसे नहीं लिखना। मायाजीत हैं। हम नहीं होंगे तो और कौन होगा, यह रूहानी नशा इमर्ज करो। और-और कार्य में मन और बुद्धि बिज़ी हो जाती है ना तो नशा मर्ज हो जाता है। लेकिन बीच-बीच में चेक करो कि कर्म करते हुए भी यह विजयी-पन का रूहानी नशा है? निश्चय होगा तो नशा ज़रूर होगा। निश्चय की निशानी नशा है और नशा है तो अवश्य निश्चय है। दोनों का सम्बन्ध है। इसलिए अभी 99 में अपना नशा सदा इमर्ज रखना, तो अभुल हो जायेंगे। न भूल होगी, न मेहनत होगी। बापदादा ने पहले भी कहा है कि जब बापदादा बच्चों को मेहनत करते हुए देखते हैं, युद्ध करते हुए देखते हैं तो बच्चों की मेहनत करना बाप को अच्छा नहीं लगता है। इसलिए इस नव वर्ष

को कैसे मनायेंगे ? मुक्ति वर्ष मनाया । निगेटिव, वेस्ट को समाप्त किया तो यह वर्ष ऑटोमेटिक मेहनत मुक्त वर्ष हो जायेगा । सब मौज में रहने वाले, मेहनत करने वाले नहीं । मौज अच्छी लगती है या मेहनत अच्छी लगती है ? मौज अच्छी लगती है ना ? तो यह वर्ष मन में, संकल्प में भी मेहनत मुक्त हो ।

बापदादा के पास बच्चों के पत्र वा चिटकियां बहुत अच्छे-अच्छे हिम्मत की आई हैं कि हम अब से 108 की माला में अवश्य आयेंगे । बहुतों के अच्छे-अच्छे उमंग के पत्र भी आये हैं और रूह-रूहान में भी बहुतों ने बापदादा को अपने निश्चय और हिम्मत का अच्छा समाचार दिया है । बापदादा ऐसे बच्चों को कहते हैं – बाप ने आप सबके बीती को बिन्दू लगा दिया । इसलिए बीती को सोचो नहीं, अब जो हिम्मत रखी है, हिम्मत और मदद से आगे बढ़ते चलो । नव वर्ष के नये उमंग भी बहुत अच्छे-अच्छे लिखे हैं चाहे विदेश के बच्चों ने, चाहे देश के बच्चों ने, बापदादा ऐसे बच्चों को यही वरदान देते हैं – इसी हिम्मत में, निश्चय में, नशे में अमर भव । अमर रहेंगे ना ! डबल विदेशी अमर रहेंगे ? भारतवासी भी रहेंगे ना ? भारत को तो नम्बर लेना ही चाहिए ।

नये वर्ष में क्या मनाते हैं ? एक तो गिफ्ट देते और दूसरा ग्रीटिंग्स देते हैं । मिठाई खूब खाते खिलाते हैं । नाचते गाते भी बहुत हैं । तो आप सिर्फ 12 के बाद एक दिन नया वर्ष नहीं मनाना लेकिन ब्राह्मण बच्चों के लिए इस नव युग में हर घड़ी नई है, हर श्वास नया है, हर संकल्प नया है, इसलिए सदा पूरा वर्ष, एक दिन नहीं, एक सप्ताह नहीं, एक मास नहीं, चार मास नहीं, आठ मास नहीं, 12 ही मास सदा एक दो को दिलखुश मिठाई बाँटते रहना । बाँटेंगे ना ! दिलखुश मिठाई बाँटने आती है ? सभी होशियार हैं । तो दिलखुश मिठाई बाँटना । कोई आपकी दिल खुश मिठाई अपने स्वभाव के कारण, संस्कार के कारण, समस्या के कारण अगर नहीं भी स्वीकार करे तो आप दिलशिकस्त नहीं होना । आपने बाँटी, आपका आज्ञाकारी बनने का चार्ट बापदादा के पास जमा हो गया । यह नहीं देखना कि मैंने तो दिलखुश मिठाई खिलाई लेकिन यह तो नाराज़ हो गया, कोई हर्जा नहीं, वह राज़ को नहीं जानता है ना तो नाराज़ हो

गया। आप तो राज़ को जानते हो ना! तो यह राज़ भी जान लो कि यह हिसाब-किताब वा समस्या के वश है। आप आज्ञाकारी बनो। ठीक है ना? आज्ञाकारी बनना है ना? यहाँ तो हाँ बहुत अच्छा करते हैं, अगर आप यहाँ देखो ना, हाथ भी बहुत अच्छा हिलाते हो, खुश कर देते हो। कांध भी हिलाते हैं, हाथ भी हिलाते हैं। लेकिन बापदादा तो फिर भी हर बच्चे के ऊपर सदा ही खुश रहते हैं। जब मेरा बच्चा कह दिया, तो जो भी हो, जैसे भी हो, बाप तो देख खुश होता ही है। बाप ने जो वायदा किया है – कैसे भी लायक बनाकर साथ ले ही जाना है। साथ में चलना है ना? साथ चलने के लिए तैयार हैं? सभी तैयार हैं? एवररेडी हैं? अच्छा, एवररेडी भी हैं, बहुत अच्छा। एवरहैपी भी हैं? और जब माया आ जायेगी तो? फिर थोड़ा-थोड़ा मन में चिल्लायेंगे? बाबा माया आ गई, आ गई। चिल्लाना नहीं, अपने को उड़ा देना। माया नीचे रह जाये आप ऊपर उड़ जाओ तो माया देखती रहेगी। अच्छा तो खुशी में नाचते भी रहना और दिल खुश मिठाई बाँटते भी रहना। साथ में जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये उसको कोई न कोई गिफ्ट देना, कोई हाथ खाली नहीं जाये, कौन-सी गिफ्ट देंगे? आपके पास गिफ्ट तो बहुत है। गिफ्ट का स्टॉक है? तो देने में कन्जूस नहीं बनना, देते जाना। फ्राखदिल बनना, किसी को शक्ति का सहयोग दो, शक्ति का वायब्रेशन दो, किसको कोई गुण की गिफ्ट दो। मुख से नहीं लेकिन अपने चेहरे और चलन से दो। यदि कोई गुण वा शक्ति इमर्ज नहीं भी हो, तो कम-से-कम छोटी सी सौगात भी देना, वह कौन-सी? शुभ भावना और शुभ कामना की। शुभ कामना करो कि यह मेरा सिकीलधा भाई या बहन, सिकीलधा सोचेंगे तो अशुभ भावना से शुभ भावना बन जायेगी। इस भाई-बहन का भी उड़ती कला का पार्ट हो जाए, इसके लिए सहयोग वा शुभ भावना है। कई बच्चे कहते हैं कि हम देते हैं वह लेते नहीं हैं। अच्छा शुभ भावना नहीं लेते हैं, कुछ तो देते हैं ना। चाहे अशुभ बोल आपको देते हैं, अशुभ वायब्रेशन देते हैं, अशुभ चलन चलते हैं तो आप हो कौन? आपका आक्यूपेशन क्या है? विश्व-परिवर्तक हो? आपका धंधा क्या है? विश्व-परिवर्तक हैं ना! तो विश्व को

परिवर्तन कर सकते हो और उसने अगर आपको उल्टा बोल दिया, उल्टी चलन दिखाई तो उसका परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? पॉज़िटिव रूप में परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? निगेटिव को निगेटिव ही धारण करेंगे कि निगेटिव को पॉज़िटिव में परिवर्तन कर आप हर एक को शुभ भावना, शुभ कामना की गिफ़्ट देंगे । शुभ भावना का स्टॉक सदा जमा रखो । आप दे दो । परिवर्तन कर लो । तो आपका टाइटिल जो विश्व-परिवर्तक है वह प्रैक्टिकल में यूज़ होता जायेगा । और यह पक्का समझ लो कि जो सदा हर एक को परिवर्तन कर अपना विश्व-परिवर्तक का कार्य साकार में लाता है वही साकार रूप में 21 जन्म की गॉरन्टी से राज्य-अधिकारी बनेगा । तख़्त पर भले एक बारी बैठेगा लेकिन हर जन्म में राज्य परिवार में, राज्य-अधिकारी आत्माओं के समीप सम्बन्ध में होगा । तो विश्व-परिवर्तक ही विश्व-राज्य-अधिकारी बनता है । इसलिए सदा यह अपना आक्यूपेशन याद रखो – मेरा कर्तव्य ही है परिवर्तन करना । दाता के बच्चे हो तो दाता बन देते चलो, तब ही भविष्य में हाथ से किसको देंगे नहीं लेकिन सदा आपके राज्य में हर आत्मा भरपूर रहेगी, यह इस समय के दाता बनने की प्रालम्भ है । इसलिए हिसाब नहीं करना, इसने यह किया, इसने इतना बार किया, मास्टर दाता बन गिफ़्ट देते जाओ । और ग्रीटिंग्स क्या देंगे ? देखो किसी को भी, किसी से प्राप्ति होती है ना तो उसके मुख से, मन से यही शब्द निकलता है कि आपको मुबारक हो, एक दो को खुशी बाँटते हो तो कहते हैं मुबारक हो । उत्सव मनाते हो तो कहते हैं मुबारक हो । ऐसे जो भी आपके सामने आवे तो मुख से ऐसे शब्द बोलो, संकल्प में ऐसे श्रेष्ठ संकल्प हों तो जो भी आपसे मिलेगा वह हर समय दिल से मुबारक वा दुआयें अवश्य देगा । तो सदा ऐसे बोल बोलो, ऐसा सम्बन्ध-सम्पर्क में आओ जो दिल से, मुख से मुबारक निकले वा दुआयें निकलें । ऐसा शब्द नहीं निकालो जो मुबारक लायक नहीं हो । एक एक बोल जैसे रत्न हो । साधारण बोल नहीं हो । बापदादा ने अब तक रिज़ल्ट में देखा है, कल तो बदल जायेगा लेकिन अब तक देखा है कि बोल में जो संयम और स्नेह होना चाहिए वह स्नेह भी कम हो जाता है और संयम

भी कम हो जाता है। इसलिए ऐसा बोल बोलो जो रत्न हो। आप स्वयं जब हीरे तुल्य हो तो हर बोल भी रत्न समान हो। ऐसा मूल्यवान हो। साधारण नहीं हो। न साधारण हो, न व्यर्थ हो। और कभी-कभी बापदादा देखते हैं, रिज़ल्ट सुनायें, क्योंकि 12 बजे के बाद सब समाप्त करना है ना! तो बापदादा ने यह भी देखा है कि कोई-कोई बच्चे छोटी-सी बात का विस्तार बहुत करते हैं, इसमें क्या होता है, जो ज़्यादा बोलता है ना तो जैसे वृक्ष का विस्तार होता है उसमें बीज छिप जाता है, वह ऐसे समझते हैं कि हम समझाने के लिए विस्तार कर रहे हैं, लेकिन विस्तार में जो बात आप समझाने चाहते हैं ना उसका सार छिप जाता है और बोल, वाणी की भी एनर्जी होती है। जो वेस्ट बोल होते हैं तो वाणी की एनर्जी कम हो जाती है। ज्यादा बोलने वाले के दिमाग की एनर्जी भी कम हो जाती है। शार्ट और स्वीट यह दोनों शब्द याद रखो। और कोई सुनाता है ना तो उसको तो कह देते हैं कि मेरे को इतना सुनने का टाइम नहीं है। लेकिन जब खुद सुनाते हैं तो टाइम भूल जाता है। इसलिए अपने खज़ानों का स्टॉक जमा करो। संकल्प का खज़ाना जमा करो, बोल का खज़ाना जमा करो, शक्तियों का खज़ाना जमा करो, समय का खज़ाना जमा करो, गुणों का खज़ाना जमा करो। रोज़ रात को अपने इन खज़ानों के बचत का पोतामेल चेक करो। कितने संकल्प वेस्ट के बजाए बेस्ट के खाते में जमा किया? कितना समय बेस्ट के खाते में जमा किया? गुण और शक्तियों से श्रेष्ठ कार्य किया? गुण को कार्य में लगाया? शक्ति को कार्य में लगाया? यह है जमा करना। तो सभी संकल्प, समय, गुण, शक्ति इसका पोतामेल रोज़ रात्रि को चेक करो फिर टोटल करो कितना बचत का खाता हुआ? यही बचत स्वयं को भी सहयोग देती रहेगी और औरों को भी देगी। तो समझा - क्या करना है? सब पूछते हैं ना क्या करना है? तो अब यह करना है। ग्रीटिंग्स भी लेनी है, गिफ़्ट भी देनी है, जमा भी करना है और मेहनत को छोड़ना है। जब बचत के ऊपर अटेन्शन देंगे तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। मेहनत मुक्त वर्ष धूमधाम से मनायें। वेस्ट और निगेटिव मुक्त वर्ष मनायें। बापदादा मुक्ति वर्ष की रिज़ल्ट अभी नहीं पूछ रहे हैं, बापदादा को

याद है। रिज़ल्ट लेंगे कि कितनों ने मुक्ति वर्ष मनाया या मास मनाया ? 6 मास मनाया, आधा मनाया, पूरा मनाया – यह सब 18 तारीख को हिसाब लेंगे ?

डबल विदेशियों ने तो अच्छा मना लिया है ना, भारत वालों ने भी मनाया तो है, रिज़ल्ट 18 तारीख को लेंगे। जिसने सारा वर्ष मनाया, उसको क्या देंगे ? दादियां बतावें जिन्होंने पूरा वर्ष मुक्ति वर्ष मनाया है, उनको क्या देंगे ? मुबारक और दुआयें तो हैं ही और यादगार क्या देंगे ? इनाम तैयार रखना। देखेंगे कितने इनाम लेते हैं ? तो नया वर्ष, नया उमंग, नया उत्साह और नई हिम्मत सब नया ही नया। जो इस घड़ी स्टेज है वह दूसरे घड़ी उससे श्रेष्ठ स्टेज होनी चाहिए। ठीक है ना ?

अच्छा – आज 12 बजे तक बैठना है। इसीलिए सब यहाँ-वहाँ से भागकर नया वर्ष मनाने के लिए पहुँचे हैं। अच्छा है – जो भी नये-पुराने आये हैं हर एक को दिल से दुआओं भरी मुबारक दे रहे हैं। भले पधारे, भले आये। शान्तिवन का श्रृंगार भले पधारे। देखो यह हाल कितना सज गया है। तो सजाने वाले कौन ? आप ही हैं ना !

अच्छा – आज बापदादा हर ग्रुप से जहाँ बैठे हो वहाँ ही खड़ा कर मिलन मनायेंगे। चाहे डबल विदेशी हो चाहे भारत के हर ज़ोन के हो, एक-एक ज़ोन से बापदादा मिलन मनायेंगे लेकिन स्टेज पर नहीं आना। वहाँ ही खड़े हो करके मिलन मनाना। यह भी तो नई बात है ना। नया वर्ष मनाने आये हैं, यह भी नई बात है। अच्छा।

### डबल विदेशी – यूथ ग्रुप से (सभी ने गीत गाया)

उमंग-उत्साह का गीत बहुत अच्छा गाया। यूथ को बहुत कार्य करना है। ऐसा यूथ ग्रुप तैयार हो जो सब निमन्त्रण देकर आपको अपनी स्टेज पर बुलावें। बहुत अच्छा है। ट्रेनिंग देने वाले भी अच्छे हैं। तो जो बापदादा ने इस वर्ष का कार्य दिया है, उसमें यूथ ग्रुप नम्बरवन लेंगे ना ? सिखाने वालों ने भी अच्छी मेहनत की है।

वैल्युज़ कोर्स में आये हुए भाई-बहनों से -- ऐसे होशियार हो जाओ जो बापदादा और सारा विश्व आपको थैंक्स देता रहे। सभी के जीवन में वैल्युज़ इमर्ज करके दिखाओ। जहाँ ऐसे कोई बहुत कड़े स्वभाव के हों ना, वहाँ इस गुप में से कोई ऐसे तैयार हो जाएँ जो वहाँ के वातावरण को चेंज कर दें। जैसे पंजाब में आतंकवाद बहुत था ना तो पंजाब वालों ने योग के वायब्रेशन से, स्नेह से सेवा की और फ़र्क आ गया, तो यह वैल्यु वाले भी ऐसी कोई प्रत्यक्ष सेवा करके दिखावें। जहाँ एकदम वैल्यु गिरी हुई हो ऐसे को वैल्यु के वायब्रेशन से परिवर्तन करके दिखाना। मुबारक हो।

आस्ट्रेलिया, फिजी, न्यूज़ीलैण्ड -- आस्ट्रेलिया वालों ने हिम्मत करके जो रिट्रीट हाउस लिया है उसकी मुबारक हो। और उसमें ऐसे कोई निकालो जो माइक बन आपके बदले में वह अनुभव सुनावे, तो आस्ट्रेलिया पहले भी सदा आगे रहा है। अब रिट्रीट हाउस से ऐसे माइक तैयार कर बापदादा के सामने लाना है।

यूरोप, यू.के., दुबई, मौरीशियस -- यूरोप को तो वरदान मिला हुआ है कि यूरोप अनेक आत्माओं को जगाने के निमित्त बना भी है और बनेगा भी क्योंकि यूरोप के साथ यू.के. भी है तो बहुत अच्छा है। यूरोप वाले आप सबको याद होगा शुरू में बापदादा यूरोपवासी यादव कहके यूरोप को याद करते थे और यूरोप को ब्रह्मा बाप ने बहुत बारी याद किया। तो अभी भी जो भी यू.के. वा यूरोप में हैं उन्हीं को ऐसे साइन्स वाला माइक निकालना है जो आपके तरफ़ से माइक बन साइन्स वाला साइलेन्स को सिद्ध करके दिखावे। साइलेन्स वाले साइलेन्स को सिद्ध करते हैं यह बड़ी बात नहीं है लेकिन साइन्स वाले साइलेन्स की शक्ति को सिद्ध करें -- अभी ऐसी कोई कमाल दिखाओ। सुना -- यूरोप और यू.के. वालों ने। ऐसा निकालना। बहुत अच्छा है। कमाल करनी है। होनी ही है। अच्छा।

अमेरिका -- अमेरिका क्या करेगा? अमेरिका वालों को यू.एन. में ऐसा माइक तैयार करना है। यू. एन. का मेम्बर हो और ऐसा माइक बने जो कहे कि

सचमुच जो हम नहीं कर सकते वह यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय के कर सकते हैं। कर रहे हैं और करके दिखायेंगे। ऐसा कोई निकालो। रिट्रीट हाउस ले रहे हैं तो उसमें क्या करेंगे? ऐसे यू.एन. का कोई मेम्बर तैयार करो जो स्टेज पर कहे कि यही हैं, यही हैं जो कार्य कर सकते हैं। हिम्मत है ना! करना ही है? और हुआ भी पड़ा है सिर्फ़ निमित्त बनना है, बस। बाकी कमाल करेंगे, इतना वर्ष यू.एन. का कनेक्शन रहा है, कुछ तो कमाल करेंगे ना! तो ऐसी कमाल करके दिखाना। अच्छा। रिट्रीट हाउस के लिए मुबारक हो।

एशिया ग्रुप -- अच्छा यह क्या करेंगे? एशिया में ऐसे बहुत रत्न हैं जो ब्राह्मण परिवार के हैं लेकिन अभी तक छिपे हुए हैं। एशिया के कई भाग नई दुनिया में मिल जायेंगे, इसलिए आपकी धरनी एशिया की भाग्यवान है, तो उसमें से ऐसे विशेष रत्न निकालो, बापदादा चाहते हैं कि अभी आप जो ब्राह्मण आत्मार्थे हैं वह माइट बनें तथा माइक और बनें। आप माइट बन लाइट दो और वह लोग माइक बन भाषण करें, परिचय दें, अनुभव सुनावें, तो ऐसे एशिया में हैं जिन्हों को ढूंढो और निमित्त बनाओ। तो आप लोग माइट बन जायेंगे और वह माइक बनेंगे। ठीक है? एशिया वालों को करना है ना? बहुत अच्छा, फिर इनाम देंगे कि पहला बड़े से बड़ा माइक किसने निकाला? एशिया निकालेगी, नम्बरवन जायेगा? हर एक सोचे नम्बरवन जाना है। बापदादा देखेंगे कौन बड़े से बड़ा माइक तैयार करता है। छोटे-छोटे तो कनेक्शन में हैं, लेकिन स्टेज पर आवें। माइक वह जो स्टेज पर बेधड़क बन भाषण करे, ऐसे माइक तैयार करो। ठीक है? तो कौन-सा नम्बर लेना है? पहला नम्बर लेना। छोटे बच्चे भी हिम्मत वाले हैं, बहुत अच्छा।

अफ्रीका, साउथ अफ्रीका -- अफ्रीका में बहुत अच्छे-अच्छे रत्न हैं। सेवा करने में होशियार हैं ना। तो अभी क्या करेंगे? अफ्रीका में सबसे ज़्यादा गोल्ड है ना! तो बापदादा के पास ऐसे गोल्डन स्टेज वाले रत्न ले आओ। जैसे स्थूल गोल्ड मशहूर है ऐसे अफ्रीका के रत्न हीरे भी वहाँ हैं, गोल्ड भी हैं, तो ऐसे रत्न सामने लाओ। कब लायेंगे, तारीख बताओ। अच्छा मार्च में ले आयेंगे? हाँ



अफ्रीका वाले कमाल करके दिखाओ। कमाल करेंगे? बहुत अच्छा। रत्न बहुत अच्छे-अच्छे हैं। अभी मार्च तक देखेंगे फिर इनाम देंगे, ठीक है, पसन्द है?

रशिया -- रशिया वाले क्या कमाल करेंगे? जैसे रशिया में अभी स्वतन्त्रता हुई है ना। कम्युनिस्ट का राज्य नहीं है, स्वतन्त्र हैं तो ऐसे स्वतन्त्रता का झण्डा लहराओ जो रशिया में यह आवाज़ हो जाए कि सच्ची स्वतन्त्रता यहाँ से ही मिल सकती है। यह आवाज़ चारों ओर फैल जाए, धर्म के हिसाब से नहीं लेकिन सच्ची स्वतन्त्रता के हिसाब से। यह आवाज़ लहरायेंगे? रशिया वाले सभी को बहुत प्यारे लगते हैं। क्यों प्यारे लगते हैं? क्योंकि बाप भी भोलानाथ है ना, तो रशिया वाले भी भोले बहुत अच्छे हैं। भोलेभाले हैं लेकिन हैं तीखे, अन्दर होशियार हैं लेकिन सूरत से बिल्कुल भोले, प्यारे मीठे लगते हैं इसलिए सबका रशिया वालों से विशेष प्यार है, बहुत अच्छा। अभी स्वतन्त्रता का आवाज़ फैलाना। अच्छा।

इज़राइल -- अभी नया-नया खुला है ना तो लाड़ले हो। जो छोटे होते हैं ना वह लाड़ले होते हैं और जो लाड़ले होते हैं वह सदा माँ-बाप के समीप रहते हैं। उन्हों के ऊपर सदा माँ-बाप की नज़र रहती है इसलिए कमाल करके ही दिखानी है। प्लैन अच्छे बनाते हैं और सफलता मिलती ही है। थोड़े हैं लेकिन अच्छे हैं, हिम्मत अच्छी है। तो दूसरे वर्ष कमाल करके ग्रुप ले आना। ठीक है। अच्छा।

चिल्ड्रेन ग्रुप को सम्भालने वाले टीचर्स से -- अच्छा तैयार किया है। अच्छा दिल से उमंग-उत्साह से कार्य किया है। इसलिए जो कार्य किया है उसकी सफलता मिलनी ही है। ग्रुप अच्छा है।

ज्युरिस्ट मीटिंग में आये हुए भाई बहिनों से -- ज्युरिस्ट क्या करेंगे? (लॉ और लव का बैलेन्स रखेंगे, भारत को स्वर्ग बनायेंगे) वैसे भी ज्युरिस्ट बोलने में होशियार होते हैं। अच्छा बोला, हिम्मत के बोल बोले और ज्युरिस्ट का काम ही है -- कमज़ोर केस को हिम्मत वाला बनाना। तो अच्छा हिम्मत दिखाई और सदा जो भी मर्यादायें हैं, लाज़ हैं उस पर चलने और चलाने का वायुमण्डल

बनाते चलो। बाकी क्वालिटी अच्छी है। एक-एक बहुत कार्य कर सकते हैं, क्यों? आपके पास जो क्लायन्ट बनकर आते हैं वह उस समय आपको भगवान का रूप समझते हैं। आपमें फ़्रेथ होता है, ऐसे क्लायन्ट को आप लोग बाप का बना सकते हो। तो वकील भी बढ़ते जायेंगे, जज भी बढ़ेंगे। अभी कोई ऐसा जज तैयार करो जो नज़दीक वाला हो। और जज़ अपने अनुभव के आधार से बोले कि अगर भारत का कल्याण होना है, सत्य सिद्ध होना है तो यही है, यही है, यही है। ऐसा ग्रुप तैयार करो। ऐसा कोई बड़ा जज़ तैयार करो जो निर्भय होकर स्टेज पर बोले, सिद्ध करके बतावे कि यह सत्य क्यों है। ऐसी हिम्मत है ना? आपके बोलने से ही हिम्मत लग रही है। तो ऐसा करना। जिसको जो कहा है, वह इस वर्ष में लास्ट सीज़न तक, मार्च की एण्ड तक तैयार करके लावे। पसन्द है? फ़ॉरेन वालों को भी काम दिया है, यूथ को भी काम दिया है, जज़ेस को भी काम दिया है। अभी देखेंगे कौन करके आता है। तो आपका पहला नम्बर होगा ना? लेकिन ऐसा तैयार करके आओ जो पब्लिक में कहें, यहाँ कान्फ़ेन्स में कहना और बात है, वह तो यह धरनी ऐसी है, पब्लिक स्टेज पर कहे – ऐसा तैयार करना। (मधुबन की लता बहन, वकील से) यह वकील भी होशियार है, अच्छा काम कर रही है। शक्ति आगे आवे ठीक है। मुबारक हो, मुबारक हो। बहुत अच्छा।

टीचर्स बहिनों से -- गुप तो बहुत बड़ा है। (5-6 सौ टीचर्स हैं) टीचर्स क्या करेंगी? इस वर्ष में टीचर्स इनाम लेना। किस बात में? स्वयं और सेन्टर निवासी और साथ में सर्व स्टूडेंट्स पूरे वर्ष में निर्विघ्न रहे, कोई भी विघ्न न स्वयं में आवे, न साथियों में आवे, न स्टूडेंट में आवे, ऐसी हिम्मत है तो हाथ उठाओ। पार्टी लेकर आये हो तो नाम तो नोट हैं। सौगातें तैयार रखना। इनाम तैयार रखना। देखेंगे कितने इनाम लेने के पात्र बनते हैं। तीन सर्टिफ़िकेट लेंगे। तीन सर्टिफ़िकेट – एक अपना स्वयं का सर्टिफ़िकेट, दूसरा साथियों का सर्टिफ़िकेट और तीसरा स्टूडेंट का हँ या ना। बातों में नहीं निकालेंगे सिर्फ़ हँ निर्विघ्न रहे, या नहीं रहे। कचहरी नहीं करेंगे, बातें नहीं निकालेंगे। तो तीन सर्टिफ़िकेट लेने

वाले को इनाम मिलेगा। हाथ तो सभी ने उठाया, जिसने नहीं उठाया समझते हैं कोशिश करेंगे, पता नहीं होवे नहीं होवे, वह हाथ उठाओ। ऐसा कोई है? शर्म तो नहीं करते हो? अगर हिम्मत नहीं भी हो तो हिम्मत रखना, हिम्मत की मदद ज़रूर मिलेगी। समझा। समझा। समझा? सब टीचर्स ने सुना? अच्छा है – टीचर्स को देखकर बापदादा खुश होते हैं – टीचर्स सेवा के साथी हैं इसलिए बापदादा को टीचर्स को देखकर खुशी होती है। बापदादा रिगार्ड भी रखते हैं क्योंकि बच्चे भी हैं, साथी भी हैं इसलिए विशेष मदद भी है। ठीक है ना।

मधुबन निवासी, आबू निवासी -- अच्छा ग्रुप है। देखो मधुबन वाले अगर सेवा में आगे नहीं होते तो इतनी आत्माओं को बाप से मिलन का भाग्य कैसे मिलता। इसलिए मधुबन वालों को सबसे बड़े-ते-बड़ी देन सबके दुआओं की मिलती है। दुआयें मिलती हैं? दुआयें महसूस करते हो? सिखलाते भी हो और निमित्त भी बनते हो। तो मधुबन वालों को बापदादा ब्राह्मणों के सेवा की छत्रछाया कहते हैं। मधुबन निवासियों के सेवा की छत्रछाया में अनेक आत्माओं का फ़ायदा हो जाता है। पुरुषार्थ में आगे बढ़ते रहते हैं। तो सभी का पुण्य मधुबन वालों को शेयर में मिलता रहता है। मधुबन वाले शेयर होल्डर हैं। बिना मेहनत के भी मिलता रहता है। सबके दिल की दुआयें बहुत अमूल्य चीज़ है। दिल से जिसको जितनी दुआयें मिलती हैं, वह दिल की दुआयें जमा होती हैं तो सहज पुरुषार्थ हो जाता है। सेवा का पुण्य अच्छा मिला है। यह सेवा का पुण्य सदा बढ़ाते रहना। कम नहीं करना, सदा बढ़ाते रहना। जैसे बाप जी हाज़िर कहते हैं वैसे मधुबन निवासी बाप के समीप हैं, तो मधुबन निवासियों को सदा जी हाज़िर और जी हज़ूर दोनों ही याद है और रहेगा।

दोनों याद है ना – हज़ूर भी याद है और जी हाज़िर भी याद है। कोई भी बुलावे, तो हाँ हाज़िर, हाँ हाज़िर। ऐसे है? हाज़िर हैं ना। ना ना तो नहीं करते हैं ना, हाँ-हाँ वाले हैं। हाँ जी, हाँ जी करके हज़ूर के आगे समीप आ गये हैं। और सबके लाड़ले बन गये हैं। किस श्रेष्ठ नज़र से मधुबन वालों को देखते हैं?

बहुत लाड़ले हो गये हैं ना। जहाँ भी जायेंगे, मधुबन वाले आये हैं, मधुबन वाले आये हैं – यह सेवा का फल है। तो क्या याद है? जी हज़ूर और जी हाज़िर। पक्का है ना? कभी भी ना ना नहीं। हाँ जी, हाँ जी...। बहुत अच्छा। बापदादा को मधुबन निवासियों से सदा प्यार है। सदा प्यारे हैं। अच्छा।

### **भारतवासी भाई-बहिनों से अव्यक्त बापदादा की पर्सनल मुलाकात**

राजस्थान --(सेवा की बहुत अच्छी ड्युटी सम्भाली है) राजस्थान ने सेवा का चांस अच्छा लिया भी और किया भी, इसलिए सेवा की मुबारक हो। गुप बहुत अच्छा है, अभी एक दो को सहयोग देकर आगे बढ़ते चलो। ठीक है ना। अच्छा।

महाराष्ट्र ज़ोन – महाराष्ट्र नाम ही है महा, तो महाराष्ट्र क्या महान कार्य करके दिखायेंगे? बापदादा ने आगे भी कहा है कि क्वान्टिटी तो बहुत अच्छी है, अभी महाराष्ट्र को ऐसी क्वालिटी तैयार करनी है, जो आवाज़ फैलाने में सहयोगी बन जाये। अभी महाराष्ट्र से कोई ऐसी विशेष आत्मा तैयार करो जो सारे महाराष्ट्र में उसके आवाज़ का प्रभाव हो और महाराष्ट्र में मेहनत वाले हैं, अच्छी हिम्मत वाले हैं। इसलिए सहज ऐसे सेवा करने से निकल आयेंगे। इस वर्ष सभी को, हर ज़ोन को ऐसा तैयार करके मार्च तक लाना है। मंजूर है तो हाथ हिलाओ। मार्च में माइक की सेरीमनी मनायेंगे। यह लंदन का माइक, यह अमेरिका का माइक... यह भारत का, यह हर ज़ोन का, यह महाराष्ट्र का, यह आंध्रा का, सब ज़ोन का हो, फिर देखना क्या कमाल हो जाती है।

बाम्बे -- बाम्बे को ब्रह्मा बाबा नरदेसावर कहते हैं। इसका अर्थ है सदा सम्पन्न रहने वाला। तो बाम्बे वालों को क्या तैयार करना है? कोई ऐसे सेवा के निमित्त बनाओ जो अनेक छोटे-छोटे सेन्टर को भी बड़ा बना दें। बाम्बे में तो करते ही हो लेकिन ऐसा कोई नरदेसावर निकालो जो औरों का भी सहयोगी बनें, तब कहेंगे बाम्बे नरदेसावर है। ऐसे कोई व्यक्ति तैयार करो जो आवाज़

फैलाये कि सच्चा धन अगर है तो ब्रह्माकुमारियों के पास है। सच्चा धन क्या होता है, उसके उपर चैलेंज करके दिखावे कि सच्चा धन, अविनाशी धन किसको कहा जाता है। सहयोगी भी बनें और चैलेन्ज करके दिखावे तो सबकी आँखें खुल जाये कि अविनाशी धन कौन सा है। ऐसा मार्च तक निकालेंगे ? अगर हाँ है तो हाथ उठाओ। हिम्मत नहीं हो तो ना कहो। हिम्मत रखो तो क्या नहीं हो सकता है। किसको भी टर्चिंग होती है तो सेकेण्ड ही लगता है। यह तो तीन मास हैं तो देखेंगे नम्बरवन प्राइज़ कौन लेता है। बहुत बढ़िया प्राइज़ मिल रही है। इस बारी स्थूल प्राइज़ देंगे जो यादगार रहेगा। अच्छा।

आन्ध्र प्रदेश -- सब फंक्शन में बिज़ी हैं। थोड़े आये हैं, थोड़े भी बहुत कमाल कर सकते हैं। तो आन्ध्र प्रदेश भी कमाल कर सकता है क्योंकि आन्ध्र प्रदेश में भी गवर्मेन्ट एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट बहुत सहज कनेक्शन में आ सकते हैं। आन्ध्र प्रदेश अगर एज्यूकेशन डिपार्टमेन्ट में विशेष सेवा करे तो सफलता बहुत सहज मिल सकती है। आन्ध्र प्रदेश के जो मुख्य लोग हैं वह सहज सम्बन्ध-सम्पर्क में आ सकते हैं, यह आन्ध्र प्रदेश को वरदान है, इसलिए हिम्मत रखो तो सफलता सहज होगी। अच्छा।

दिल्ली और आगरा -- दिल्ली वालों का कार्य आदि से आरम्भ हुआ है। सेवा की आदि दिल्ली से हुई है, इसलिए बापदादा दिल्ली का नाम सदा वर्णन करते रहते हैं। दिल्ली वालों ने इन्वेन्शन तो समय प्रति समय की है लेकिन अभी और भी नई नई इन्वेन्शन कर कोई नई सर्विस की रूपरेखा बनाने के निमित्त बनना है। दिल्ली का आवाज़ विश्व तक पहुँचता है। इसलिए दिल्ली का विशेष सेवा का नाम चारों ओर बाला हो जाता है। अभी कोई नया प्लान दिल्ली को प्रैक्टिकल में करके दिखाना है। माइक तो दिल्ली में बहुत हैं, सहयोगी हैं, समय पर सहयोग देते हैं लेकिन आवाज बुलन्द करना उसमें अभी उन सहयोगी आत्माओं को समीप लाना है। समय पर कार्य के निमित्त बनते हैं लेकिन आवाज़ बुलन्द करने के लिए सदा तैयार रहें, वो अभी कोई नई इन्वेन्शन कर उन्हीं को सहयोगी से सदा सहयोगी बनाना है। दिल्ली में ऐसी हिम्मत है ना।

जगदीश भाई से -- आदि से सेवा बहुत की है। आदि से सेवा के निमित्त बने हो और इन्वेन्शन भी अच्छी-अच्छी की है। अभी देखो वर्गीकरण की रिज़ल्ट कितनी अच्छी है। इसलिए अभी फिर कोई नई इन्वेन्शन करनी है। सबका आपसे प्यार है। मुरली में नाम आता है ना तो सभी का अटेन्शन जाता है। अभी शरीर को जबरदस्ती नहीं चलाओ, अभी आराम से चलाओ। अभी यह नहीं सोचो यह करना ही है। नहीं। औरों को आप समान बनाओ। मेले की शुरूआत भी दिल्ली से ही शुरू हुई है, कान्फ्रेंस भी हुई अभी नई इन्वेन्शन भी दिल्ली से शुरू हो। अच्छा।

यू.पी. -- लखनऊ में बहुत अच्छा मेला चल रहा है। जैसे अभी सारे यू.पी. के सम्बन्ध से कार्य किया है, वैसे अभी यू.पी. में गवर्मेन्ट की सेवा अच्छी हो सकती है। अगर सभी मिलकर यू.पी. में गवर्मेन्ट की सेवा करें तो वहाँ का आवाज़ चारों ओर फैल सकता है। ऐसी क्वालिटी यू.पी. में है जो सेवा में सहयोगी बन सकते हैं। अभी सभी बिज़ी हैं, अच्छा किया है। बापदादा खुश है और मुबारक दे रहे हैं। अनेक आत्माओं तक आवाज़ फैला है, ऐसे समय प्रति समय संगठन द्वारा आगे बढ़ते जायें, धरनी अच्छी है, सहज है, इसलिए आगे बढ़ते चलो। अच्छा।

ईस्टर्न -- अच्छा ग्रुप आया है। सेवा की मुबारक तो बापदादा ने दे ही दी है। अभी आवाज़ निकालने में सर्व के सहयोग से बापदादा खुश है। ब्रह्मा बाप की प्रत्यक्षता का स्थान है। इसलिए जैसे ब्रह्मा बाप का आदि स्थान है ऐसे अभी सभी को नाम बाला करने का पुरुषार्थ करना चाहिए। अभी सर्व के सहयोग से नाम हुआ है, मेहनत अच्छी की है, सहयोग भी अच्छा दिया है, अभी ऐसे ही सहयोगी बन और आदि स्थान को मशहूर करते जाएँ। कलकत्ता में बहुत अच्छे-अच्छे इन्डस्ट्रियल निकल सकते हैं। ऐसी सेवा करके कोई ऐसे निमित्त बनाओ जो अनेकों की सेवा में निमित्त बनें। अच्छा है, अभी हिम्मत अच्छी है, उमंग भी अच्छा है, रिज़ल्ट भी अच्छी है। आगे बढ़ते चलो, बढ़ते-बढ़ते मंज़िल पर पहुँच ही जायेंगे। अच्छा।

पंजाब -- अच्छा है, पंजाब वालों ने भी जगह-जगह पर अच्छा नाम बाला किया है। पंजाब अभी सेवा में अच्छा आगे बढ़ रहा है। इसलिए पंजाब वालों को वा हरियाणा, हिमाचल वालों को सभी को सेवा में आगे बढ़ने की मुबारक हो। जो भी प्रोग्राम किये हैं, अच्छे सहयोग से और सफलता पूर्वक किये हैं, तो जैसे अभी सेवा में फास्ट जा रहे हैं ऐसे आगे भी फास्ट रहेंगे और सफलता को प्राप्त करना ही है। अच्छी रिज़ल्ट है, पंजाब वालों को मुबारक।

इन्दौर-भोपाल -- चाहे इन्दौर है, चाहे भोपाल है लेकिन हर एक अपने अनुसार सेवा में आगे तो बढ़ ही रहे हैं। बापदादा ने देखा है सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है और वृद्धि भी होती रहती है। अभी जैसे वृद्धि करते रहते हैं, वैसे ही चाहे भोपाल में, चाहे इन्दौर में, दोनों जगह ऐसा पावरफुल ग्रुप बनाओ जो सदा सेवा में और स्वउन्नति में एक्ज़ाम्पल बनें। दोनों तरफ़ ऐसा ग्रुप बनाओ जो एक्ज़ाम्पल बन और तरफ भी अपना अनुभव सुना सके। तो मध्यप्रदेश अनुभव सुनाने का ग्रुप तैयार करे। सेवा में तो हैं ही अच्छे और आगे भी करेंगे परन्तु ऐसा कोई ग्रुप का एक्ज़ाम्पल बनाओ जो ब्राह्मणों की सेवा हो, जहाँ कुछ भी हो तो ऐसे ग्रुप का एक्ज़ाम्पल सामने आवे। दोनों ही मध्य प्रदेश है ना। तो दोनों को ऐसी कोई तैयारी करनी चाहिए। सेवा के प्लैन तो अच्छे बनाते ही हैं। अभी ऐसा ग्रुप बन सकता है? तो मार्च में दोनों तरफ़ का ऐसा ग्रुप बाप के सामने लाना है। ठीक है? वैसे तो सभी तरफ़ ग्रुप बनाना है, लेकिन पहले आप लोग बनाओ। सभी ज़ोन में बनाना है, निमित्त पहला नम्बर आप बने। सेवा में तो होशियार हैं ही। प्लैन भी अच्छे-अच्छे बनाते हैं। अच्छा।

गुजरात -- गुजरात ने सेवा का विहंग मार्ग तो दिखाया, बहुत अच्छा किया। अभी गुजरात को नवीनता क्या करनी है? सेवा तो कर ली, अच्छा किया। गुजरात में जगह-जगह पर वारिस क्वालिटी हैं, अभी गुजरात को वारिस क्वालिटी का ग्रुप तैयार करके लाना है। बापदादा को उम्मीद है कि गुजरात से वारिस क्वालिटी निकल सकती है। और है भी लेकिन उन्हीं को संगठित रूप में बड़ों के सामने लाओ। ऐसे है ना? वारिस हैं? तो अभी ऐसा ग्रुप लाना।

गुजरात एक वारिस क्वालिटी में एक्ज़ाम्पल बनें। वारिस की भाषा तो समझते हैं ना – जो तन से, मन से, सहयोग से सबसे नम्बरवन हो और हर कार्य में हर समय एवररेडी हो? इसको कहा जाता है वारिस। जिस समय बुलावा आवे उस समय हाज़िर हो जाये, इसको कहा जाता है – ‘वारिस क्वालिटी।’ हर समय जी हज़ूर हाज़िर। हाज़िर हो जाए, हर कार्य में नम्बर आगे आवे – इसको कहा जाता है वारिस। तो गुजरात से ऐसे वारिस निकालने हैं। अच्छा।

**कर्नाटक** -- अच्छा ग्रुप है। कर्नाटक वाले जितना ही भावना स्वरूप हैं उतना ही हर कार्य में सहयोगी भी बहुत अच्छे हैं। चाहे कोई भी कार्य हो लेकिन संख्या सहयोगी बन जाती है। इसलिए कर्नाटक की धरनी सेवाधारी बहुत अच्छी है। कर्नाटक के वी.आई.पीज़ भी बहुत अच्छे भाव-वान होने के कारण सहयोग अच्छा देते हैं इसलिए कर्नाटक वालों को भी चारों ओर के वी.आई.पीज़ का ग्रुप तैयार करना चाहिए और ऐसे वी.आई.पीज़ हैं जो माइक भी बन सकते हैं परन्तु संगठित रूप में उन्हीं को पालना चाहिए इसलिए कर्नाटक वाले जो निमित्त हैं उन्हीं को संगठित रूप में ऐसे वी.आई.पीज़ का ग्रुप तैयार करना चाहिए जो कहाँ भी सेवा के निमित्त बन सकते हैं। वी.आई.पी. की सेवा कर रहे हैं लेकिन मैदान पर लाना चाहिए वह संगठित रूप में कर सकते हो। तो अभी संगठित रूप में करना। अच्छा।

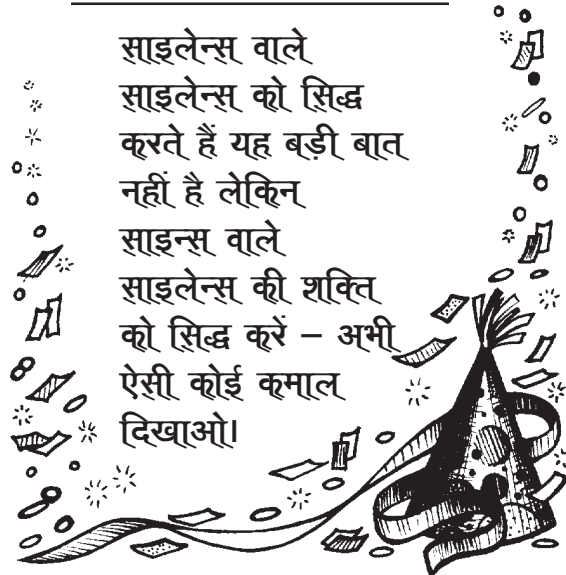
**तामिलनाडु-केरला** -- तामिलनाडु की विशेषता है जो निमित्त है (रोज़ी बहन) उसकी हिम्मत बहुत अच्छी है। और निमित्त वाले की हिम्मत होने के कारण चारों ओर स्टूडेंट में भी हिम्मत अच्छी है इसलिए हिम्मते बच्चे मददे बाप है ही। बापदादा तामिलनाडु के सेवाधारियों को बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। आगे भी सेवा की नई-नई इन्वेन्शन करते रहना और आगे बढ़ते बढ़ाते रहना।

(१-१-९९ के शुभ प्रभात पर बापदादा ने  
सभी बच्चों को १२ बजे के बाद मुबारक दी)

चारों ओर के अति स्नेही समीप ब्राह्मण आत्माओं को नव युग के रचता



का मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। यह घड़ी है विदाई और बधाई की। संगम है। पुराने वर्ष को विदाई, पुराने वर्ष के साथ-साथ पुरानी बातें, पुरानी समस्याएँ, पुराने संस्कार सबको विदाई और नये उमंग-उत्साह सम्पन्न वर्ष को मुबारक के साथ बधाई भी है, इस वर्ष को सदा मेहनत मुक्त वर्ष मनाना है। इस वर्ष को सदा स्व और सर्व को निर्विघ्न भव के वरदान से मनाना है। इस वर्ष को सदा विजय हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है, - इस निश्चय और नशे को सदा हर कर्म करते भी इमर्ज रखने का वर्ष मनाना। इस वर्ष में हर एक को बापदादा और दादियों द्वारा नम्बरवन जाने का इनाम वा गिफ्ट लेनी है, इसके लिए सभी विदेशी वा भारतवासियों को नम्बरवन का निश्चय रख आगे बढ़ना और बढ़ाना है। तो बहुत-बहुत यादप्यार सहित सब प्रकार की मन्सा से, वाचा से, सब रूप से बापदादा पद्मापद्म गुणा मुबारक दे रहे हैं। अभी एक सेकण्ड सभी पावरफुल संकल्प से, दृढ़ता से पुराने वस्तुओं को, पुराने वर्ष को, पुरानी बातों को सदा के लिए विदाई दो। एक सेकण्ड सभी - 'दृढ़ता सफलता है' - इस दृढ़ संकल्प में स्थित हो जाओ।



## वर्तमान समय के प्रमाण वैश्वय वृत्ति को इमर्ज कर साधना का आयुमण्डल बनाओ

आज स्नेह के सागर बापदादा अपने अति स्नेही बच्चों से मिल रहे हैं। आज का दिन विशेष स्नेह का दिन है। अमृतवेले से लेकर चारों ओर के बच्चे स्नेह की लहरों में लहरा रहे हैं। हर एक बच्चे के दिल का स्नेह दिलाराम बाप के पास पहुँच गया। बापदादा भी सभी बच्चों को स्नेह के रेसपान्स में स्नेह और समर्थ-पन का वरदान दे रहे हैं। आज के दिन को बापदादा यज्ञ की स्थापना में विशेष परिवर्तन का दिन कहते हैं। आज के दिन ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में बैकबोन बन अपने बच्चों को साकार रूप में विश्व के मंच पर प्रत्यक्ष किया। इसलिए इस दिवस को बच्चों के प्रत्यक्षता का दिन कहा जाता है, समर्थ दिवस कहा जाता है, विल पावर देने का दिवस कहा जाता है। ब्रह्मा बाप गुप्त रूप में कार्य करा रहा है। अलग नहीं है, साथ ही है सिर्फ गुप्त रूप में करा रहा है। यह अव्यक्ति दिवस बच्चों के कार्य को तीव्र गति में लाने का दिवस है। अभी भी हर एक बच्चे की छत्रछाया बन पालना का कर्तव्य कर रहे हैं। जैसे माँ बच्चों के लिए छत्रछाया होती है ऐसे ही अमृतवेले से लेकर ब्रह्मा माँ चारों तरफ के बच्चों की रेख-देख करते रहते हैं। साकार में निमित्त बच्चे हैं लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति, हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।

आज के दिन भाग्य विधाता ब्रह्मा हर बच्चे को विशेष स्नेह के रिटर्न में वरदान का भण्डार भण्डारी बन बाँटते हैं। जो बच्चा जितना अव्यक्त स्थिति में स्थित हो मिलन मनाते हैं उस हर एक बच्चे को जो वरदान चाहिए वह सहज प्राप्त होता है। वरदानों का खुला भण्डार है, जो चाहिए, जितना चाहिए उतना

प्राप्त होने का श्रेष्ठ दिवस है। स्नेह का रिटर्न होता है – सहज वरदान की गिफ्ट। तो गिफ्ट में मेहनत नहीं करनी पड़ती है, सहज प्राप्ति होती है। गिफ्ट मांगी नहीं जाती है, स्वतः ही प्राप्त होती है। पुरुषार्थ से वरदान के अनुभूति की प्राप्ति अलग चीज़ है लेकिन आज के दिन ब्रह्मा माँ स्नेह के रिटर्न में वरदान देते हैं। तो आज के दिन सभी ने सहज वरदान प्राप्त होने की अनुभूति की? अभी भी सच्चे दिल के स्नेह का रिटर्न वरदान प्राप्त कर सकते हो। वरदान प्राप्त करने का साधन है – दिल का स्नेह। जहाँ दिल का स्नेह है, वो स्नेह ऐसा खज़ाना है जिस खज़ाने द्वारा, बापदादा द्वारा जो चाहे अविनाशी वरदान प्राप्त कर सकते हो। वह स्नेह का खज़ाना हर बच्चे के पास है? स्नेह का खज़ाना है तब तो पहुँचे हो ना! स्नेह खींचकर लाया है और स्नेह में रहना बहुत सहज है। पुरुषार्थ की मेहनत नहीं करनी पड़ती क्योंकि स्नेह का अनुभव हर आत्मा को होता ही है। सिर्फ़ अब जो बिखरा हुआ स्नेह था, कुछ कहाँ, कुछ कहाँ था, वह बिखरा हुआ स्नेह एक के ही साथ जोड़ लिया है क्योंकि पहले अलग-अलग सम्बन्ध था, अब एक में सर्व सम्बन्ध हैं। तो सहज सर्व स्नेह एक से हो गया। इसलिए हर एक कहता है मेरा बाबा। तो स्नेह किससे होता है? मेरे से। सभी कहते हैं ना मेरा बाबा, या दादियों का बाबा है? महारथियों का बाबा है? सबका बाबा है ना! आज के दिन कितने बार हर एक बच्चे ने दिल से कहा – मेरा बाबा, मेरा बाबा। सभी ने मेरा-बाबा, मेरा-बाबा कह रूह-रूहान की ना! सारा दिन क्या किया? स्नेह के पुष्प बापदादा को अर्पित किये। बापदादा के पास स्नेह के पुष्प बहुत बढ़िया से बढ़िया पहुँच रहे थे। स्नेह तो बहुत अच्छा रहा, अब बाप कहते हैं स्नेह का स्वरूप साकार में इमर्ज करो। वह है समान बनना। अभी यह समान बनने का लक्ष्य तो सभी के पास है, अभी साकार में लक्षण दिखाई दें। जिस भी बच्चे को देखें, जो भी मिले, सम्बन्ध-सम्पर्क में आये, उन्हीं को यह लक्षण दिखाई दें कि यह जैसे परमात्मा बाप, ब्रह्मा बाप के गुण हैं, वह बच्चों के सूरत और मूरत से दिखाई दें। अनुभव करें कि इनके नयन, इनके बोल, इन्हीं की वृत्ति वा वायब्रेशन न्यारे हैं। मधुबन में आते हैं तो बाप ब्रह्मा के कर्म साकार में

होने के कारण भूमि में तपस्या, कर्म और त्याग के वायब्रेशन समाये हुए होने के कारण यहाँ सहज अनुभव करते हैं कि यह संसार न्यारा है क्योंकि ब्रह्मा बाप और विशेष बच्चों के वायब्रेशन से वायुमण्डल अलौकिक बना हुआ है। ऐसे ही जो बच्चा जहाँ भी रहता है, जो भी कर्मक्षेत्र है, हर एक बच्चे से बाप समान गुण, कर्म और श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमण्डल अनुभव में आये, इसको बापदादा कहते हैं – बाप समान बनना। जो अभी तक संकल्प है बाप समान बनना ही है, वह संकल्प अभी चेहरे और चलन से दिखाई दे। जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये उनके दिल से यह आवाज निकले कि यह आत्मायें बाप समान हैं। (बीच-बीच में खांसी आ रही है) आज माइक खराब है, मिलना तो है ना। यह भी तो माइक है ना, यह माइक नहीं चलता तो यह माइक भी काम का नहीं। कोई हर्जा नहीं यह भी मौसम का फल है।

तो बापदादा अभी सभी बच्चों से यह प्रत्यक्षता चाहते हैं। जैसे वाणी द्वारा प्रत्यक्षता करते हो तो वाणी का प्रभाव पड़ता है, उससे भी ज़्यादा प्रभाव गुण और कर्म का पड़ता है। हर एक बच्चे के नयनों से यह अनुभव हो कि इन्हीं के नयनों में कोई विशेषता है। साधारण नहीं अनुभव करें। अलौकिक हैं। उन्हीं के मन में क्वेश्चन उठे कि यह कैसे बनें, कहाँ से बनें। स्वयं ही सोचें और पूछें कि बनाने वाला कौन? जैसे आजकल के समय में भी कोई बढ़िया चीज़ देखते हो तो दिल में उठता है कि यह बनाने वाला कौन है! ऐसे अपने बाप समान बनने की स्थिति द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करो। आजकल मैजारिटी आत्मायें सोचती हैं कि क्या इस साकार सृष्टि में, इस वातावरण में रहते हुए ऐसे भी कोई आत्मायें बन सकती हैं! तो आप उन्हीं को यह प्रत्यक्ष में दिखाओ कि बन सकता है और हम बने हैं। आजकल प्रत्यक्ष प्रमाण को ज़्यादा मानते हैं। सुनने से भी ज़्यादा देखने चाहते हैं तो चारों ओर कितने बच्चे हैं, हर एक बच्चा बाप समान प्रत्यक्ष प्रमाण बन जाए तो मानने और जानने में मेहनत नहीं लगेगी। फिर आपकी प्रजा बहुत जल्दी-जल्दी तैयार हो जायेगी। मेहनत, समय कम और प्रत्यक्ष प्रमाण अनुभव करने से जैसे प्रजा का स्टैम्प लगता जायेगा। राजे-रानी

तो आप बनने वाले हैं ना!

बापदादा एक बात का फिर से अटेन्शन दिला रहे हैं कि वर्तमान वायुमण्डल के अनुसार मन में, दिल से अभी वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। बापदादा ने हर बच्चे को चाहे प्रवृत्ति में है, चाहे सेवाकेन्द्र पर है, चाहे कहाँ भी रहते हैं, स्थूल साधन हर एक को दिये हैं, ऐसा कोई बच्चा नहीं है जिसके पास खाना, पीना, रहना इसके साधन नहीं हो। जो बेहद के वैराग्य की वृत्ति में रहते हुए आवश्यक साधन चाहिए, वह सबके पास हैं। अगर कोई को कमी है तो वह उसके अपने अलबेले-पन या आलस्य के कारण है। बाकी ड्रामानुसार बापदादा जानते हैं कि आवश्यक साधन सबके पास हैं। जो आवश्यक साधन हैं वह तो चलने ही हैं। लेकिन कहाँ-कहाँ आवश्यकता से भी ज़्यादा साधन हैं। साधना कम है और साधन का प्रयोग करना या कराना ज़्यादा है। इसलिए बापदादा आज बाप समान बनने के दिवस पर विशेष अण्डरलाइन करा रहे हैं – कि साधनों के प्रयोग का अनुभव बहुत किया, जो किया वह भी बहुत अच्छा किया, अब साधना को बढ़ाना अर्थात् बेहद की वैराग्य वृत्ति को लाना। ब्रह्मा बाप को देखा लास्ट घड़ी तक बच्चों को साधन बहुत दिये लेकिन स्वयं साधनों के प्रयोग से दूर रहे। होते हुए दूर रहना – उसे कहेंगे वैराग्य। लेकिन कुछ है ही नहीं और कहे कि हमको तो वैराग्य है, हम तो हैं ही वैरागी, तो वह कैसे होगा। वह तो बात ही अलग है। सब कुछ होते हुए नॉलेज और विश्व-कल्याण की भावना से, बाप को, स्वयं को प्रत्यक्ष करने की भावना से अभी साधनों के बजाए बेहद की वैराग्य वृत्ति हो। जैसे स्थापना के आदि में साधन कम नहीं थे, लेकिन बेहद के वैराग्य वृत्ति की भट्टी में पड़े हुए थे। यह 14 वर्ष जो तपस्या की, यह बेहद के वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल था। बापदादा ने अभी साधन बहुत दिये हैं, साधनों की अभी कोई कमी नहीं है लेकिन होते हुए बेहद का वैराग्य हो। विश्व की आत्माओं के कल्याण के प्रति भी इस समय इस विधि की आवश्यकता है क्योंकि चारों ओर इच्छायें बढ़ रही हैं, इच्छाओं के वश आत्मायें परेशान हैं, चाहे पद्मपति भी हैं लेकिन इच्छाओं से वह भी परेशान हैं। वायुमण्डल में आत्माओं की परेशानी

का विशेष कारण यह हृद की इच्छायें हैं। अब आप अपने बेहद की वैराग्य वृत्ति द्वारा उन आत्माओं में भी वैराग्य वृत्ति फैलाओ। आपके वैराग्य वृत्ति के वायुमण्डल के बिना आत्मायें सुखी, शान्त बन नहीं सकती, परेशानी से छूट नहीं सकती। आप वृक्ष की जड़ हैं, ब्राह्मणों का स्थान वृक्ष में कहाँ दिखाया है? जड़ में दिखाया है ना! तो आप फाउण्डेशन हैं, आपकी लहर विश्व में फैलेगी इसलिए बापदादा विशेष साकार में ब्रह्मा बाप समान बनने की विधि, वैराग्य वृत्ति की तरफ विशेष अटेन्शन दिला रहा है। हर एक से अनुभव हो कि यह साधनों वश नहीं, साधना में रहने वाले हैं। होते हुए वैराग्य वृत्ति हो। आवश्यक साधन यूज करो लेकिन जितना हो सकता है उतना दिल के वैराग्य वृत्ति से, साधनों के वशीभूत होकर नहीं। अभी साधना का वायुमण्डल चारों ओर बनाओ। समय समीप के प्रमाण अभी सच्ची तपस्या वा साधना है ही बेहद का वैराग्य। सेवा का विस्तार इस वर्ष में बहुत किया। इस वर्ष चारों ओर बड़े-बड़े प्रोग्राम किये और सेवा से सहयोगी आत्मायें भी बहुत बने हैं, समीप आये हैं, सम्पर्क में आये हैं, लेकिन क्या सिर्फ सहयोगी बनाना है? यहाँ तक रखना है क्या? सहयोगी आत्मायें अच्छी-अच्छी हैं, अब उन सहयोगी क्वालिटी वाली आत्माओं को और सम्बन्ध में लाओ। अनुभव कराओ, जिससे सहयोगी से सहज योगी बन जाएँ। इसके लिए एक तो साधना का वायुमण्डल और दूसरा बेहद की वैराग्य वृत्ति का वायुमण्डल हो तो इससे सहज सहयोगी सहज योगी बन जायेंगे। उन्हीं की सेवा भले करते रहो लेकिन साथ में साधना, तपस्या का वायुमण्डल आवश्यक है।

अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टर्चिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पावरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है। बाप समान बनना है तो पहले बेहद की वैराग्य वृत्ति धारण करो। यही ब्रह्मा

बाप की अन्त तक विशेषता देखी। न वैभव में लगाव रहा, न बच्चों में.. सबसे वैराग्य वृत्ति। तो आज के दिन का बाप समान बनने का पाठ पक्का करना। बस ब्रह्मा बाप समान बनना ही है। ऐसा दृढ़ निश्चय अवश्य आगे बढ़ायेगा।

बाकी सभी बच्चे सोचते होंगे कि आज प्राइज़ मिलना है। अभी देखो चारों ओर के बच्चे तो हैं नहीं, तो सिर्फ आप आये हुए को प्राइज़ दें! प्राइज़ तो है ही परन्तु बापदादा कहते हैं – हर एक सारे वर्ष में सर्व बन्धनों से मुक्त रहे! लिस्ट निकाली थी ना। कितने बंधन निकाले थे? (18) अच्छा तो 18 ही बंधन से स्वप्न तक भी मुक्त, स्वप्न में भी कोई बंधन की रूप-रेखा न आई हो, इसको कहा जाता है – मुक्त। तो हाथ तो बहुत सहज उठाते हैं, बाबा को पता है हाथ उठवायेंगे तो बहुत प्रकार के हाथ उठेंगे लेकिन फिर भी बापदादा कहते हैं कि जिस चेकिंग से आप हाथ उठाने के लिए तैयार हैं, बापदादा को पता है कितने तैयार हैं, कौन तैयार हैं। अभी भी और अन्तर्मुखी बन सूक्ष्म चेकिंग करो। अच्छा कोई को दुःख नहीं दिया, लेकिन जितना सुख का खाता जमा होना चाहिए उतना हुआ? नाराज़ नहीं किया, राज़ी किया? व्यर्थ नहीं सोचा लेकिन व्यर्थ के जगह पर श्रेष्ठ संकल्प इतने ही जमा हुए? सबके प्रति शुभ भावना रखी लेकिन शुभ भावना का रेसपान्स मिला? वह चाहे बदले नहीं बदले, लेकिन आप उससे सन्तुष्ट रहे? ऐसी सूक्ष्म चेकिंग फिर भी अपने आपकी करो और अगर ऐसी सूक्ष्म चेकिंग में पास हो तो बहुत अच्छे हो। ऐसी पास आत्मायें अपने-अपने सेवाकेन्द्र पर चारों ओर सेन्टर पर अपना नाम, रिज़ल्ट सब बातों में कितना परसेन्ट रहा? सुख कितने को दिया? राज़ी कितने रहे? नाराज़ को राज़ी किया? कि जो राज़ी है उसको ही राज़ी किया? तो यह सब चेकिंग करके पास विद् ऑनर हैं, तो अपना नाम, अपने टीचर को लिख करके दो और टीचर जो छोटे-छोटे सेन्टर हैं, उन्हीं के ऊपर जो बड़ी बहिनें मुकरर हैं, वह उन्हीं से पास करावें फिर ज़ोन के पास सब नाम आवें। ज़ोन के पास सब नाम इकट्ठे करो फिर वह ज़ोन वाली ऐसी पास वाली आत्माओं के

नाम मधुबन में भेजें, फिर इनाम मिलेगा। फिर ताली बजायेंगे। जो ऐसे पास विद् ऑनर होंगे उसको तो प्राइज़ मिलना ही चाहिए, वह मिलेगी लेकिन सच्ची दिल से, सच्चे बाप को अपना सच्चा पोतामेल बताना और प्राइज़ लेना क्योंकि बापदादा के पास सबके संकल्प तो पहुँचते हैं ना। तो जो हाथ उठाने वाले हैं ना, उसमें बापदादा ने देखा कि मिक्स बहुत हैं और बिना समझ के हाथ उठा देते हैं। तो कोई मिक्स वाले हाथ उठा दें और बापदादा प्राइज़ नहीं देवे तो अच्छा नहीं है। इसलिए कायदे-प्रमाण अगर पास विद् ऑनर हैं तो उसकी तो बहुत-बहुत महिमा है और ऐसे का नाम तो सभी ब्राह्मणों में प्रसिद्ध होना चाहिए ना। अच्छा है, मैजारिटी ने मेहनत अच्छी की है, अटेन्शन रहा है परन्तु सम्पूर्ण की बात है। जिन्होंने मेहनत की है, उन्हीं को आज प्राइज़ के बजाए मुबारक दे रहे हैं। फिर प्राइज़ देंगे। ठीक है ना!

अच्छा – दूसरी बात थी कि सभी ज़ोन वालों को मार्च तक माइक लाना है, सभी को याद तो है। तो पहले मार्च में बापदादा ज़ोन वालों से रिजल्ट लेंगे, किसने और किस क्वालिटी का माइक तैयार किया। आप कहेंगे यह माइक है लेकिन होगा छोटा माइक। समझो जिस नगर का माइक निकला, उसी नगर का माइक है, ज़ोन का भी नहीं है, तो उसको छोटा माइक कहेंगे ना। तो ऐसा कौन सा माइक तैयार किया है, वह बापदादा पूछेंगे। अगर कोई ज़ोन वाले लास्ट में नहीं भी आ सके तो अपनी चिटकी लास्ट टर्न में लिखकर भेजें, आवें तो ज़ोन के हेड्स को निमन्त्रण है। अगर नहीं आ सकते हैं, न आने का कोई ऐसा कारण है तो अपनी चिटकी भेज देंगे तो भी चलेगा। फिर बापदादा उन सभी माइक के संगठन का प्रोग्राम रखेंगे, जिसमें सभी तरफ के माइक स्टेज पर आयेंगे। उन्हीं का विशेष प्रोग्राम रखेंगे, ऐसे नहीं कि मार्च में माइक भी लेकर आवें। माइक को वहाँ ही रहने दो, आप आना। जो माइक है उन्हीं को तो धूमधाम से मंगायेंगे ना। उन्हीं की स्वागत भी तो अच्छी करनी है ना। तो उन्हीं का स्पेशल प्रोग्राम रखेंगे और फिर प्राइज़ देंगे नम्बरवन, टू, थ्री। ठीक है। ज़ोन वालों को स्पष्ट



हुआ ? मार्च में रिज़ल्ट लानी है। अच्छा।

अभी क्या याद रखा ? कौन सी बात को अण्डरलाइन किया ? बेहद का वैराग्य। अभी आत्माओं को इच्छाओं से बचाओ। बिचारे बहुत दुःखी हैं। बहुत परेशान हैं। तो अभी रहमदिल बनो। रहम की लहर बेहद के वैराग्य वृत्ति द्वारा फैलाओ। अभी सभी ऊँचे ते ऊँचे परमधाम में बाप के साथ बैठ सर्व आत्माओं को रहम की दृष्टि दो। वायब्रेशन फैलाओ। फैला सकते हैं ना ? तो बस अभी परमधाम में बाप के साथ बैठ जाओ। वहाँ से यह बेहद के रहम का वायुमण्डल फैलाओ। (बापदादा ने झिल कराई) अच्छा।

चारों ओर के सर्व अति स्नेही बच्चों को, सर्व चारों ओर के साधना करने वाले श्रेष्ठ आत्माओं को, बापदादा को सारे दिन में बहुत प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे दिल के गीत सुनाने वाले, रूह-रूहान करने वाले शक्तियों के, गुणों के वरदान से झोली भरने वाले, बापदादा को सबके गीत, खुशी के गीत स्नेह के गीत, रूहानी नशे के गीत, मीठी-मीठी बातें बहुत-बहुत दिल को लुभाने वाली सुनाई दी और बापदादा भी सुनने और मिलने में लवलीन थे। तो ऐसे दिल के सच्चे, दिल के आवाज़ सुनाने वाले बच्चे महान हैं और सदा महान रहेंगे, ऐसे मीठे-मीठे बच्चे सदा बेहद के वैराग्य वृत्ति को अपनाने वाले, दृढ़ निश्चय बुद्धि बच्चों को बापदादा एक के बदले पद्मगुणा रिटर्न स्नेह दे रहे हैं। दिलाराम के दिल पर रहने वाले सभी बच्चों को बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

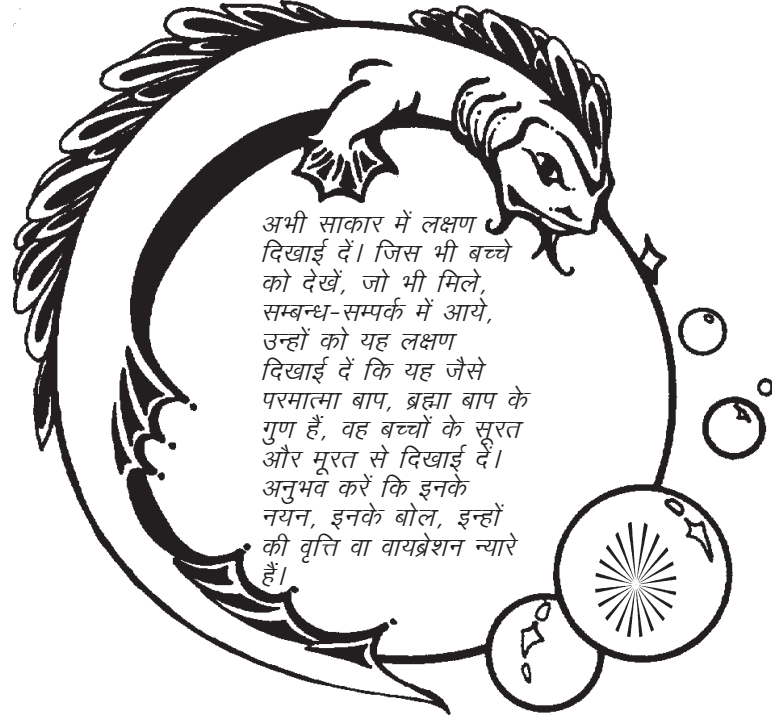
जो बाहर भी सुन रहे हैं उन्हीं को भी बाबा देख रहे हैं और बापदादा दूर नहीं देखते हैं लेकिन सभी तरफ़ के बच्चों को सम्मुख देख यादप्यार और मुबारक और याद सौगात वा याद पत्रों का रिटर्न कर रहे हैं कि सदा उड़ती कला में उड़ने वाले बच्चे सदा आबाद हैं, सदा ही आबाद रहेंगे। अच्छा।

### दादी जी से

आज के दिन को स्मृति दिवस कहते हैं, तो स्मृति में क्या रहा ? समर्थ का वरदान याद रहा ? आपको तो डायरेक्ट विल कर ली ना ? अच्छा पार्ट बजा रही

हो। बापदादा देख रहे हैं, वृद्धि भी बहुत हो रही है और यह वृद्धि भी सेवा का सबूत ही है। तो बच्चों की सेवा को देख बापदादा तो खुश होते हैं। बाप गुप्त हो गये, अभी सभी के मुख पर क्या है? अभी तो सभी के मुख पर सामने बच्चे ही हैं। ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छा काम कर रही हैं तो अभी बच्चे प्रत्यक्ष हुए। अभी बाप प्रत्यक्ष होना है। बाप ने पहले बच्चों को प्रत्यक्ष किया। अभी बाप प्रत्यक्ष होंगे तो फिर तो समाप्ति हो जायेगी ना। इसलिए पहले बच्चे प्रत्यक्ष हो रहे हैं फिर बाप होंगे। फिर भी बहुत अच्छा, सेवा का उमंग-उत्साह अच्छा है, अभी निर्विघ्न बनाने की ज़्यादा लहर फैलाओ। यह भी लहर फैल जायेगी तो सहज हो जायेगा।

आज सभी तरफ अच्छा वायुमण्डल था (सभी स्नेह में डूबे हुए थे) दिन का महत्त्व होता है। इस दिन का भी महत्त्व है। (दादी जानकी ने खास याद दिया है)



## ‘शिव अवतरण और एकानामी के अवतार’

आज त्रिमूर्ति शिव बाप अपने अति प्यारे-प्यारे, मीठे-मीठे शालिग्राम बच्चों से मिलने आये हैं। आज के दिन शिव और शालिग्रामों का विशेष दिवस है। तो बाप को बच्चों से मिलकर खुशी हो रही है कि बच्चों का बर्थ डे बाप मनाने आये हैं और बच्चे कहते हैं कि हम बाप का बर्थ डे मनाने आये हैं। बाप को भी खुशी है, बच्चों को भी खुशी है। क्यों? क्योंकि यह बर्थ डे सारे कल्प में न्यारा और प्यारा है। सारे कल्प में ऐसा बर्थ डे किसका भी मनाया नहीं जाता है। बाप और बच्चों का साथ में एक ही समय पर बर्थ डे हो – यह और किसी भी समय वा किसी का भी होता ही नहीं है। तो पहले बापदादा बच्चों को पद्म-पद्म-पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। बच्चों की मुबारक तो अमृतवेले से बहुत-बहुत दिल से, दिल की मुबारक बापदादा के पास पहुँच ही गई है। बापदादा इतने सब बच्चों को, शालिग्रामों को देख यही खुशी के गीत दिल में गाते हैं कि वाह सिकीलधे बच्चे वाह! वाह लाड़ले बच्चे वाह! वाह अलौकिक जन्म, अलौकिक बर्थ डे मनाने वाले वाह! तो बापदादा हर बच्चे के लिए वाह-वाह का गीत गा रहे हैं क्योंकि इतनी सारी विश्व की आत्माओं में से कितने थोड़े से आप बच्चे ऐसे पद्मापद्म भाग्यवान बने हो और आगे भी भाग्यवान रहेंगे। अमर भाग्यवान आधा कल्प रहेंगे। एक जन्म का वरदान नहीं है, अनेक जन्म अमर वरदानी बन गये। ऐसे बच्चों को अपना स्व-मान कितना स्मृति में रहता है? इस अलौकिक बर्थ डे वा अलौकिक जन्म का अखुट वर्सा बाप जन्मते ही बच्चों को देते हैं। जन्मते ही स्मृति का श्रेष्ठ तिलक हर बच्चे को बाप ने दे दिया है। तिलक लगा हुआ है ना? ब्राह्मण जीवन है तो तिलक भी अविनाशी है। ब्राह्मणों के मस्तक में तिलक, यह श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है।

तो आप सभी और चारों ओर के बच्चे दूर बैठे भी बहुत उमंग-उत्साह से यह न्यारा और प्यारा बर्थ डे मना रहे हैं। मना रहे हैं ना? सभी खुश हो रहे

हैं कि बाप हमारा बर्थ डे मना रहे हैं और हम बाप का मना रहे हैं। कितनी खुशी है! खुशी को माप सकते हैं? माप है? इस दुनिया में, इस अलौकिक खुशी का कोई माप करने का साधन निकला ही नहीं है। अगर आपको कहें कि सागर जितनी खुशी है? तो क्या कहेंगे? कि सागर तो कुछ भी नहीं है। अच्छा आकाश जितनी है? तो आकाश से भी ऊँचे आपका घर है, आपका सूक्ष्मवतन है। इसलिए कोई माप-तौल निकला नहीं है, न निकल सकता है। इतनी खुशी है तो एक हाथ की ताली बजाओ। (सभी ने ताली बजाई) खुशी है – इसमें तो सभी ने हाथ उठाया, मुबारक हो। अभी दूसरा प्रश्न है, (समझ गये हैं तो हँस रहे हैं) बापदादा हर बच्चे को सदा खिला हुआ रूहानी गुलाब देखने चाहते हैं। आधा खिला हुआ नहीं, सदा और फुल। खिला हुआ फूल कितना प्यारा लगता है। देखने में ही मजा आता है। और थोड़ा भी मुरझा जाता है तो क्या करते हो? किनारे कर लेते हो। बापदादा किनारे नहीं करते लेकिन वह स्वयं ही किनारे हो जाता है।

आज तो मनाने का दिन है ना! मुरली तो सदा सुनते ही हो। आज तो खूब खुशी में मन से नाचो और गाओ। मन से नाचो, पाँव से नहीं। पाँव से नाचना शुरू करेंगे तो घमसान हो जायेगा। लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे नाच भी रहे हैं और मीठे-मीठे बाप की महिमा और अपने अलौकिक महिमा के गीत भी बहुत गा रहे हैं। बाबा को आपके मन का आवाज़ पहुँच रहा है। सब देशों से आवाज़ आ रहा है। बाप का आवाज़ सुन भी रहे हैं और बाप भी उन्हीं का आवाज़ सुन रहा है। बाप भी कहते हैं – हे विश्व के बहुत-बहुत स्नेही बच्चे खूब नाचो, खूब गाओ और काम ही क्या है! ब्राह्मणों का काम क्या है? योग लगाना भी क्या है? मेहनत है क्या? योग का अर्थ ही है आत्मा और परमात्मा का मिलन। तो मिलन में क्या होता है? खुशी में नाचते हैं। बाप की महिमा के मीठे-मीठे गीत दिल ऑटोमेटिक गाती है। ब्राह्मणों का काम ही यह है, गाते रहो और नाचते रहो। यह मुश्किल है? नाचना-गाना मुश्किल है? नहीं है ना। जिसको मुश्किल लगता है वह हाथ उठाओ। आजकल तो नाचने-गाने की सीज़न है, तो

आपको भी क्या करना है ? नाचो, गाओ। सहज है ना ? सहज है तो काँध तो हिलाओ। मुश्किल तो नहीं है ना ? जान-बूझ कर सहज से हटकर मुश्किल में चले जाते हो। मुश्किल है नहीं, बहुत सहज है क्योंकि बाप जानते हैं कि आधाकल्प मुश्किल की जीवन व्यतीत की है इसलिए इस समय सहज है। मुश्किल वाला कोई है ? कभी-कभी मुश्किल लगता है ? जैसे कोई चलते-चलते रास्ता भूलकर और रास्ते में चला जाए तो मुश्किल लगेगा ना। ज्ञान का मार्ग मुश्किल नहीं है। ब्राह्मण जीवन मुश्किल नहीं है ! ब्राह्मण के बजाए क्षत्रिय बन जाते हो तो क्षत्रिय का काम ही होता है लड़ना, झगड़ना... वह तो मुश्किल ही होगा ना ! युद्ध करना तो मुश्किल होता है, मौज मनाना सहज होता है।

डबल फ़ारेनर्स मौज मनाने वाले हो ना ! एक हाथ की ताली बजाओ। मौज में हो ? वहाँ जाकर मूँझ तो नहीं जायेंगे ? देखो, आज के शिव जयन्ति का महत्त्व दो बातों का है। एक इस दिवस पर व्रत रखते हैं। डबल फ़ारेनर्स को तो मनाना ही नहीं पड़ा। भारत में ही मनाते हैं तो इस दिवस का महत्त्व है – व्रत रखना और दूसरा है जागरण करना। तो आप सबने व्रत भी ले लिया है ना ? पक्का व्रत लिया है ? या कभी कच्चा, कभी पक्का ? कच्ची चीज़ अच्छी लगती है ? पका हुआ सब अच्छा लगता है ना ! तो व्रत क्या लिया है ? बापदादा ने सबसे पहला व्रत कौन-सा दिया ? जब स्मृति का तिलक लगा तो पहला-पहला व्रत कौन सा लिया ? याद है ना ? सम्पूर्ण पवित्र भव। बाप ने कहा और बच्चों ने धारण किया। तो पवित्रता का व्रत सिर्फ ब्रह्मचर्य का व्रत नहीं लेकिन ब्रह्मा समान हर संकल्प, बोल और कर्म में पवित्रता – इसको कहा जाता है ब्रह्मचारी और ब्रह्माचारी। हर बोल में पवित्रता का वायब्रेशन समाया हुआ हो। हर संकल्प में पवित्रता का महत्त्व हो। हर कर्म में, कर्म और योग अर्थात् कर्मयोगी का अनुभव हो – इसको कहा जाता है ब्रह्माचारी। ब्रह्मा बाप को देखा हर बोल महावाक्य, साधारण वाक्य नहीं क्योंकि आपका जन्म ही साधारण नहीं, अलौकिक है। अलौकिकता का अर्थ ही है पवित्रता। तो रोज़ रात को अपना टीचर बनकर चेक करो और अपने को परसेन्टेज़ के प्रमाण अपने आपको ही

माक्स दो। बनना 100 परसेन्ट है। लेकिन हर रोज़ अपने आपको देखो, दूसरे को नहीं देखना। बापदादा ने देखा है कि अपने बजाए दूसरों को देखने लग जाते हैं, वह सहज होता है। तो अपने को देखो कि आज के दिन संकल्प, बोल और कर्म में कितनी परसेन्ट रही ?

आप लोगों ने इस वर्ष चारों ओर क्या सन्देश दिया है ? परिवर्तन सभी फ़ंक्शन में सुनाया है। जहाँ तहाँ भाषण किया है तो परिवर्तन के टॉपिक पर बहुत अच्छे-अच्छे भाषण किये हैं। तो इस वर्ष चारों ओर सेवा में औरों को भी परिवर्तन का लक्ष्य बहुत अच्छे धूमधाम से दिया है, बापदादा खुश हैं। तो आप अपने लिए भी यह चेक करो कि हर रोज़, हर दिन क्या परसेन्टेज में परिवर्तन हुआ ? परिवर्तन चढ़ती कला का हो, गिरती कला का नहीं। बापदादा भी हर एक बच्चे का चार्ट देखता है। आप सोचेंगे सभी बच्चों का देखते हैं या कोई विशेष का देखते हैं ! बापदादा सभी बच्चों का चार्ट कभी-कभी देखते हैं, रोज़ नहीं देखते लेकिन कभी-कभी देखते हैं – चाहे वह लास्ट है, चाहे फ़ास्ट है। सभी हँस रहे हैं तो बापदादा ही सुना देवे कि क्या चार्ट है ? आज का दिन मनाने का है ना, इसलिए नहीं सुनाते हैं। लेकिन आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि आज के दिन का जो महत्त्व है व्रत लेना अर्थात् दृढ़ संकल्प लेना। व्रत को कभी सच्चे भक्त तोड़ते नहीं हैं। तो बापदादा बच्चों को फिर से आगे के लिए इशारा दे रहे हैं कि अभी भी पहला फ़ाउण्डेशन संकल्प शक्ति कभी-कभी वेस्ट ज़्यादा और निगेटिव वेस्ट से थोड़ा कम है। इस संकल्प शक्ति का उपयोग जितना स्व प्रति वा विश्व के प्रति करना है उतना और बढ़ाओ क्योंकि संकल्प के आधार पर बोल और कर्म होता है तो संकल्प शक्ति का परिवर्तन करो। जो वेस्ट और निगेटिव जाता है, उसे परिवर्तन कर विश्व-कल्याण के प्रति कार्य में लगाओ। बापदादा संकल्प के खज़ाने को सर्व श्रेष्ठ मानते हैं इसलिए इस संकल्प के खज़ाने प्रति एकानामी के अवतार बनो। आज के दिन को अवतरण का दिन कहा जाता है तो बापदादा की सभी बच्चों प्रति यही शुभ आशा है कि आज के दिन शिव अवतरण के साथ आप सभी एकानामी के

अवतार बनो। संकल्प में एकानामी की अर्थात् वेस्ट से बचाया, तो और सभी खज़ाने ऑटोमेटिक बच जायेंगे। तो 99 में क्या होगा ? 99 चालू हो गया। पहले सोच रहे थे, 99 में क्या होगा ? कुछ हुआ क्या ? फरवरी तो आ गई। अगर होगा भी तो आपको क्या है ? आपको कोई नुकसान है ? भय है ? क्या होगा, उसका भय होता है ? आपके लिए अच्छा ही होगा। दुनिया के लिए कुछ भी हो जाए आपको निर्भय और हर्षितमुख हो खेल देखना है। खेल में खून भी दिखाते हैं तो प्यार भी दिखाते हैं। लड़ाई भी दिखाते हैं तो अच्छी बातें भी दिखाते हैं। फिर खेल में भय होता है क्या ? क्या होगा, क्या हुआ, क्या हुआ ? यह सोचते हैं क्या ? मजे से बैठकर देखते हैं। तो यह भी बेहद का खेल है। अगर जरा भी भय वा घबराहट होगी - क्या हो गया, क्या हो गया... ऐसा तो होना नहीं चाहिए, क्यों हो गया तो ऐसी स्थिति वाले को इफ़ेक्ट आयेगा। अच्छे में अच्छी स्थिति और गड़बड़ की स्थिति में खुद भी गड़बड़ में आ जायेंगे, हलचल में आ जायेंगे। इसलिए 99 हो या 2 हज़ार हो, आपको क्या है ? होने दो खेल। मजे से देखो। घबराना नहीं। हाय यह क्या हो गया ! संकल्प में भी नहीं आये। सब पूछते हैं 99 में क्या होगा ? कुछ होगा, नहीं होगा। बापदादा कहते हैं आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफ़ाई करो, उसको लम्बा-लम्बा झाड़ू दिया है, सफ़ा करो। तो घबराते क्यों हो ? आपके आर्डर से वह सफ़ाई करायेगी तो आप क्यों हलचल में आते हो ? आपने ही तो आर्डर दिया है। तो अचल-अडोल बन मन और बुद्धि को बिल्कुल शक्तिशाली बनाए अचल-अडोल स्थिति में स्थित हो जाओ। प्रकृति का खेल देखते चलो। घबराना नहीं। आप अलौकिक हो, साधारण नहीं हो। साधारण लोग हलचल में आयेंगे, घबरायेंगे। अलौकिक, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें खेल देखते अपने विश्व-कल्याण के कार्य में बिज़ी रहेंगे। अगर मन और बुद्धि को फ्री रखा तो घबरायेंगे। मन और बुद्धि से लाइट हाउस हो, लाइट फैलायेंगे, इस कार्य में बिज़ी रहेंगे तो बिज़ी आत्मा को भय नहीं होगा, साक्षीपन होगा; और कोई भी हलचल हो अपने बुद्धि को सदा ही क्लीयर रखना, क्यों-क्या में बुद्धि

को बिज़ी वा भरा हुआ नहीं रखना, खाली रखना। एक बाप और मैं.. तब समय अनुसार चाहे पत्र, टेलीफोन, टी.वी. वा आपके जो भी साधन निकले हैं, वह नहीं भी पहुँचे तो बापदादा का डायरेक्शन क्लीयर कैच होगा। यह साइंस के साधन कभी भी आधार नहीं बनाना। यूज़ करो लेकिन साधनों के आधार पर अपनी जीवन को नहीं बनाओ। कभी-कभी साइंस के साधन होते हुए भी यूज़ नहीं कर सकेंगे। इसलिए साइलेन्स का साधन – जहाँ भी होंगे, जैसी भी परिस्थिति होगी बहुत स्पष्ट और बहुत जल्दी काम में आयेगा। लेकिन अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना। समझा। आप ही तो आह्वान कर रहे हैं कि जल्दी-जल्दी गोल्डन एज़ आ जावे। तो गोल्डन एज़ में यह सफ़ाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफ़ाई करेगी।

तो आज के दिन संकल्प नहीं लेकिन दृढ़ संकल्प क्या लिया ? एकानामी का अवतार बनना ही है। चाहे संकल्प में, चाहे बोल में, चाहे साधारण कर्म की एकानामी। और दूसरी बात – सदा बुद्धि को क्लीयर रखना। जिसको दूसरे शब्दों में बापदादा कहते हैं – सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। सच्ची दिल, साफ़ दिल। वर्तमान समय में सच्चाई और सफ़ाई की आवश्यकता है। दिल में भी सच्चाई, परिवार में भी सच्चाई और बाप से भी सच्चाई। समझा। आज के दिन कहना नहीं था लेकिन कह दिया। बापदादा का प्यार है ना तो ज़रा भी कमज़ोरी बापदादा देख नहीं सकते। बापदादा सदा हर बच्चे को अपने जैसा सम्पूर्ण देखने चाहते हैं।

चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्त्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या करेंगे ? सेफ़्टी का साधन कौन-सा है ? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी वा आत्म-अभिमानि बना लो तो हलचल में अचल रह सकते हो। इसमें टाइम तो नहीं लगेगा ? क्या होगा ? अभी ट्रायल करो – एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो ? (ड्रिल) इसको कहा जाता



है - "साधना"। अच्छा।

देश-विदेश के चारों ओर के बाप के लव में लवलीन आत्माओं को, सदा स्वयं को ब्रह्माचारी स्थिति में स्थित करने वाले स्नेही, सहयोगी बच्चों को, सदा एकनामी और एकानामी को कार्य में लगाने वाले हिम्मतवान बच्चों को, सदा हलचल में भी अचल रहने वाले निर्भय आत्माओं को, सदा मौज मनाने वाले, बाप के समीप रहने वाले बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

बच्चों के सब कार्ड मिले। बापदादा देख रहे हैं, सभी ने जन्म दिन के कार्ड और फ़ारेन वालों ने प्यार के दिवस के कार्ड भेजे हैं, तो प्यार का सागर बाप सभी बच्चों को शिवरात्रि के साथ-साथ प्यार के लवलीन दिवस की भी मुबारक दे रहे हैं। मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

### दादियों से

फ़ारेन भी अच्छा आगे बढ़ रहा है। अभी बचपन पूरा हुआ। अभी अच्छे अनुभवी हो गये हैं। पहले जो बचपन होता था ना वह अभी मैजारिटी का खत्म हो गया है। भारत में भी वृद्धि अच्छी है। 9 लाख चाहिए, वह तो बन रहे हैं ना। माला भी बन रही है तो 9 लाख भी बन रहे हैं। दोनों ही बन रहे हैं। लास्ट सो फ़ास्ट भी कोई-कोई आ रहे हैं। अच्छा है। बापदादा तो लास्ट नम्बर वाले पर भी खुश हैं। बाप को तो पहचान लिया है।

### झण्डा लहराने के पश्चात

#### बापदादा के उच्चारें हुए मधुर महावाक्य

आज बाप और बच्चों के दोनों के बर्थ डे की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। जैसे अभी सभी खूब खुशी में नाच रहे हैं, ऐसे अमर भव! जैसे यह झण्डा लहराया और पुष्पों की वर्षा हुई, ऐसे ही सदा अपने दिल में बाप की याद का यह झण्डा लहराता रहे। नीचे ऊपर नहीं हो। कभी भी याद का झण्डा नीचे नहीं हो, ऊँचा हो। तो दुनिया वाले अहो भाग्य, अहो बाप यह पुष्पों की वर्षा दुआओं के साथ आप सबके ऊपर करेंगे। तो एक तरफ़ याद का झण्डा

लहराओ, दूसरे तरफ़ जो आज बाप का सन्देश मिला – एकानामी का अवतार बनो, तो ऐसे दृढ़ संकल्प का झण्डा अपने दिल में लहराना। और साथ में सेवा के प्रति सदा चारों ओर सर्व आत्माओं के आगे बाप को प्रत्यक्ष करने का झण्डा लहराना। यह है झण्डे का महत्त्व। एक दिन आयेगा, आया-कि-आया जब सब लोग बाप की महिमा करते, प्रत्यक्षता के झण्डे के नीचे आयेंगे। सहारा लेंगे और आप सहारेदाता बाप के बच्चे, मास्टर सहारेदाता होंगे। आया-कि-आया। अच्छा।

चारों ओर के देश, शहर, गाँव, चारों ओर के बच्चों को, सबसे पहले छोटे-छोटे गाँव वाले बच्चों को याद-प्यार और मुबारक। साथ में आप सबको भी मुबारक। कितनी मुबारक दें। जितना आप धारण कर सकते हो उससे भी ज़्यादा मुबारक।

बापदादा हर बच्चे को सदा  
खिला हुआ रूहानी गुलाब देखने  
चाहते हैं। आधा खिला हुआ नहीं,  
सदा और फूल। खिला हुआ फूल  
कितना प्यारा लगता है। देखने में  
ही मज़ा आता है। और थोड़ा भी  
मुरझा जाता है तो क्या करते हो?

## होली मनाना अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र धनकर संस्कार मिलन मनाना

आज बापदादा चारों ओर के अपने होलीएस्ट और हाइएस्ट बच्चों को देख रहे हैं। विश्व में सबसे हाइएस्ट ऊँचे-ते-ऊँचे श्रेष्ठ आत्मायें आप बच्चों के सिवाए और कोई है? क्योंकि आप सभी ऊँचे-ते-ऊँचे बाप के बच्चे हैं। सारे कल्प में चक्र लगाकर देखो तो सबसे ऊँचे मर्तबे वाले और कोई नज़र आते हैं? राज्य-अधिकारी स्वरूप में भी आपसे ऊँचे राज्य अधिकारी बने हैं? फिर पूजन और गायन में देखो जितनी पूजा विधिपूर्वक आप आत्माओं की होती है उससे ज़्यादा और किसी की है? वण्डरफुल राज़ ड्रामा का कितना श्रेष्ठ है जो आप स्वयं चैतन्य स्वरूप में, इस समय अपने पूज्य स्वरूप को नॉलेज के द्वारा जानते भी हो और देखते भी हो। एक तरफ़ आप चैतन्य आत्मायें हैं और दूसरे तरफ़ आपके जड़ चित्र पूज्य रूप में हैं। अपने पूज्य स्वरूप को देख रहे हो ना? जड़ रूप में भी हो और चैतन्य रूप में भी हो। तो वण्डरफुल खेल है ना! और राज्य के हिसाब से भी सारे कल्प में निर्विघ्न, अखण्ड-अटल राज्य एक आप आत्माओं का ही चलता है। राज़े तो बहुत बनते हैं लेकिन आप विश्वराज़न वा विश्वराजन की रॉयल फ़ैमिली सबसे श्रेष्ठ है। तो राज्य में भी हाइएस्ट, पूज्य रूप में भी हाइएस्ट और अब संगम पर परमात्म-वर्से के अधिकारी, परमात्म-मिलन के अधिकारी, परमात्म-प्यार के अधिकारी, परमात्म-परिवार की आत्मायें और कोई बनती हैं? आप ही बने हो ना? बन गये हो या बन रहे हो? बन भी गये और अब तो वर्सा लेकर सम्पन्न बन बाप के साथ-साथ अपने घर में भी चलने वाले हैं। संगम का सुख, संगमयुग की प्राप्तियाँ, संगमयुग का समय सुहाना लगता है ना! बहुत प्यारा लगता है। राज्य के समय से भी संगम का समय प्यारा लगता है ना? प्यारा है या जल्दी जाने चाहते हो? फिर पूछते क्यों

हो कि बाबा विनाश कब होगा ? सोचते हो ना – पता नहीं विनाश कब होगा ? क्या होगा ? हम कहाँ होंगे ? बापदादा कहते हैं जहाँ भी होंगे – याद में होंगे, बाप के साथ होंगे। साकार में या आकार में साथ होंगे तो कुछ नहीं होगा। साकार में कहानी सुनाई है ना। बिल्ली के पूंगरे भट्टी में होते हुए भी सेफ़ रहे ना ! या जल गये ? सब सेफ़ रहे। तो आप परमात्म बच्चे जो साथ होंगे वह सेफ़ रहेंगे। अगर और कहाँ बुद्धि होगी तो कुछ-न-कुछ सेक लगेगा, कुछ-न-कुछ प्रभाव होगा। साथ में कम्बाइण्ड होंगे, एक सेकण्ड भी अकेले नहीं होंगे तो सेफ़ रहेंगे। कभी-कभी कामकाज़ या सेवा में अकेले अनुभव करते हो ? क्या करें अकेले हैं, बहुत काम है ! फिर थक भी जाते हैं। तो बाप को क्यों नहीं साथी बनाते ! दो भुजा वालों को साथी बना देते, हज़ार भुजा वाले को क्यों नहीं साथी बनाते। कौन ज़्यादा सहयोग देगा ? हज़ार भुजा वाला या दो भुजा वाला ?

संगमयुग पर ब्रह्माकुमार वा ब्रह्माकुमारी अकेले नहीं हो सकते। सिर्फ़ जब सेवा में, कर्मयोग में बहुत बिज़ी हो जाते हो ना तो साथ भी भूल जाते हो और फिर थक जाते हो। फिर कहते हो थक गये, अभी क्या करें ! थको नहीं, जब बापदादा आपको सदा साथ देने के लिए आये हैं, परमधाम छोड़कर क्यों आये हैं ? सोते, जागते, कर्म करते, सेवा करते, साथ देने के लिए ही तो आये हैं। ब्रह्मा बाप भी आप सबको सहयोग देने के लिए अव्यक्त बनें। व्यक्त रूप से अव्यक्त रूप में सहयोग देने की रफ़्तार बहुत तीव्र है, इसलिए ब्रह्मा बाप ने भी अपना वतन चेंज कर दिया। तो शिव बाप और ब्रह्मा बाप दोनों हर समय आप सबको सहयोग देने के लिए सदा हाज़िर हैं। आपने सोचा बाबा और सहयोग अनुभव करेंगे। अगर सेवा, सेवा, सेवा सिर्फ़ वही याद है, बाप को किनारे बैठ देखने के लिए अलग कर देते हो, तो बाप भी साक्षी होकर देखते हैं, देखें कहाँ तक अकेले करते हैं। फिर भी आने तो यहाँ ही हैं। तो साथ नहीं छोड़ो। अपने अधिकार और प्रेम की सूक्ष्म रस्सी से बाँधकर रखो। ढीला छोड़ देते हो। स्नेह को ढीला कर देते हो, अधिकार को थोड़ा सा स्मृति से किनारा कर देते हो। तो ऐसे नहीं करना। जब सर्वशक्तिवान साथ का आफ़र कर रहा

है तो ऐसी आफ़र सारे कल्प में मिलेगी ? नहीं मिलेगी ना ? तो बापदादा भी साक्षी होकर देखते हैं, अच्छा देखें कहाँ तक अकेले करते हैं!

तो संगमयुग के सुख और सुहेज़ों को इमर्ज रखो। बुद्धि बिज़ी रहती है ना तो बिजी होने के कारण स्मृति मर्ज हो जाती है। आप सोचो सारे दिन में किसी से भी पूछें कि बाप याद रहता है या बाप की याद भूलती है ? तो क्या कहेंगे ? नहीं। यह तो राइट है कि याद रहता है लेकिन इमर्ज रूप में रहता है या मर्ज रहता है ? स्थिति क्या होती है ? इमर्ज रूप की स्थिति या मर्ज रूप की स्थिति, इसमें क्या अन्तर है ? इमर्ज रूप में याद क्यों नहीं रखते ? इमर्ज रूप का नशा शक्ति, सहयोग, सफलता बहुत बड़ी है। याद तो भूल नहीं सकते क्योंकि एक जन्म का नाता नहीं है, चाहे शिव बाप सतयुग में साथ नहीं होगा लेकिन नाता तो यही रहेगा ना ! भूल नहीं सकता है, यह राइट है। हाँ कोई विघ्न के वश हो जाते हो तो भूल भी जाता है लेकिन वैसे जब नेचरल रूप में रहते हो तो भूलता नहीं है लेकिन मर्ज रहता है। इसलिए बापदादा कहते हैं – बार-बार चेक करो कि साथ का अनुभव मर्ज रूप में है या इमर्ज रूप में ? प्यार तो है ही। प्यार टूट सकता है ? नहीं टूट सकता है ना ? तो प्यार जब टूट नहीं सकता तो प्यार का फ़ायदा तो उठाओ। फ़ायदा उठाने का तरीका सीखो।

बापदादा देखते हैं प्यार ने ही बाप का बनाया है। प्यार ही मधुबन निवासी बनाता है। चाहे अपने स्थान पर कैसे भी रहें, कितना भी मेहनत करें लेकिन फ़िर भी मधुबन में पहुँच जाते हैं। बापदादा जानते हैं, देखते हैं, कई बच्चों को कलियुगी सरकमस्टांश होने के कारण टिकिट लेना भी मुश्किल है परन्तु प्यार पहुँचा ही देता है। ऐसे है ना ? प्यार में पहुँच जाते हैं लेकिन सरकमस्टांश तो दिनप्रतिदिन बढ़ते ही जाते हैं। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी तो होता ही है। लेकिन स्थूल सहयोग भी कहाँ-न-कहाँ कैसे भी मिल जाता है। चाहे डबल फ़ारेनर्स हों, चाहे भारतवासी, सबको यह बाप का प्यार सरकमस्टांश की दीवार पार करा लेता है। ऐसे है ना ? अपने-अपने सेन्टर्स पर देखो तो ऐसे बच्चे भी हैं जो यहाँ से जाते हैं, सोचते हैं पता नहीं दूसरे वर्ष आ सकेंगे या नहीं आ

सकेंगे लेकिन फिर भी पहुंच जाते हैं। यह है प्यार का सबूत। अच्छा।

आज होली मनाई? मना ली होली? बापदादा तो होली मनाने वाले होलीहंसों को देख रहे हैं। सभी बच्चों का एक ही टाइटल है होलीएस्ट। द्वापर से लेकर किसी भी धर्मात्मा या महात्मा ने सर्व को होलीएस्ट नहीं बनाया है। स्वयं बनते हैं लेकिन अपने फ़ालोअर्स को, साथियों को होलीएस्ट, पवित्र नहीं बनाते और यहाँ पवित्रता ब्राह्मण जीवन का मुख्य आधार है। पढ़ाई भी क्या है? आपका स्लोगन भी है “पवित्र बनो-योगी बनो”। स्लोगन है ना? पवित्रता ही महानता है। पवित्रता ही योगी जीवन का आधार है। कभी-कभी बच्चे अनुभव करते हैं कि अगर चलते-चलते मन्सा में भी अपवित्रता अर्थात् वेस्ट वा निगेटिव, परचितन के संकल्प चलते हैं तो कितना भी योग पावरफुल चाहते हैं, लेकिन होता नहीं है क्योंकि ज़रा भी अंशमात्र संकल्प में भी किसी प्रकार की अपवित्रता है तो जहाँ अपवित्रता का अंश है वहाँ पवित्र बाप की याद जो है, जैसा है वैसे नहीं आ सकती। जैसे दिन और रात इक्का नहीं होता। इसीलिए बापदादा वर्तमान समय पवित्रता के ऊपर बार-बार अटेंशन दिलाते हैं। कुछ समय पहले बापदादा सिर्फ कर्म में अपवित्रता के लिए इशारा देते थे लेकिन अभी समय सम्पूर्णता के समीप आ रहा है इसलिए मन्सा में भी अपवित्रता का अंश धोखा दे देगा। तो मन्सा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क सबमें पवित्रता अति आवश्यक है। मन्सा को हल्का नहीं करना क्योंकि मन्सा बाहर से दिखाई नहीं देती है लेकिन मन्सा धोखा बहुत देती है। ब्राह्मण जीवन का जो आन्तरिक वर्सा सदा सुख स्वरूप, शान्त स्वरूप, मन की सन्तुष्टता है, उसका अनुभव करने के लिए मन्सा की पवित्रता चाहिए। बाहर के साधनों द्वारा या सेवा द्वारा अपने आपको खुश करना – यह भी अपने को धोखा देना है।

बापदादा देखते हैं कभी-कभी बच्चे अपने को इसी आधार पर अच्छा समझ, खुश समझ धोखा दे देते हैं, दे भी रहे हैं। दे देते हैं और दे भी रहे हैं, यह भी एक गुह्य राज़ है। क्या होता है, बाप दाता है, दाता के बच्चे हैं, तो सेवा युक्तियुक्त नहीं भी है, मिक्स है, कुछ याद और कुछ बाहर के साधनों

वा खुशी के आधार पर है, दिल के आधार पर नहीं लेकिन दिमाग के आधार पर सेवा करते हैं तो सेवा का प्रत्यक्ष फल उन्हीं को भी मिलता है; क्योंकि बाप दाता है और वह उसी में ही खुश रहते हैं कि वाह हमको तो फल मिल गया, हमारी अच्छी सेवा है। लेकिन वह मन की सन्तुष्टता सदाकाल नहीं रहती और आत्मा योगयुक्त पावरफुल याद का अनुभव नहीं कर सकती, उससे वंचित रह जाते। बाकी कुछ भी नहीं मिलता हो, ऐसा नहीं है। कुछ-न-कुछ मिलता है लेकिन जमा नहीं होता। कमाया, खाया और खत्म। इसलिए यह भी अटेन्शन रखना। सेवा बहुत अच्छी कर रहे हैं, फल भी अच्छा मिल गया, तो खाया और खत्म। जमा क्या हुआ? अच्छी सेवा की, अच्छी रिज़ल्ट निकली, लेकिन वह सेवा का फल मिला, जमा नहीं होता। इसलिए जमा करने की विधि है - मन्सा, वाचा, कर्मणा - पवित्रता। फाउण्डेशन पवित्रता है। सेवा में भी फाउण्डेशन पवित्रता है। स्वच्छ हो, साफ़ हो। और कोई भी भाव मिक्स नहीं हो। भाव में भी पवित्रता, भावना में भी पवित्रता। होली का अर्थ ही है - पवित्रता। अपवित्रता को जलाना। इसीलिए पहले जलाते हैं फिर मनाते हैं और फिर पवित्र बन संस्कार मिलन मनाते हैं। तो होली का अर्थ ही है - जलाना, मनाना। बाहर वाले तो गले मिलते हैं लेकिन यहाँ संस्कार मिलन, यही मंगल मिलन है। तो ऐसी होली मनाई या सिर्फ़ डांस कर ली? गुलाबजल डाल दिया? वह भी अच्छा है ख़ूब मनाओ। बापदादा खुश होते हैं गुलाबजल भले डालो, डांस भले करो लेकिन सदा डांस करो। सिर्फ़ 5-10 मिनट की डांस नहीं। एक-दो में गुणों का वायब्रेशन फ़ैलाना - यह गुलाबजल डालना है। और जलाने को तो आप जानते ही हो, क्या जलाना है! अभी तक भी जलाते रहते हो। हर वर्ष हाथ उठाकर जाते हैं, बस दृढ़ संकल्प हो गया। बापदादा खुश होते हैं, हिम्मत तो रखते हैं। तो हिम्मत पर बापदादा मुबारक भी देते हैं। हिम्मत रखना भी पहला कदम है। लेकिन बापदादा की शुभ आशा क्या है? समय की डेट नहीं देखो। 2 हजार में होगा, 2001 में होगा, 2005 में होगा, यह नहीं सोचो। चलो एवररेडी नहीं भी बनो इसको भी बापदादा छोड़ देते हैं, लेकिन सोचो बहुतकाल

के संस्कार तो चाहिए ना! आप लोग ही सुनाते हो कि बहुतकाल का पुरुषार्थ, बहुतकाल के राज्य-अधिकारी बनाता है। अगर समय आने पर दृढ़ संकल्प किया, तो वह बहुतकाल हुआ या अल्पकाल हुआ? किसमें गिनती होगा? अल्पकाल में होगा ना! तो अविनाशी बाप से वर्सा क्या लिया? अल्पकाल का। यह अच्छा लगता है? नहीं लगता है ना! तो बहुतकाल का अभ्यास चाहिए, कितना काल है वह नहीं सोचो, जितना बहुतकाल का अभ्यास होगा, उतना अन्त में भी धोखा नहीं खायेंगे। बहुतकाल का अभ्यास नहीं तो अभी के बहुतकाल के सुख, बहुतकाल की श्रेष्ठ स्थिति के अनुभव से भी वंचित हो जाते हैं। इसलिए क्या करना है? बहुतकाल करना है? अगर किसी के भी बुद्धि में डेट का इन्तजार हो तो इन्तज़ार नहीं करना, इन्तज़ाम करो। बहुतकाल का इन्तज़ाम करो। डेट को भी आपको लाना है। समय तो अभी भी एवररेडी है, कल भी हो सकता है लेकिन समय आपके लिए रुका हुआ है। आप सम्पन्न बनो तो समय का पर्दा अवश्य हटना ही है। आपके रोकने से रुका हुआ है। राज्य-अधिकारी तो तैयार हो ना? तख्त तो खाली नहीं रहना चाहिए ना! क्या अकेला विश्वराजन तख्त पर बैठेगा! इससे शोभा होगी क्या? रॉयल फ़ैमिली चाहिए, प्रजा चाहिए, सब चाहिए। सिर्फ विश्वराजन तख्त पर बैठ जाए, देखता रहे कहाँ गई मेरी रॉयल फ़ैमिली। इसलिए बापदादा की एक ही शुभ आशा है कि सब बच्चे चाहे नये हैं, चाहे पुराने हैं, जो भी अपने को ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहलाते हैं, चाहे मधुबन निवासी, चाहे विदेश निवासी, चाहे भारत निवासी - हर एक बच्चा बहुतकाल का अभ्यास कर बहुतकाल के अधिकारी बनें। कभी-कभी के नहीं। पसन्द है? एक हाथ की ताली बजाओ। पीछे वाले होशियार हैं, अटेन्शन से सुन रहे हैं। बापदादा पीछे वालों को अपने आगे देख रहा है। आगे वाले तो हैं ही आगे। (मेडीटेशन हाल में बैठकर मुरली सुन रहे हैं) नीचे वाले बापदादा के सिर के ताज होकर बैठे हैं। वह भी ताली बजा रहे हैं। नीचे वालों को त्याग का भाग्य तो मिलना ही है। आपको सम्मुख बैठने का भाग्य है और उन्हीं के त्याग का भाग्य जमा हो रहा है। अच्छा बापदादा की एक



आश सुनी! पसन्द है ना! अभी अगले वर्ष क्या देखेंगे? ऐसे ही फिर भी हाथ उठायेँगे! हाथ भले उठाओ, दो-दो उठाओ परन्तु मन का हाथ भी उठाओ। दृढ़ संकल्प का हाथ सदा के लिए उठाओ।

बापदादा एक-एक बच्चे के मस्तक में सम्पूर्ण पवित्रता की चमकती हुई मणी देखने चाहते हैं। नयनों में पवित्रता की झलक, पवित्रता के दो नयनों के तारे, रूहानियत से चमकते हुए देखने चाहते हैं। बोल में मधुरता, विशेषता, अमूल्य बोल सुनने चाहते हैं। कर्म में सन्तुष्टता, निर्माणता सदा देखने चाहते हैं। भावना में – सदा शुभ भावना और भाव में सदा आत्मिक भाव, भाई-भाई का भाव। सदा आपके मस्तक से लाइट का, फ़रिश्ते पन का ताज दिखाई दे। दिखाई देने का मतलब है अनुभव हो। ऐसे सजे सजाये मूर्त देखने चाहते हैं। और ऐसी मूर्त ही श्रेष्ठ पूज्य बनेगी। वह तो आपके जड़ चित्र बनायेँगे लेकिन बाप चैतन्य चित्र देखने चाहते हैं।

अच्छा – चारों ओर के सदा बापदादा के साथ रहने वाले, समीप के सदा के साथी, सदा बहुतकाल के पुरुषार्थ द्वारा बहुतकाल का संगमयुगी अधिकार और भविष्य राज्य-अधिकार प्राप्त करने वाले अति सेन्सीबुल आत्मायें, सदा अपने को शक्तियों, गुणों से सजे-सजाये रखने वाले, बाप की आशाओं के दीपक आत्मायें, सदा स्वयं को होलीएस्ट और हाइएस्ट स्थिति में स्थित रखने वाले बाप समान अति स्नेही आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सर्व विदेश वा देश में दूर बैठे हुए भी सम्मुख अनुभव करने वालों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार।

### दादी जी से

बापदादा आपको सदा मुबारकें बहुत देते हैं। तन की दुआयें भी देते हैं, मन का साथ भी देते हैं और सेवा के साथी भी बनते हैं। ऐसे अनुभव होता है? तन की दुआयें भी बहुत मिलती हैं। यह दवाई बहुत अच्छी मिल रही है। बाकी हिसाब-किताब तो ब्रह्मा बाप ने भी चुक्त्तू किया तो सबको करना है। सब सूली

से कांटा हो जाता है, बाकी दुआयें बहुत मिलती हैं। परिवार द्वारा भी तो बापदादा द्वारा भी। अमृतवेले से लेकर रात तक बापदादा दुआओं से मालिश करते रहते हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? आप नहीं चल रही हैं, चलाने वाला चला रहा है, इसीलिए अथक हैं। अच्छा।

स्पेशल दुआयें हैं। (दादी जानकी से) स्पेशल दुआयें हैं ना? सब निमित्त बनने वालों को स्पेशल दुआयें मिलती हैं। आप फारेनर्स से क्या चाहती हो? (सभी बापदादा के गले में पिरो जायें) यह तो बहुत कुछ चाहती हैं, आप भी बहुत कुछ करते हो ना! यह प्यार की पालना दे रही हैं, इतना अटेन्शन रखना - यही दिल का प्यार है। जिससे प्यार होता है ना उसकी कमी देख नहीं सकते। (बापदादा ने दादी, दादी जानकी को साथ में बिठाया)

यह दादियाँ जो हैं ना - यह बाप के बड़े भाई हैं। तो भाई तो साथ बैठते हैं ना? अच्छी मेहनत नहीं लेकिन मुहब्बत अच्छी करते हैं। बापदादा भी निमित्त बनने वालों को और जो करने वाले हैं उन्हीं को देखकर खुश होते हैं। आप भी कम नहीं हो। और यह भी कम नहीं हैं। अच्छा।

(शान्तिवन से यहाँ अच्छा लगता है) लेकिन अनेक वंचित रह जायेंगे। सभी भाई-बहनों का ख्याल तो रखना है ना। यह तो होली का चांस आपको मिल गया है।

### विदेशी भाई-बहनों से

पहला चांस डबल फ़ारेनर्स को मिला है। देखो सबका डबल फ़ारेनर्स से कितना प्यार है। पहला चांस आपको ही मिला है। अच्छा है, बापदादा सेवा में वृद्धि का उमंग-उत्साह देख खुश होता है। बापदादा वतन में भी आपकी मीटिंग्स, प्लैन, प्रोग्राम, रूह-रूहान सब कुछ देखते हैं। अच्छा चांस भी मिलता है। हर साल फ़ारेन में इतना संगठन तो नहीं हो सकता है। यहाँ एक तो कितना बेहद का बड़ा परिवार है, यह देखने को मिलता है, सबका परिचय हो जाता है। और दूसरा पावरफुल पालना भी मिलती है, प्यार भी मिलता है। और बीच-

बीच में थोड़ी सी स्ट्रिक की आँख दिखाना भी ज़रूरी है। अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन को अन्डरलाइन हो जाता है। ऐसे अनुभव करते हो जो मधुबन में पालना मिलती है तो अण्डरलाइन तो होती है ना! और समीप भी आते हैं।

बापदादा को डबल फ़ारेनर्स की, मैजारिटी की एक विशेषता वर्तमान समय की बहुत अच्छी लगती है, एक तो जो बार-बार समर्थिंग-समर्थिंग कहते थे ना, वह अभी मैजारिटी का कम है। पहले तो छोटी-छोटी बात में कहते थे समर्थिंग, समटाइम। लेकिन अभी अच्छे हिम्मत वाले बन आगे बढ़ रहे हैं। बचपन पूरा हुआ है, कहाँ-कहाँ पुरुषार्थ में यूथ हैं और कहाँ-कहाँ वानप्रस्थ के नज़दीक हैं। तो यूथ वालों को अभी भी थोड़ी लहर आती है। आयु में यूथ नहीं, पुरुषार्थ में। फिर भी पहले और अभी में अन्तर है। अभी नॉलेज़फुल हो गये हैं। समझ गये हैं – क्या करना है, कैसे चलना है, इसके नॉलेज़फुल बन गये हैं। बाकी क्या रहा है? अभी पावरफुल बनना है, उसमें अण्डरलाइन करो। सेन्टर भी बढ़ते जाते हैं। हिम्मत रखकर सेन्टर खोलते अच्छे हैं। जो सभी सेन्टर्स सम्भालते हैं, सेन्टर पर रहते हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा – तो सेन्टर पर रहने वाले वा निमित्त बनने वाले कभी थकावट होती है? थोड़ी-थोड़ी होती है? थोड़ा टाइम होती है फिर ठीक हो जाते हैं। अच्छा है, देखो आप लोगों को एक विशेष लिफ़्ट है सेवा की। भारत में तो पहले ट्रेनिंग करते हैं फिर ट्रायल पर रहती फिर टीचर बनती और आप लोग सीधा ही सेन्टर इन्चार्ज बन जाते। तो यह चांस तो अच्छा है ना। डबल काम करते हैं। हिम्मत के कारण आगे बढ़ रहे हो और बढ़ते रहेंगे। जॉब भी करते, सेन्टर भी सम्भालते, थक कर आते फिर थोड़े टाइम में अपने को रिफ़ेश कर फिर सेन्टर सम्भालते, यह देख करके बापदादा को कभी-कभी दिल में विशेष प्यार आता है। डबल बिजी हो गये ना। लेकिन डबल कार्य करने का डबल फायदा भी होता है। सेवा करना अर्थात् अपने पुण्य का खाता जमा करना और जितना निःस्वार्थ, युक्तियुक्त सेवा भाव से सेवा करते हैं, उतनी पुण्य की पूंजी जमा करते हो। और वही पुण्य की पूंजी, खजाना साथ में ले जायेंगे। उस पुण्य की कमाई आधाकल्प की कमाई हो जायेगी। तो

पुण्य आत्मायें अच्छी हो। मैं निमित्त सेवाधारी पुण्य आत्मा हूँ, यह स्मृति छोटे-छोटे पापों से मुक्त कर देती है। तो सदा चेक करो कि आज के दिन मन्सा द्वारा या सेवा द्वारा कितने पुण्य जमा किये ? और पुण्य के आधार से छोटी-छोटी बातें कितनी समाप्त हो गई ? खर्च कितना हुआ और बचत कितनी हुई ? अगर बार-बार विघ्न आते हैं और उसको मिटाने के लिए गुण और शक्तियों का खर्च करते हैं तो वह कितना हुआ ? और योगयुक्त अवस्था से बाप को साथी बनाकर सेवा करने में पुण्य का खाता कितना जमा हुआ ? सबसे बड़े से बड़े मल्टीमल्युनर आप हो। एक दिन में देखो कितनी कमाई करते हो ? इतनी कमाई न फारेन में कोई कर सकता है, न भारत में कर सकता है। तो मल्टी मल्टी लगाते जाओ जैसे हिसाब में बिन्दी लगाओ तो बढ़ जाता है ना। एक के आगे एक बिन्दी लगाओ तो 10 हो जाता है और दो बिन्दी लगाओ तो 100 हो जाता है और लगाओ तो हजार हो जाता है, बिन्दी की कमाल है। तो आप ऐसे बिन्दी लगाते जाओ, मल्टी मल्टी मल्टी-मिल्युनर हो जाओ।

अच्छा - सब ठीक हो ? पाण्डव ठीक हैं ? बहुत अच्छा। बापदादा को भी नाज़ है कि विश्व में जहाँ भी जाओ बाप के बच्चे हैं। आप लोगों को भी नशा होता है ना जिस देश में भी जाओ तो क्या कहेंगे ? हमारा घर है। ऐसे लगता है ना कितने घर हो गये हैं आपके ? इतने घर किसके होंगे ? सभी कहते हो बाबा का घर है, बाबा के घर में जा रहे हैं। कितने लाडले हो गये हो। इसीलिए सदा खुश। स्वप्न में भी दुःख की लहर नहीं आवे। स्वप्न भी आवें तो खुशी के। उदासी के नहीं, थकावट के नहीं, मूँझने वाले नहीं। खुशी के। तो ऐसे है ? ऐसे खुश रहो जो आपका खुशी का चेहरा देख रोने वाले भी खुश हो जाएं। ऐसी खुशी है ना ? रोने वाले को हँसा सकते हो ना ! चेहरा बदली नहीं हो। कभी ऐसा, कभी ऐसा नहीं। सदा मुस्कराता रहे। अच्छा - कितने परसेन्ट रिफ्रेश हुए ? 100 परसेन्ट या 90 परसेन्ट ? 101 परसेन्ट अच्छा।

अच्छा - दूसरे वर्ष जब आयेंगे तो 101 होगा या नीचे जायेगा या ऊपर जायेगा ? सभी का ऊपर जायेगा ! जो समझते हैं देखेंगे, जाने के बाद पता

पड़ेगा। चाहते तो ऐसे हैं लेकिन देखेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसे कोई है। फर्स्ट टाइम वाले हाथ उठाओ। अच्छा...

### दूसरा ग्रुप — आबू निवासी, सेवाधारी, हॉस्पिटल निवासी तथा पार्टियों से

सभी अपने श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित होते हैं? सदा हर्षित। कभी-कभी तो नहीं? सभी कहते हैं बाप मिला सब कुछ मिला। जब सब मिला, तो जहाँ सर्व प्राप्ति है, वहाँ सदा खुशी है ही। ऐसे है ना? खुशी कम तब होती है जब कोई अप्राप्ति है। तो कोई अप्राप्ति है क्या? तो सदा खुश। खुशी अपनी खुराक है। तो खुराक को कोई छोड़ता है क्या? तो सदा खुश रहने वाले, औरों को भी खुशी बांटते हैं। जब भी आपको कोई देखे तो खुशी की झलक दिखाई दे। ऐसे अनुभव करते हो? बापदादा सदा हर बच्चे को खुशनसीब की नज़र से देखते हैं। खुशनसीब हैं और खुशमिजाज हैं। कभी चेहरा बदली तो नहीं होता? थोड़ा सा सोच में, थोड़ा सा कनफ्युज़ चेहरा तो नहीं होता है ना! या थोड़ा-थोड़ा हो जाते हो? कनफ्युज़ होते हो? हाँ हाँ कह रहे हो? कभी-कभी होते हैं। कभी-कभी भी नहीं। बाप के बच्चे सदा एकरस रहते हैं। कभी किस रस में, कभी किस रस में, नहीं। एकरस, सदा खुश। ठीक है ना? अभी नहीं बदलना। आज के दिन इसको जला दो। खत्म। कुछ भी हो, बाप साथ है, मूँझने की क्या बात है। कनफ्युज़ होने की क्या बात है। बाप के साथ का सहयोग लो, अकेले समझते हो तो मौज के बजाए मूँझ जाते हो। तो मूँझना नहीं। ठीक है ना? अभी भी मूँझेंगे। (नहीं) अभी नहीं मूँझ रहे हो, मौज में हो इसलिए कहते हो कि नहीं मूँझेंगे! कुछ भी हो जाए लेकिन मौज नहीं जाए। ठीक है ना या मौज चली जायेगी? मौज नहीं जानी चाहिए। सेवा का बल है तो उस बल को कार्य में लगाओ। सिर्फ सेवा नहीं करो लेकिन सेवा का बल जो बाप से मिलता है, उसको काम में लगाओ। सिर्फ सेवा कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं तो थक जाते हो, मूँझ भी जाते हो लेकिन बाप के साथ का अनुभव, जहाँ बाप है वहाँ मौज

ही मौज है। तो साथ को इमर्ज करो, सुनाया ना - याद करते हो लेकिन साथ को यूज नहीं करते, इसीलिए मूँझ जाते हो। संगमयुग मौजों का युग है या मूँझने का युग है? मौज का है तो फिर मूँझते क्यों हो? अभी अपने जीवन की डिक्शनरी से मूँझना शब्द निकाल दो। निकाल लिया? पक्का। या थोड़ा-थोड़ा दिखाई देगा? एकदम मिटा दो। परमात्मा के बच्चे और मौज में नहीं रहे तो और कौन रहेगा और कोई है क्या? तो सदा मौज ही मौज है। सभी अपनी ड्यूटी पर खुश हो? या थोड़ा-थोड़ा ड्यूटी में खिंटखिंट है? कुछ भी हो जाए, यह पेपर पास करना है। बात नहीं है, पेपर है। तो पेपर पास करने में खुशी होती है ना। क्लास आगे बढ़ते हैं ना! तो बात हो गई, समस्या आ गई यह नहीं सोचो। पेपर आया पास हुआ, मौज मनाओ। जब बच्चे पेपर पास करके आते हैं तो कितने मौज में होते हैं, मूँझते हैं क्या! यह पेपर तो आयेंगे। पेपर ही अनुभव में आगे बढ़ाते हैं, इसलिए सदा मौज में रहने वाले। सेवाधारी नहीं लेकिन मौज में रहने वाले। सदा यह अपना टाइटल याद करो। हॉस्पिटल के सेवाधारी हैं, नहीं, मौज में रहने वाले सेवाधारी हैं। अच्छा।

डाक्टरस तो मौज में रहते हो ना? पेशेन्ट को मौज दिलाने वाले। बहुत अच्छा। (बापदादा सभी से हाथ उठवाकर मिल रहे हैं।)

सभी बहुत-बहुत पुण्य का खाता जमा कर रहे हो। वैरायटी गुलदस्ता सबसे प्यारा लगता है। वैरायटी की सदा शोभा होती है, सुन्दरता होती है, इसलिए प्यारा लगता है। तो स्थान अनेक हैं लेकिन हैं सब एक। एक ही लक्ष्य है, एक ही मत है और एक ही बाप है, एक ही परिवार है और अवस्था भी एकरस। एकरस है ना? और रस में नहीं जाना, माया खा जायेगी। इसलिए एकरस रहना। माया को भी आपसे प्यार है ना। 63 जन्मों का प्यार है। लेकिन आप जानते हो कि माया से प्यार रखना है या बाप से? तो जहाँ बाप होगा वहाँ माया नहीं आयेगी। माया भाग जायेगी, हिम्मत ही नहीं होगी बाप के नजदीक आने की। कोई भी परिस्थिति आवे तो दिल से बाबा कहा, परिस्थिति भागी। अनुभव है ना! भगाना आता है या बिठाना आता है? उसको बिठाना नहीं। भगाओ, दूर

से भगाओ। आ जावे फिर निकालने की मेहनत करो, वह भी नहीं करना। दूर से ही भगाओ। बाप का हाथ पकड़ लो तो देखेगी यह तो बाप का हाथ पकड़ा हुआ है तो भाग जायेगी। तो सदा मायाजीत। ठीक है ना! देखो आज नजदीक में तो बैठे हो ना। चांस तो मिला ना। अभी तो नहीं कहेंगे हमको तो कभी चांस नहीं मिला। मिल गया ना? बड़ा परिवार है तो बांटकर मिलता है। अच्छा तो सब खुशराजी। बापदादा का शब्द याद है ना - सदा। कभी कभी वाले नहीं, सदा। हॉस्पिटल वाले भी अच्छी मेहनत कर रहे हैं। हॉस्पिटल का कार्य भी बढ़ रहा है। अच्छा।

### तीसरा गृप - मधुबन निवासी भाई बहिनों से

मधुबन निवासी अर्थात् कर्म में मधुरता और वृत्ति में बेहद का वैराग्य। वन में क्या होता है? बेहद का वैराग्य होता है ना! तो मधुबन निवासी अर्थात् एकस्ट्रा गिफ्ट के अधिकारी। गिफ्ट है ना! कितने निश्चित हो। अपनी ड्यूटी बजाई और मौज में रहे। मदोगरी करनी है, जिज्ञासुओं को सम्भालना है, इससे तो फ्री हैं ना! ज़्यादा में ज़्यादा 8 घण्टा ड्यूटी। कम ही है। इतफ़ाक कभी एक्स्ट्रा देनी पड़ती होगी। लेकिन और ज़िम्मेवारी तो नहीं है ना। चलो बिजली वाले को बिजली की ज़िम्मेवारी या जो भी ड्यूटी है, एक ही ड्यूटी है ना। अनेक तो नहीं है। तो 8 घण्टा तो ड्यूटी के लिए बापदादा ने दिया है, कभी 12 घण्टा भी हो जाता होगा, तो भी 8 घण्टा आराम, अच्छा 12 घण्टा ड्यूटी तो भी 4 घण्टा तो बचता है। 12 घण्टा से ज़्यादा तो ड्यूटी होगी नहीं। 12 घण्टे में तो सारा दिन आ गया। फिर कभी रात को करनी पड़ती होगी तो दिन में हल्का होगा। तो कम से कम 4 घण्टा पावरफुल योग रहता है? निरन्तर याद तो है ही लेकिन पावरफुल याद वह कम से कम 4 घण्टे है? तो मधुबन निवासियों को स्पेशल अटेन्शन रखना है कि हमें चारों ओर पावरफुल याद के वायब्रेशन फैलाने हैं क्योंकि आप ऊँचे-ते-ऊँचे स्थान पर बैठे हो। स्थान तो ऊँचा है ना! इससे ऊँचा तो कोई है नहीं। तो ऊँची टावर जो होती है, वह क्या करती है?

सकाश देती है ना! लाइट माइट फैलाते हैं ना। तो कम से कम 4 घण्टे ऐसे समझो हम ऊंचे ते ऊंचे स्थान पर बैठ विश्व को लाइट और माइट दे रहा हूँ। यह तो आपको अच्छी तरह से अनुभव है कि मधुबन का वायब्रेशन चाहे कमजोरी का, चाहे पावर का - दोनों ही बहुत जल्दी फैलता है। अनुभव है ना! मधुबन में सुई भी गिरती है तो वह आवाज भी पहुंचता है क्योंकि मधुबन निवासियों की तरफ सबका अटेन्शन होता है। मधुबन वाले समझो विजय प्राप्त करने और कराने के निमित्त हैं। मधुबन की महिमा कितनी सुनते हो! मधुबन के गीत भी गाते हो ना। तो मधुबन के दीवारों की महिमा है या मधुबन निवासियों की महिमा है! किसकी महिमा है? आप सबकी। तो ऐसे अपनी जिम्मेवारी समझो। सिर्फ अपना काम किया, ड्यूटी पूरी की यह जिम्मेवारी नहीं। मधुबन का वायुमण्डल चारों ओर वायुमण्डल बनाता है। बापदादा को खुशी है कि आपस में संगठन बनाकर उन्नति के प्लैन वा रूहरिहान करते हैं। यह बहुत अच्छा है, इसको छोड़ना नहीं। संगठन में लाभ होता है और सारा दिन समझो कर्मणा किया, थोड़ा समय भी आपस में उन्नति की रूहरिहान करने से चेंज हो जाते हैं। उमंग-उत्साह भी बढ़ता है। तो बापदादा को यह अच्छा लगता है, जो ग्रुप बनाकर बैठते हो उसको हल्का नहीं करो और पावरफुल बनाओ। मिस भी नहीं करना चाहिए। आप समझो हमारे में तो ताकत है, हमने तो सब कुछ कर लिया है, नहीं। सहयोग देना भी सेवा है। बैठने की जरूरत नहीं हो, लेकिन बैठना - यह बहुत सेवा है। बापदादा ने समाचार सुना है, अच्छा है। इसको और बढ़ाओ। मुरली तो सुनते हो लेकिन मुरली सुनने के बाद कर्मणा में चले जाते हो तो बीच-बीच में कर्म कान्सेस भी हो जाते हो। कुछ योग लगाते हो, कुछ कर्म कान्सेस हो जाते हो। लेकिन आपस में ऐसी रूहरिहान करना - यह एक दो को रिफ्रेश करना है। वायुमण्डल को पावरफुल बनाना है। तो इस खुशखबरी पर बाबा बहुत खुश है।

अभी सबको कम से कम 4 घण्टे का चार्ट दादी को देना चाहिए। पसन्द है? 4 से 6 हो जाए तो कम नहीं करना। 6 हो जाए, 8 हो जाए बहुत अच्छा।



लेकिन कम से कम 4 घण्टा, इक्ठु नहीं मिले कोई हर्जा नहीं। 5 मिनट 10 मिनट पावरफुल स्टेज बनाओ - टोटल में 4 घण्टा होना चाहिए। चाहे आधा घण्टा मिलता है, चाहे 5 मिनट मिलता है लेकिन जमा 4 घण्टा होना चाहिए। हो सकता है? जो समझते हैं हो सकता है वह हाथ उठाओ। अच्छा यह तो सभी एवररेडी हैं। बापदादा खुश है, हिम्मत बहुत अच्छी है। बापदादा एकस्ट्रा मदद देगा, हिम्मत नहीं हारना। हिम्मत रखेंगे तो परिवार की भी मदद, बड़ों का भी मन से सहयोग मिलेगा। और बापदादा तो एक का पदमगुणा देता ही है। तो सबको पसन्द है? अच्छा - 4 घण्टे से कम नहीं करना। एक दिन अगर 4 घण्टे नहीं हो तो दूसरे दिन 6 घण्टे करके 4 घण्टे पूरे करना। कर सकते हो? देखो, सोच समझकर हाँ करो। अभी प्रभाव में आकर हाँ नहीं करो। कर सकते हैं? (दादी से) देख रही हो ना। सभी ने हाथ उठाया है। इन्हों को तो मुबारक का इनाम है। एडवांस में मुबारक है। इनाम को छोड़ना नहीं। बहुत अच्छा। बापदादा तो मधुबन निवासियों को सदा नयनों के सामने देखते हैं। नूरे रत्न देखते हैं। मधुबन निवासी बनना कोई छोटी सी बात नहीं है। मधुबन निवासी बनना अर्थात् अनेक गिफ्ट के अधिकारी बनना। देखो, स्थूल गिफ्ट भी मधुबन में बहुत मिलती है ना! और कितना स्वमान मिलता है। अगर मधुबन वाला कहाँ भी जाता है तो किस नजर से सभी देखते हैं? मधुबन वाला आया है। तो इतना अपना स्वमान सदा इमर्ज रखो। मर्ज नहीं, इमर्ज। ठीक है ना?

अभी बापदादा चार्ट पूछते रहेंगे? 15-15 दिन के बाद चार्ट की रिजल्ट देखेंगे। ठीक है ना! चार्ट में देना - हाँ या ना। ऊपर तारीख लिखना और नीचे हाँ ना, हाँ ना। बस दो या 3 या 4 घण्टा पावरफुल याद रही। बस, ज्यादा नहीं लिखना। पढ़ने का टाइम नहीं मिलता है ना। मधुबन निवासियों से सभी का प्यार है और आप लोगों को कितनी दुआयें मिलती हैं। जो आई.पी. भी आते हैं, योग शिविर में आते हैं, कान्फ्रेन्स में आते हैं तो मधुबन की सेवा देख करके दुआयें तो देते हैं ना। हर एक के दिल से निकलता है - वाह सेवाधारी वाह! तो दुआयें भी तो जमा हो रही हैं। तो कमाल करके दिखाना। मधुबन वालों का

रिकार्ड 4 घण्टे का जरूर हो, ज्यादा भी हो तो और अच्छा। यही प्रवृत्ति वालों को, सेन्टर वालों को, सभी को पावरफुल बनायेगा। निमित्त आप बनो। अच्छा। खुशराजी हैं, यह पूछने की आवश्यकता है? या खुश रहते ही हो, पूछने की आवश्यकता है? खुश तो सभी हैं ही। सभी के चेहरे देखो, सभी के दांत निकले हुए हैं। बहुत अच्छे हो। अपनी विशेषता देखो और उसको कार्य में लगाओ।

विशेष मधुबन की बहिनों से बात कर रहे हैं। बापदादा सब देखते हैं। बापदादा से कुछ छिपता नहीं है। अन्दर का भी देखता है, तो बाहर का भी देखता है। मधुबन की बहिनें विशेष अपनी-अपनी विशेषता को कार्य में लगाओ। हर एक में विशेषतायें हैं, ऐसे नहीं कोई विशेषता नहीं है। सभी में हैं। सिर्फ उसको कार्य में लगाने से वृद्धि को प्राप्त होती जायेगी। औरों की भी विशेषता देखो और अपनी विशेषता कार्य में लगाओ। कम नहीं हैं। सभी क्या बुलाते हैं! मधुबन की बहिनें। मधुबन नाम आने से ही कितनी खुशी हो जाती है। तो मधुबन की बहिनें कम नहीं हैं। सभी के दुआओं की पात्र हो। पुण्य का खाता जितना बनाने चाहो उतना बना सकते हो। चांस है। समय को जितना सफल करने चाहो उतना कर सकते हो। चांस तो है ना! या चांस नहीं मिलता है? चांस आपेही लो, चांस ऐसे नहीं मिलेगा। कोई कहे हँ यह करो, नहीं। चांस लो। चांस लेने से क्या बन जायेंगे? चांसलर। मधुबन वाले भाग्यवान तो हैं ही लेकिन अपने भाग्य को कार्य में लगाओ। समझा। बहिनें हैं सिकीलधी और भाई हैं बहुत। सिकीलधी हैं ना! बहुत अच्छा है। अभी 4 घण्टे में पहला नम्बर बहिनें आनी चाहिए। ऐसे नहीं कहना - यह हो गया ना। यह होना नहीं चाहिए ना! यह नहीं। करना ही है। पक्का! इन्हों की फोटो निकालो। अच्छा। ओम् शान्ति।



## कर्मतीत अवस्था तक पहुंचने के लिए कन्ट्रोलिंग पावर को थड़ाओ, स्वराज्य अधिकारी बनो

आज बापदादा चारों ओर के अपने राज दुलारे परमात्म प्यारे बच्चों को देख रहे हैं। यह परमात्म दुलार वा परमात्म प्यार बहुत थोड़े बच्चों को प्राप्त होता है। बहुत थोड़े ऐसे भाग्य के अधिकारी बनते हैं। ऐसे भाग्यवान बच्चों को देख बापदादा भी हर्षित होते हैं। राज दुलारे अर्थात् राजा बच्चे। तो अपने को राजा समझते हो ? नाम ही है राजयोगी। तो राजयोगी अर्थात् राजे बच्चे। वर्तमान समय भी राजे हो और भविष्य में भी राजे हो। अपना डबल राज्य पद अनुभव करते हो ना ? अपने आपको देखो कि मैं राजा हूँ ? स्वराज्य अधिकारी हूँ ? हर एक राज्य-कारोबारी आपके आर्डर में कार्य कर रहे हैं ? राजा की विशेषता क्या होती है, वह तो जानते हो ना ? रूलिंग पावर और कन्ट्रोलिंग पावर दोनों पावर आपके पास हैं ? अपने आपसे पूछो कि राज्य कारोबारी सदा कन्ट्रोल में चल रहे हैं ?

बापदादा आज बच्चों की कन्ट्रोलिंग पावर, रूलिंग पावर चेक कर रहे थे, तो बताओ क्या देखा होगा ? हर एक जानते तो हैं। बापदादा ने देखा कि अभी भी अखण्ड राज्य अधिकार सभी का नहीं है। अखण्ड, बीच-बीच में खण्डित होता है। क्यों ? सदा स्वराज्य के बदले पर राज्य भी खण्डित कर देता है। पर राज्य की निशानी है - यह कर्मेन्द्रियां पर-अधीन हो जाती हैं। माया के राज्य का प्रभाव अर्थात् पर-अधीन बनाना। वर्तमान समय मैजारिटी तो ठीक हैं लेकिन मैजारिटी माया के वर्तमान समय के विशेष प्रभाव में आ जाते हैं। जो आदि अनादि संस्कार हैं उसके बीच-बीच में मध्य के अर्थात् द्वापर से अभी अन्त तक के संस्कार के प्रभाव में आ जाते हैं। स्व के संस्कार ही स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। उसमें भी विशेष संस्कार व्यर्थ सोचना, व्यर्थ समय गँवाना और

व्यर्थ बोल-चाल में आना, चाहे सुनना, चाहे सुनाना। एक तरफ व्यर्थ के संस्कार, दूसरे तरफ अलबेलेपन के संस्कार भिन्न-भिन्न रॉयल रूप में स्वराज्य को खण्डित कर देते हैं। कई बच्चे कहते हैं कि समय समीप आ रहा है लेकिन जो संस्कार शुरू में इमर्ज नहीं थे, वह अभी कहाँ-कहाँ इमर्ज हो रहे हैं। वायुमण्डल में संस्कार और इमर्ज हो रहे हैं, इसका कारण क्या? यह माया के वार का एक साधन है। माया इसी से अपना बनाकर परमात्म मार्ग से दिलशिकस्त बना देती है। सोचते हैं कि अभी तक ऐसे ही है तो पता नहीं समानता की सफलता मिलेगी या नहीं मिलेगी! कोई-न-कोई बात में जहाँ कमजोरी होगी, उसी कमजोरी के रूप में माया दिलशिकस्त बनाने की कोशिश करती है। बहुत अच्छा चलते-चलते कोई न कोई बात में माया संस्कार पर अटक कर, पुराने संस्कार इमर्ज करने का रूप रखकर दिलशिकस्त करने की कोशिश करती है। लास्ट में सब संस्कार समाप्त होने हैं इसलिए कभी-कभी रहे हुए संस्कार इमर्ज हो जाते हैं। लेकिन बापदादा आप सभी भाग्यवान बच्चों को इशारा दे रहे हैं - घबराओ नहीं, माया की चाल को समझ जाओ। आलस्य और व्यर्थ - इसमें निगेटिव भी आ जाता है - इन दोनों बातों पर विशेष अटेन्शन रखो। समझ जाओ कि यह माया का वर्तमान समय वार करने का साधन है।

बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइन्ड-पन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही है। साथ का प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी। यह माया की हार है, वार नहीं है। सिर्फ घबराओ नहीं, क्या हो गया, क्यों हो गया! हिम्मत रखो, बाप के साथ को स्मृति में रखो। चेक करो कि बाप का साथ है? साथ का अनुभव मर्ज रूप में तो नहीं है? नॉलेज है कि बाप साथ है, नॉलेज के साथ-साथ बाप की पावर क्या है? ऑलमाइटी अथॉरिटी है तो सर्व शक्तियों की पावर इमर्ज रूप में अनुभव करो। इसको कहा जाता है बाप के साथ का अनुभव होना। अलबेले नहीं बन जाओ - बाप के सिवाए और है ही कौन, बाप ही तो है। जब बाप ही है तो वह पावर है? जैसे दुनिया वालों को कहते हो अगर

परमात्मा व्यापक है तो परमात्म गुण अनुभव होने चाहिए, दिखाई देने चाहिए। तो बापदादा भी आपको पूछते हैं कि अगर बाप साथ है, कम्बाइन्ड है तो वह पावर हर कर्म में अनुभव होती है? दूसरों को भी अनुभव होती है? क्या समझते हो? डबल फारेनर्स क्या समझते हो? पावर है? सदा है? पहले क्वेश्चन में तो सब हाँ कर देते हैं। फिर जब दूसरा क्वेश्चन आता है, सदा है? तो सोच में पड़ जाते हैं। तो अखण्ड तो नहीं हुआ ना! आप चैलेन्ज क्या करते हो? अखण्ड राज्य स्थापन कर रहे हो या खण्डित राज्य स्थापन कर रहे हो? क्या कर रहे हो? अखण्ड है ना! टीचर्स बोलो अखण्ड है? तो अभी चेक करो अखण्ड स्वराज्य है? राज्य अर्थात् प्रालम्ब्य सदा का लेना है या बीच-बीच में कट हो जाए तो कोई हर्जा नहीं? ऐसे चाहते हो? लेने में तो सदा चाहिए और पुरुषार्थ में कभी-कभी चलता है, ऐसे? फारेनर्स को कहा था ना कि अपने जीवन की डिक्शनरी से समटाइम और समथिंग शब्द निकाल दो। अभी समटाइम खत्म हुआ? जयन्ती बोलो। रिजल्ट देंगी ना। तो समटाइम खत्म है? जो समझते हैं, समटाइम शब्द सदा के लिए समाप्त हो गया, वह हाथ उठाओ। खत्म हो गया या खत्म होगा? लम्बा हाथ उठाओ। वतन की टी.वी. में तो आपके हाथ आ गये, यहाँ की टी.वी. में सभी के नहीं आते। यह कलियुगी टी.वी. है ना, वहाँ जादू की टी.वी. है इसलिए आ जाता है। बहुत अच्छा फिर भी बहुतों ने उठाया है, उन्हीं को सदाकाल की मुबारक हो। अच्छा। अभी भारतवासी जिसका प्रैक्टिकल सदाकाल स्वराज्य है, सर्व कर्मेन्द्रियां लॉ और आर्डर में हैं, वह हाथ उठाओ। पक्का हाथ उठाना, कच्चा नहीं। सदा याद रखना कि सभा में हाथ उठाया है। फिर बापदादा को बातें बहुत मीठी-मीठी बताते हैं। कहते हैं बाबा आप तो जानते हो ना, कभी-कभी माया आ जाती है ना! तो अपने हाथ की लाज़ रखना। अच्छा है। फिर भी हिम्मत रखी है तो हिम्मत नहीं हारना। हिम्मत पर बापदादा की मदद है ही है।

आज बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय के अनुसार अपने ऊपर, हर कर्मेन्द्रियों के ऊपर अर्थात् स्वयं की स्वयं प्रति जो कन्ट्रोलिंग पावर होनी चाहिए

वह कम है, वह और ज्यादा चाहिए। बापदादा बच्चों की रूहरिहान सुन मुस्करा रहे थे, बच्चे कहते हैं कि पावरफुल याद के चार घण्टे होते नहीं हैं। बापदादा ने आठ घण्टे से 4 घण्टा किया और बच्चे कहते हैं दो घण्टा ठीक है। तो बताओ कन्ट्रोलिंग पावर हुई ? और अभी से अगर यह अभ्यास नहीं होगा तो समय पर पास विद आनर, राज्य अधिकारी कैसे बन सकेंगे ! बनना तो है ना ? बच्चे हँसते हैं। आज बापदादा ने बच्चों की बातें बहुत सुनी हैं। बापदादा को हँसाते भी हैं, कहते हैं ट्रैफिक कन्ट्रोल 3 मिनट नहीं होता, शरीर का कन्ट्रोल हो जाता है, खड़े हो जाते हैं, नाम है मन के कन्ट्रोल का लेकिन मन का कन्ट्रोल कभी होता, कभी नहीं भी होता। कारण क्या है ? कन्ट्रोलिंग पावर की कमी। इसे अभी और बढ़ाना है। आर्डर करो, जैसे हाथ को ऊपर उठाना चाहो तो उठा लेते हो। क्रेक नहीं है तो उठा लेते हो ना ! ऐसे मन, यह सूक्ष्म शक्ति कन्ट्रोल में आनी है। लाना ही है। आर्डर करो - स्टॉप तो स्टॉप हो जाए। सेवा का सोचो, सेवा में लग जाए। परमधाम में चलो, तो परमधाम में चला जाये। सूक्ष्मवतन में चलो, सेकण्ड में चला जाए। जो सोचो वह आर्डर में हो। अभी इस शक्ति को बढ़ाओ। छोटे-छोटे संस्कारों में, युद्ध में समय नहीं गंवाओ, आज इस संस्कार को भगाया, कल उसको भगाया। कन्ट्रोलिंग पावर धारण करो तो अलग-अलग संस्कार पर टाइम नहीं लगाना पड़ेगा। नहीं सोचना है, नहीं करना है, नहीं बोलना है। स्टॉप। तो स्टॉप हो जाए। यह है कर्मातीत अवस्था तक पहुंचने की विधि। तो कर्मातीत बनना है ना ? बापदादा भी कहते हैं आप को ही बनना है। और कोई नहीं आयेंगे, आप ही हो। आपको ही साथ में ले जायेंगे लेकिन कर्मातीत को ले जायेंगे ना। साथ चलेंगे या पीछे-पीछे आयेंगे ? (साथ चलेंगे) यह तो बहुत अच्छा बोला। साथ चलेंगे, हिसाब चुक्तू करेंगे ? इसमें हाँ जी नहीं बोला। कर्मातीत बनके साथ चलेंगे ना। साथ चलना अर्थात् साथी बनकर चलना। जोड़ी तो अच्छी चाहिए या लम्बी और छोटी ? समान चाहिए ना ! तो कर्मातीत बनना ही है। तो क्या करेंगे ? अभी अपना राज्य अच्छी तरह से सम्भालो। रोज अपनी दरबार लगाओ। राज्य अधिकारी हो ना ! तो

अपनी दरबार लगाओ, कर्मचारियों से हालचाल पूछो। चेक करो ऑर्डर में हैं? ब्रह्मा बाप ने भी रोज़ दरबार लगाई है। कापी है ना। इन्हों को बताना, दिखाना। ब्रह्मा बाप ने भी मेहनत की, रोज़ दरबार लगाई तब कर्मातीत बनें। तो अभी कितना टाइम चाहिए? या एवररेडी हो? इस अवस्था से सेवा भी फास्ट होगी। क्यों? एक ही समय पर मन्सा शक्तिशाली, वाचा शक्तिशाली, संबंध-सम्पर्क में चाल और चेहरा शक्तिशाली। एक ही समय पर तीनों सेवा बहुत फास्ट रिजल्ट निकालेगी। ऐसे नहीं समझो कि इस साधना में सेवा कम होगी, नहीं। सफलता सहज अनुभव होगी। और सभी जो भी सेवा के निमित्त हैं अगर संगठित रूप में ऐसी स्टेज बनाते हैं तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी। तो विशेष अटेन्शन कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ। संकल्प, समय, संस्कार सब पर कन्ट्रोल हो। बहुत बार बापदादा ने कहा है - आप सब राजे हो। जब चाहो जैसे चाहो, जहाँ चाहो, जितना समय चाहो ऐसा मन बुद्धि लॉ और आर्डर में हो। आप कहो नहीं करना है, और फिर भी हो रहा है, कर रहे हैं तो यह लॉ और आर्डर नहीं है। तो स्वराज्य अधिकारी अपने राज्य को सदा प्रत्यक्ष स्वरूप में लाओ। लाना है ना? ला भी रहे हैं लेकिन बापदादा ने कहा ना - सदा शब्द एड करो। बापदादा अभी लास्ट में आयेंगे, अभी एक टर्न है। एक टर्न में रिजल्ट पूछेंगे। 15 दिन होते हैं ना। तो 15 दिन में कुछ तो दिखायेंगे या नहीं? टीचर्स बोलो, 15 दिन में रिजल्ट होगी?

अच्छा - मधुबन वाले 15 दिन में रिजल्ट दिखायेंगे। अभी कहो हॉ या ना! अभी हाथ उठाओ। (सभी ने हाथ उठाया) अपने हाथ की लाज़ रखना। जो समझते हैं कोशिश करेंगे, ऐसे कोशिश वाले हाथ उठाओ। ज्ञान सरोवर, शान्तिवन वाले उठो। (बापदादा ने मधुबन, ज्ञानसरोवर, शान्तिवन के मुख्य निमित्त भाई बहनों को सामने बुलाया)

बापदादा ने तो आप सबका साक्षात्कार कराने के लिए बुलाया है। आप लोगों को देखकर सभी खुश होते हैं। अभी बापदादा चाहते क्या हैं, वह बता रहे हैं। चाहे पाण्डव भवन, चाहे शान्तिवन, चाहे ज्ञान सरोवर, चाहे हॉस्पिटल

चार धाम तो हैं। पांचवा छोटा है। चारों में ही बापदादा की एक आश है – बापदादा तीन मास के लिए चारों धाम में अखण्ड, निर्विघ्न, अटल स्वराज्यधारी, राजाओं का रिजल्ट देखने चाहते हैं। तीन मास यहाँ वहाँ से कोई भी और बातें नहीं सुनने में आवें। सब स्वराज्य अधिकारी नम्बरवन, क्या तीन मास की ऐसी रिजल्ट हो सकती है? (निर्वैर भाई से) - पाण्डवों की तरफ से आप हो। हो सकता है? दादी तो है लेकिन साथ में यह जो सामने बैठे हैं, सब हैं। तो हो सकता है? (दादी कहती है हो सकता है।) जो पाण्डव भवन वाले बैठे हैं वह हाथ उठाओ, हो सकता है। अच्छा मानो कोई कमजोर है, उसका कुछ हो जाता है फिर आप क्या करेंगे? आप समझते हो कि साथ वालों को भी साथ देते हुए रिजल्ट निकालेंगे, इतनी हिम्मत रखते हो? हो सकता है या सिर्फ अपनी हिम्मत है? दूसरों की बात को भी समा सकते हो? उसकी गलती समा सकते हो? वायुमण्डल में फैलाओ नहीं, समा दो, इतना कर सकते हो? जोर से बोलो हाँ जी। मुबारक हो। 3 मास के बाद रिपोर्ट देखेंगे। किसी भी स्थान से कोई भी रिपोर्ट नहीं निकलनी चाहिए। एक दो को वायब्रेशन दे समा देना और प्यार से वायब्रेशन देना। झगड़ा नहीं हो।

ऐसे ही डबल विदेशी भी रिजल्ट देंगे ना। सभी को बनना है ना। डबल विदेशी जो समझते हैं अपने सेन्टर पर, साथियों के साथ 3 मास की रिजल्ट निकालेंगे, वह हाथ उठाओ। जो समझते हैं कोशिश करेंगे, कह नहीं सकते, वह कोई हैं तो हाथ उठा लो। साफ दिल हैं, साफ दिल वालों को मदद मिलती है। अच्छा। (फिर बापदादा ने सभी ज़ोन के भाई बहिनों से भी हाथ उठवाये तथा अपने स्थान पर खड़ा किया। पहले महाराष्ट्र, दिल्ली, कनार्टक के भाई बहिनों को खड़ा किया और वायदा कराया। फिर यू.पी. वालों को सेवा की मुबारक दी।

यू.पी.:- (1600 हैं) पहले यू.पी. वालों को सेवा की मुबारक है। सभी ने अच्छी हिम्मत कर सेवा में अपना तन, मन, समय और धन भी सफल किया और पुण्य का खाता जमा किया इसलिए सभी की दुआयें सेवा का फल स्वतः ही मिलता है। तो अच्छा किया, हिम्मत की और सफलता प्राप्त की, इसलिए



मुबारक हो। और सबकी दुआयें भी हैं। अच्छा - जो समझते हैं कि रिजल्ट निकालनी ही है, तो हाँ जी करो। जो समझते हैं कोशिश करके देखेंगे वह खड़े रहो बाकी बैठ जाओ।

(इसके बाद गुजरात, इन्दौर, पंजाब, इस्टर्न-(नेपाल, आसाम, उड़ीसा, बंगाल-बिहार) राजस्थान, भोपाल, आगरा, तामिलनाडू आदि सभी ज़ोन वालों को बापदादा ने सभा में खड़ा करके वायदे कराये।)

मैजारिटी तो उमंग-उत्साह में हैं बाकी जिन्होंने कोशिश में हाथ उठाया, वह भी राइट हैं। लेकिन बापदादा कहते हैं हिम्मत रखने से, दृढ़ संकल्प करने से सब अच्छा हो जाता है। मास्टर सर्वशक्तिवान बन अगर संकल्प करो तो क्या नहीं कर सकते हो। जब विश्व को परिवर्तन कर सकते हो तो क्या अपने को नहीं कर सकते हो! इसीलिए जिन्होंने हाँ की है उनको बापदादा यही कहते हैं कि सदा यह संकल्प अमृतवेले इमर्ज करना कि हमें निर्विघ्न रहना ही है और कोशिश वाले सदा अमृतवेले योग के बाद यह दृढ़ संकल्प रिवाइज करो कि हिम्मते बच्चे मददे बाप है। तो इससे कोशिश करने के बजाए सफलता अनुभव करते जायेंगे। बाकी बापदादा सभी बच्चों के रिजल्ट को देख खुश तो सदा है ही फिर भी हिम्मत के ऊपर विशेष मुबारक दे रहे हैं। तीन मास का अभ्यास सदाकाल का अनुभवी बना देगा। अगर अपने उमंग-उत्साह से किया तो। मजबूरी से किया 3 मास पास करने हैं, फिर तो सदाकाल का नहीं होगा। लेकिन उमंग-उत्साह से किया तो सदाकाल के लिए अनादि अविनाशी संस्कार इमर्ज हो जायेंगे। समझा।

अच्छा - चारों ओर के सर्व स्वराज्य अधिकारी आत्माओं को, सदा अखण्ड राज्य के पात्र आत्माओं को, सदा बाप के समान कर्मातीत स्थिति में पहुंचने वाले, बाप को फालो करने वाले तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा एक दो को शुभ भावना, शुभ कामना का सहयोग देने वाले शुभचिंतक बच्चों को यादप्यार और नमस्ते।

## दादियों से

आप निमित्त बनी हुई आत्माओं के अन्दर जो तीव्र पुरुषार्थ का संकल्प इमर्ज रहता है वह औरों को भी बल देकर चला रहा है। दिलशिकस्त आत्माओं में बल भर रहा है। और सभी नया उमंग लेकर जाते हैं। चाहे कुछ भी हो, थोड़ी बहुत खिटपिट तो होती है परन्तु अपने पुरुषार्थ का उमंग मैजारिटी ले जाते हैं। इसलिए धीरे-धीरे सब ठीक हो रहा है, हो जायेगा। कम नहीं होगा, बढ़ता जायेगा। अच्छा है बापदादा को नाज़ है कि ब्रह्मा बाप के साथी बच्चे अच्छा साथ निभा रहे हैं। कम नहीं हैं। साथ निभाने में अच्छा पार्ट बजा रहे हैं। तो बाप-दादा दोनों ही अपने साथ निभाने वाले साथी बच्चों को बार-बार मुबारक क्या देंगे, दुआयें देते रहते हैं। अच्छा पार्ट बजा रहे हो। साकार में स्तम्भ बन गये हैं, जिसके आधार पर सब आगे चल रहे हैं। इसलिए आप लोगों को सहज पुरुषार्थ है, दुआओं से आपका खाता बहुत-बहुत बढ़ रहा है। अच्छा है।

(18 तारीख को दादी का छोटा आपरेशन है) पता है, क्या है, कुछ नहीं है। हुआ पड़ा है कोई ऐसी बात नहीं है। खिटखिट से निकाल देना अच्छा है। आगे भी तो सेवा करनी है ना। मुख्य पार्टधारी हैं तो उसकी ज्यादा सम्भाल की जाती है। चलाना नहीं पड़ता है। ध्यान देना ही पड़ता है। कुछ नहीं है। अच्छा - ओम् शान्ति।

बाप के साथ का अनुभव, कम्बाइण्डपन का अनुभव इमर्ज करो। ऐसे नहीं कि बाप तो है ही मेरा, साथ है ही है। साथ का प्रैक्टिकल अनुभव इमर्ज हो। तो यह माया का वार, वार नहीं होगा, माया हार खा लेगी।

## तीव्र पुरुषार्थ की लगन को ज्वाला रूप बनाकर छेद के वैराग्य की लहर फैलाओ

आज बापदादा हर एक बच्चे के मस्तक पर तीन लकीरें देख रहे हैं। जिसमें एक लकीर है - परमात्म पालना के भाग्य की लकीर। यह परमात्म पालना का भाग्य सारे कल्प में अब एक बार ही मिलता है, सिवाए इस संगमयुग के यह परमात्म पालना कभी भी नहीं प्राप्त हो सकती। यह परमात्म पालना बहुत थोड़े बच्चों को प्राप्त होती है। दूसरी लकीर है - परमात्म पढ़ाई के भाग्य की लकीर। परमात्म पढ़ाई यह कितना भाग्य है जो स्वयं परम आत्मा शिक्षक बन पढ़ा रहे हैं। तीसरी लकीर है - परमात्म प्राप्तियों की लकीर। सोचो कितनी प्राप्तियां हैं। सभी को याद है ना - प्राप्तियों की लिस्ट कितनी लम्बी है! तो हर एक के मस्तक में यह तीन लकीर चमक रही हैं। ऐसे भाग्यवान आत्मायें अपने को समझते हो? पालना, पढ़ाई और प्राप्तियां। साथ-साथ बापदादा बच्चों के निश्चय के आधार पर रूहानी नशे को भी देख रहे हैं। हर एक परमात्म बच्चा कितना रूहानी नशे वाली आत्मायें हैं! सारे विश्व में और सारे कल्प में सबसे हाइएस्ट भी हैं, महान भी हैं और होलीएस्ट भी हैं। आप जैसी पवित्र आत्मायें तन से भी, मन से भी देव रूप में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी और कोई बनता नहीं है। और फिर हाइएस्ट भी हो, होलीएस्ट भी हो साथ-साथ रिचेस्ट भी हो। बापदादा स्थापना में भी बच्चों को स्मृति दिलाते थे और फ़लक से अखबारों में भी डलवाया कि “ओम मण्डली रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड”। यह स्थापना के समय की आप सबकी महिमा है। एक दिन में कितना भी बड़े ते बड़ा मल्टी-मल्टी मिल्युनर हो लेकिन आप जैसा रिचेस्ट हो नहीं सकता। इतना रिचेस्ट बनने का साधन क्या है? बहुत छोटा सा साधन है। लोग रिचेस्ट बनने के लिए कितनी मेहनत करते हैं और आप कितना सहज मालामाल बनते जाते हो। जानते हो

ना साधन! सिर्फ छोटी सी बिन्दी लगानी है बस। बिन्दी लगाई, कमाई हुई। आत्मा भी बिन्दी, बाप भी बिन्दी और ड्रामा फुलस्टाप लगाना, वह भी बिन्दी है। तो बिन्दी आत्मा को याद किया, कमाई बढ़ गई। वैसे लौकिक में भी देखो, बिन्दी से ही संख्या बढ़ती है। एक के आगे बिन्दी लगाओ तो क्या हो जाता? 10, दो बिन्दी लगाओ, तीन बिन्दी लगाओ, चार बिन्दी लगाओ, बढ़ता जाता है। तो आपका साधन कितना सहज है! “मैं आत्मा हूँ” - यह स्मृति की बिन्दी लगाना अर्थात् खजाना जमा होना। फिर “बाप” बिन्दी लगाओ और खजाना जमा। कर्म में, सम्बन्ध-सम्पर्क में ड्रामा का फुलस्टाप लगाओ, बीती को फुलस्टाप लगाया और खजाना बढ़ जाता। तो बताओ सारे दिन में कितने बार बिन्दी लगाते हो? और बिन्दी लगाना कितना सहज है! मुश्किल है क्या? बिन्दी खिसक जाती है क्या?

बापदादा ने कमाई का साधन सिर्फ यही सिखाया है कि बिन्दी लगाते जाओ, तो सभी को बिन्दी लगाने आती है? अगर आती है तो एक हाथ की ताली बजाओ। पक्की है ना! या कभी खिसक जाती है, कभी लग जाती है? सबसे सहज बिन्दी लगाना है। कोई इस आंखों से ब्लाइन्ड भी हो, वह भी अगर कागज पर पेन्सिल रखेगा तो बिन्दी लग जाती है और आप तो त्रिनेत्री हो, इसलिए इन तीन बिन्दियों को सदा यूज करो। क्वेश्चन मार्क कितना टेढ़ा है, लिखकर देखो, टेढ़ा है ना? और बिन्दी कितनी सहज है। इसलिए बापदादा भिन्न-भिन्न रूप से बच्चों को समान बनाने की विधि सुनाते रहते हैं। विधि है ही बिन्दी। और कोई विधि नहीं है। अगर विदेही बनते हो तो भी विधि है - बिन्दी बनना। अशरीरी बनते हो, कर्मातीत बनते हो, सबकी विधि बिन्दी है। इसलिए बापदादा ने पहले भी कहा है - अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाते, रूहरिहान करते जब कार्य में आते हो तो पहले तीन बिन्दियों का तिलक मस्तक पर लगाओ, वह लाल बिन्दियों का तिलक लगाने नहीं शुरू करना लेकिन स्मृति का तिलक लगाओ। और चेक करो - किसी भी कारण से यह स्मृति का तिलक मिटे नहीं। अविनाशी, अमिट तिलक है?

बापदादा बच्चों का प्यार भी देखते हैं, कितने प्यार से भाग-भाग कर मिलन मनाने पहुंचते हैं और फिर आज हाल में भी मिलन मनाने के लिए कितनी मेहनत से, कितने प्यार से नींद, प्यास को भूलकर पहले नम्बर में नजदीक बैठने का पुरुषार्थ करते हैं। बापदादा सब देखते हैं, क्या-क्या करते हैं वह सारा ड्रामा देखते हैं। बापदादा बच्चों के प्यार पर न्योछावर भी होते हैं और यह भी बच्चों को कहते हैं जैसे साकार में मिलने के लिए दौड़-दौड़ कर आते हो ऐसे ही बाप समान बनने के लिए भी तीव्र पुरुषार्थ करो, इसमें सोचते हो ना कि सबसे आगे ते आगे नम्बर मिले। सबको तो मिलता नहीं है, यहाँ साकारी दुनिया है ना! तो साकारी दुनिया के नियम रखने ही पड़ते हैं। बापदादा उस समय सोचते हैं कि सब आगे-आगे बैठ जाएं लेकिन यह हो सकता है? हो भी रहा है, कैसे? पीछे वालों को बापदादा सदा नयनों में समाया हुआ देखते हैं। तो सबसे समीप हैं नयन। तो पीछे नहीं बैठे हो लेकिन बापदादा के नयनों में बैठे हो। नूरे रत्न हो। पीछे वालों ने सुना? दूर नहीं हो, समीप हो। शरीर से पीछे बैठे हैं लेकिन आत्मा सबसे समीप है। और बापदादा तो सबसे ज्यादा पीछे वालों को ही देखते हैं। देखो नजदीक वालों को इन स्थूल नयनों से देखने का चांस है और पीछे वालों को इन नयनों से नजदीक देखने का चांस नहीं है इसलिए बापदादा नयनों में समा लेता है।

बापदादा मुस्कराते रहते हैं, दो बजता है और लाइन शुरू हो जाती है। बापदादा समझते हैं कि बच्चे खड़े-खड़े थक भी जाते हैं लेकिन बापदादा सभी बच्चों को प्यार का मसाज़ कर देते हैं। टांगों में मसाज़ हो जाता है। बापदादा का मसाज़ देखा है ना - बहुत न्यारा और प्यारा है। तो आज सभी इस सीज़न का लास्ट चांस लेने के लिए चारों ओर से भाग-भागकर पहुंच गये हैं। अच्छा है। बाप से मिलन का उमंग-उत्साह सदा आगे बढ़ाता है। लेकिन बापदादा तो बच्चों को एक सेकण्ड भी नहीं भूलता है। बाप एक है और बच्चे अनेक परन्तु अनेक बच्चों को भी एक सेकण्ड भी नहीं भूलते क्योंकि सिकीलधे हो। देखो कहाँ-कहाँ देश-विदेश के कोने-कोने से बाप ने ही आपको ढूंढा। आप बाप को

दूढ़ सके ? भटकते रहे लेकिन मिल नहीं सके और बाप ने भिन्न-भिन्न देश, गांव, कस्बे जहाँ-जहाँ भी बाप के बच्चे हैं, वहाँ से दूढ़ लिया। अपना बना लिया। गीत गाते हो ना - मैं बाबा का और बाबा मेरा। न जाति देखी, न देश देखा, न रंग देखा, सबके मस्तक पर एक ही रूहानी रंग देखा - ज्योति बिन्दु। डबल फारेनर्स क्या समझते हैं ? बाप ने जाति देखी ? काला है, गोरा है, श्याम है, सुन्दर है ? कुछ नहीं देखा। मेरा है - यह देखा। तो बताओ बाप का प्यार है या आपका प्यार है ? किसका है ? (दोनों का है) बच्चे भी उत्तर देने में होशियार हैं, कहते हैं बाबा आप ही कहते हो कि प्यार से प्यार खींचता है, तो आपका प्यार है तो हमारा है तब तो खींचता है। बच्चे भी होशियार हैं और बाप को खुशी है कि इतना हिम्मत, उमंग-उत्साह रखने वाले बच्चे हैं।

बापदादा के पास 15 दिन के चार्ट का बहुत बच्चों का रिजल्ट आया है। एक बात तो बापदादा ने चारों ओर की रिजल्ट में देखी कि मैजॉरिटी बच्चों का अटेन्शन रहा है। परसेन्टेज जितनी स्वयं भी चाहते हैं उतनी नहीं है, परन्तु अटेन्शन है और दिल ही दिल में जो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे हैं वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लक्ष्य से आगे बढ़ भी रहे हैं। और आगे बढ़ते-बढ़ते मंजिल पर पहुंच ही जायेंगे। मैजॉरिटी अभी भी कभी अलबेलेपन में और कभी आलस्य के वश अटेन्शन भी कम दे रहे हैं। उन्हीं का एक विशेष स्लोगन है - हो ही जायेंगे, जायेंगे.... जाना है नहीं, जायेंगे। हो ही जायेगा - यह है अलबेलापन। जाना ही है, यह है तीव्र पुरुषार्थ। बापदादा वायदे बहुत सुनते हैं, बार-बार वायदे बहुत अच्छे करते हैं। बच्चे वायदे इतनी अच्छी हिम्मत से करते हैं जो उस समय बापदादा को भी बच्चे दिलखुश मिठाई खिला देते हैं। बाप भी खा लेते हैं। लेकिन वायदा अर्थात् पुरुषार्थ में ज्यादा से ज्यादा फायदा। अगर फायदा नहीं तो वायदा समर्थ नहीं है। तो वायदा भले करो फिर भी दिलखुश मिठाई तो खिलाते हो ना ! साथ-साथ तीव्र पुरुषार्थ की लगन को अग्नि रूप में लाओ। ज्वालामुखी बनो। समय प्रमाण रहे हुए जो भी मन के, सम्बन्ध-सम्पर्क के हिसाब-किताब हैं उसको ज्वाला स्वरूप से भस्म करो। लगन है, इसमें

बापदादा भी पास करते हैं लेकिन अभी लगन को अग्नि रूप में लाओ।

विश्व में एक तरफ भ्रष्टाचार, अत्याचार की अग्नि होगी, दूसरे तरफ आप बच्चों का पावरफुल योग अर्थात् लगन की अग्नि ज्वाला रूप में आवश्यक है। यह ज्वाला रूप इस भ्रष्टाचार, अत्याचार के अग्नि को समाप्त करेगी और सर्व आत्माओं को सहयोग देगी। आपकी लगन ज्वाला रूप की हो अर्थात् पावरफुल योग हो, तो यह याद की अग्नि, उस अग्नि को समाप्त करेगी और दूसरे तरफ आत्माओं को परमात्म सन्देश की, शीतल स्वरूप की अनुभूति करायेगी। बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रज्वलित करायेगी। एक तरफ भस्म करेगी दूसरे तरफ शीतल भी करेगी। बेहद के वैराग्य की लहर फैलायेगी। बच्चे कहते हैं - मेरा योग तो है, सिवाए बाबा के और कोई नहीं, यह बहुत अच्छा है। परन्तु समय अनुसार अभी ज्वाला रूप बनो। जो यादगार में शक्तियों का शक्ति रूप, महाशक्ति रूप, सर्व शस्त्रधारी दिखाया है, अभी वह महा शक्ति रूप प्रत्यक्ष करो। चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, सभी सागर से निकली हुई ज्ञान नदियां हो, सागर नहीं हो, नदी हो। ज्ञान गंगाये हो। तो ज्ञान गंगाये अब आत्माओं को अपने ज्ञान की शीतलता द्वारा पापों की आग से मुक्त करो। यह है वर्तमान समय का ब्राह्मणों का कार्य।

सभी बच्चे पूछते हैं कि इस साल क्या सेवा करें? तो बापदादा पहली सेवा यही बताते हैं कि अभी समय अनुसार सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था में हैं, तो वानप्रस्थी अपने समय, साधन सभी बच्चों को देकर स्वयं वानप्रस्थ होते हैं। तो आप सभी भी अपने समय का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना अभी औरों के प्रति लगाओ। अपने प्रति समय, संकल्प कम लगाओ। औरों के प्रति लगाने से स्वयं भी उस सेवा का प्रत्यक्षफल खाने के निमित्त बन जायेंगे। मन्सा सेवा, वाचा सेवा और सबसे ज्यादा - चाहे ब्राह्मण, चाहे और जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हीं को कुछ न कुछ मास्टर दाता बनके देते जाओ। निःस्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनंद की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना है और देना माना स्वतः ही लेना। जो भी जिस समय, जिस रूप में

सम्बन्ध-सम्पर्क में आये कुछ लेकर जाये। आप मास्टर दाता के पास आकर खाली नहीं जाये। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चलते-फिरते भी अगर कोई भी बच्चा सामने आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं जाता। यह चेक करो जो भी आया, मिला, कुछ दिया वा खाली गया? खजाने से जो भरपूर होते हैं वह देने के बिना रह नहीं सकते। अखुट, अखण्ड दाता बनो। कोई मांगे, नहीं। दाता कभी यह नहीं देखता कि यह मांगे तो दें। अखुट महादानी, महादाता स्वयं ही देता है। तो पहली सेवा इस वर्ष - महान दाता की करो। आप दाता द्वारा मिला हुआ देते हो। ब्राह्मण कोई भिखारी नहीं हैं लेकिन सहयोगी हैं। तो आपस में ब्राह्मणों को एक दो में दान नहीं देना है, सहयोग देना है। यह है पहला नम्बर सेवा। और साथ-साथ बापदादा ने विदेश के बच्चों की खुशखबरी सुनी तो बापदादा ने देखा कि जो इस सृष्टि के आवाज फैलाने के निमित्त बापदादा ने जो माइक नाम दिया है तो विदेश के बच्चों ने आपस में इस कार्य को किया है और जब प्लैन बना है तो प्रैक्टिकल होना ही है। लेकिन भारत में भी जो 13 ज़ोन हैं, हर एक ज़ोन से कम से कम एक ऐसा विशेष निमित्त सेवाधारी बनें, जिसको माइक कहो या कुछ भी कहो, आवाज फैलाने वाले कोई निमित्त बनाओ, यह बापदादा ने कम से कम कहा है लेकिन अगर बड़े-बड़े देश में ऐसे निमित्त बनने वाले हैं तो सिर्फ ज़ोन वाले नहीं लेकिन बड़े देशों से भी ऐसे तैयार कर प्रोग्राम बनाना है। बापदादा ने विदेश के बच्चों को दिल ही दिल में मुबारक दी, अभी मुख से भी दे रहे हैं कि प्रैक्टिकल में लाने का प्लैन पहले बापदादा के सामने लाया। वैसे बापदादा जानते हैं कि भारत में और ही सहज है लेकिन अभी कुछ क्वालिटी की सेवा कर सहयोगी समीप लाओ। बहुत सहयोगी हैं लेकिन संगठन में उन्हों को और समीप लाओ।

साथ-साथ बापदादा का यह संकल्प है कि हर एक बड़े शहरों की जो एरिया होती है, वह बहुत बड़ी होती है, हर एक सेन्टर को अपनी एरिया से ऐसे विशेष तैयार करना आवश्यक है क्योंकि समय समीप आ रहा है और लास्ट समय आप सभी को स्वयं अपना परिचय नहीं देना है, आपकी तरफ से



वह स्पीच करे, वह स्पीकर हो और आप सर्चलाइट हो। तो हर एक को अपनी एरिया से ऐसा माइक निकालना है। हर एक एरिया में कोई न कोई विशेष बिजनेसमैन कहो वा ऐसा भिन्न-भिन्न वर्ग का कोई मुख्य होता ही है। अपने-अपने सेन्टर पर अपनी एरिया की विशेष आत्माओं को तैयार करो। वह सुनावे कि यह ज्ञान क्या है। आप अभी लास्ट समय साक्षात्कार मूर्त, फरिश्ता बन दृष्टि दो और वह स्पीकर बने। स्पीकर बनना तो सभी सीख गये हैं, छोटी-छोटी टीचर्स भी स्पीच बहुत अच्छा करती हैं। स्पीच सभी करते हो। अभी स्पीकर औरों को तैयार करो। आपकी दृष्टि वा दो वचन सभी को ऐसी भासना दें जैसे कई समय की स्पीच कर ली है। ऐसा समय आना ही है।

अभी समय भी फास्ट गति ले रहा है, सिर्फ समय बार-बार फास्ट होकर आप लोगों को ऐसे पीठ करके (मुड़करके) देखता है कि हमारे मालिक तेज रफतार से आ रहे हैं वा समय फास्ट जा रहा है? मालिक तो आप हो ना? तो आपको बार-बार देखता है, फास्ट आ रहे हैं! इसलिए इस वर्ष क्वालिटी की सेवा में विशेष अटेन्शन दो। हर एक सेन्टर की रिजल्ट आनी चाहिए कि हमारे सेन्टर पर किस वर्ग के और कितनी क्वालिटी की सेवा हो रही है। क्वान्टिटी तो स्वतः ही बढ़ती जायेगी। अभी भी देखो यह हाल भी छोटा हो गया है ना। क्वान्टिटी तो बढ़नी ही है, अभी ऐसे प्रैक्टिकल ग्रुप तैयार करो।

साथ-साथ ब्राह्मण आत्माओं में और भी समीप लाने के लिए, हर एक तरफ वा मधुबन में चारों ओर ज्वाला स्वरूप का वायुमण्डल बनाने के लिए, चाहे जिसको भट्टी कहते हो वह करो, चाहे आपस में संगठन में रूहरिहान करके ज्वाला स्वरूप का अनुभव कराओ और आगे बढ़ाओ। जब इस सेवा में लग जायेंगे तो जो छोटी-छोटी बातें हैं ना - जिसमें समय लगता है, मेहनत लगती है, दिलशिकस्त बनते हैं वह सब ऐसे लगेगा जैसे ज्वालामुखी हाइएस्ट स्टेज और उसके आगे यह समय देना, मेहनत करना, एक गुड़ियों का खेल अनुभव होगा। स्वतः ही सहज ही सेफ हो जायेंगे। बापदादा ने कहा ना कि सबसे ज्यादा बापदादा को रहम तब पड़ता है जब देखते हैं कि मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे

और छोटी-छोटी बातों के लिए मेहनत करते हैं। मोहब्बत ज्वालामुखी रूप की कम है तब मेहनत लगती है। तो अभी मेहनत से मुक्त बनो, अलबेले नहीं बनना लेकिन मेहनत से मुक्त होना। ऐसे नहीं सोचना मेहनत तो करनी नहीं है तो आराम से सो जाओ। लेकिन मोहब्बत से मेहनत खत्म करो। अलबेलेपन से नहीं। समझा - क्या करना है ?

अभी बापदादा को आना तो है ही। पूछते हैं आगे क्या होगा ? बापदादा आयेंगे या नहीं आयेंगे ? बापदादा ना तो करते नहीं हैं, हाँ जी, हाँ जी करते हैं। बच्चे कहते हैं हजूर, बाप कहते हैं जी हाजिर। तो समझा क्या करना है, क्या नहीं करना है। मेहनत मोहब्बत से कट करो। अभी मेहनत मुक्त वर्ष मनाओ - मोहब्बत से, आलस्य से नहीं। यह पक्का याद रखना - आलस्य नहीं।

ठीक है - सब संकल्प पूरे हुए ? कोई रह गया ? जनक से (दादी जानकी से) पूछते हैं - कुछ रहा ? दादी तो मुस्करा रही है। खेल पूरा हो गया ? यह आपरेशन भी क्या है ? खेल में खेल है। खेल अच्छा रहा ना !

अच्छा - सभी विशेष टीचर्स भी बैठी हैं। एक पंथ दो कार्य किया है, टीचर्स बड़ी होशियार हैं। (मीटिंग भी है और बापदादा से मिलन भी हुआ)

अच्छा - अनेक कल्प में तो आये हो लेकिन जो इस कल्प में पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। जो भी पहली बार आये हैं चाहे आगे बैठे हैं, चाहे पीछे बैठे हैं, उन्हों को बापदादा विशेष स्नेह की दृष्टि भी दे रहे हैं और पदम गुणा मुबारक भी दे रहे हैं। बहुत अच्छे समय पर आ गये। आप देखो अभी भी इतनी संख्या है, आगे चलकर इतना भी नहीं मिल सकेगा। बैठना भी मिले, यह भी मुश्किल होगा। इसीलिए अभी आ गये, बहुत अच्छा किया। मुबारक हो। अच्छा - गर्मी लग रही है सभी को। (रंग-बिरंगी हाथ के पंखे सबके पास हैं) देखो भक्ति की यात्राओं से तो बहुत सुखी बैठे हो, मिट्टी में नहीं बैठे हो, दरी और चादर पर ही बैठे हो। (ड्रिल)

सेकण्ड में बिन्दी स्वरूप बन मन-बुद्धि को एकाग्र करने का अभ्यास बार-बार करो। स्टॉप कहा और सेकण्ड में व्यर्थ देह-भान से मन-बुद्धि एकाग्र हो

जाए। ऐसी कन्ट्रोलिंग पावर सारे दिन में यूज करके देखो। ऐसे नहीं आर्डर करो - कन्ट्रोल और दो मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, 5 मिनट के बाद कन्ट्रोल हो, इसलिए बीच-बीच में कन्ट्रोलिंग पावर को यूज करके देखते जाओ। सेकण्ड में होता है, मिनट में होता है, ज्यादा मिनट में होता है, यह सब चेक करते जाओ।

अभी सभी को तीन मास का चार्ट और पक्का करना है। सर्टीफिकेट लेना है। पहले स्वयं, स्वयं को सर्टीफिकेट देना फिर बापदादा देंगे। अच्छा।

चारों ओर के परमात्म पालना के अधिकारी आत्माओं को, परमात्म पढ़ाई के अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को, परमात्म प्राप्तियों से सम्पन्न आत्माओं को, सदा बिन्दी की विधि से तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा मेहनत से मुक्त रहने वाले मोहब्बत में समाये हुए बच्चों को, ज्वाला स्वरूप विशेष आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

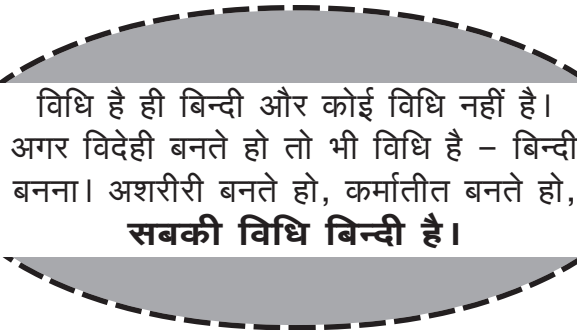
### दादी जी से

जो भी कुछ ड्रामा होता है - सभी का स्नेह बढ़ता है। निमित्त आत्माओं में सभी के जैसे प्राण हैं। इसलिए आपरेशन तो निमित्त है लेकिन सबके स्नेह और दुआओं का खजाना बहुत जमा हो गया। देखो, ड्रामा में मुरलियां भी कितनी समय प्रमाण रिपीट हुईं, बापदादा ने सभी को सकाश देने और लेने का पाठ पढ़ा लिया। समय अनुसार मुरलियां भी वही चली। बापदादा का तो प्यार है ही लेकिन हर एक बच्चों का भी दिल से प्यार है। परमात्म प्यार और ब्राह्मण आत्माओं का प्यार यह उड़ा देता है क्योंकि आपके साकार में थोड़ा समय भी मिलने का सभी को महत्व है। इतना समय मिलने के बजाए फरिश्ते मुआफ़िक यह मिलन - यह भी ड्रामा में पार्ट अच्छा रहा। अभी अपने को ब्रह्मा बाप के समान फरिश्ता रूप से मिलना, चलना और उड़ना - यही पार्ट चल रहा है। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा एकदम न्यारा, कर्मातीत अनुभव रहा। ऐसे आप सभी महारथियों को अभी ऐसे ब्रह्मा समान कर्मातीत अवस्था के समीप आना ही है। फालो फादर। एक सेकण्ड की आपकी दृष्टि कई घण्टों की प्राप्ति का अनुभव

करायेगी। अभी बोलने की, बैठने की भी मेहनत कम होती जायेगी। एकदम ब्रह्मा बाप ही दिखाई देगा। यह दादियां नहीं हैं, ब्रह्मा बाप है। अव्यक्त ब्रह्मा, अव्यक्त रूप से पालना दे रहे हैं और आप द्वारा साकार ब्रह्मा बाप की अनुभूति बढ़ती जायेगी। आपको दादी नहीं देखेंगे, ब्रह्मा देखेंगे। होता है ना ऐसे? अच्छा। कीमती रत्न हो। कीमती रत्नों की सम्भाल की जाती है।

आप निमित्त बनी हुई आत्माओं के उमंग-उत्साह से चारों ओर की आत्मायें उमंग-उत्साह से चल रही हैं क्योंकि एक दो के सहयोगी हो। जैसे बाप कहते हैं ना - हाज़िर हज़ूर। वैसे एक दो में हाज़िर - हाज़िर इस स्नेह और संगठन से शक्ति औरों को मिल रही है और दुआयें आपको मिल रही हैं। दोनों को प्राप्ति है। सबसे ज्यादा दुआओं का खजाना किसका जमा होता है? आपका। इसमें पहले मैं कहने में अभिमान नहीं है, स्वमान है। कुछ दो तो दुआयें मिलें।

अभी भी वैराग्य वृत्ति नहीं आई है, इसमें बापदादा भी देख रहे हैं, कब आरम्भ होता है। अभी तो साधन यूज़ करने के अनुभवी ज्यादा हैं। बापदादा जानते हैं कि जब तक ब्राह्मणों में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज नहीं हुई है तो विश्व में भी वैराग्य वृत्ति नहीं आ सकती। सारे विश्व में वैराग्य वृत्ति ही कुछ पापों से मुक्त करेगी। अभी शक्ति सेना को रहम आना चाहिए। अभी रहम कम है, सेवा है। लेकिन रहमदिल, वह अभी ज्यादा इमर्ज चाहिए। पाप कर्म का बिचारे बोझ उठाते जाते हैं। बोझ से झुकते जा रहे हैं। तो रहम आना चाहिए, तरस आना चाहिए। अच्छा। ओम् शान्ति।



# अव्यक्त सन्देश

(अव्यक्त वतन से प्राप्त अव्यक्त सन्देशों का संग्रह)

ब्रह्माकुमारी दादी हृदयमोहिनी जी एवं मोहिनी बहन द्वारा  
अव्यक्त वतन से बापदादा ने जो दिव्य सन्देश समय प्रति समय दिये हैं,  
यहाँ उसी का संकलन है।

(१९९४ से अप्रैल १९९९ तक)

6-8-94

## आत्मा को शक्तिशाली बनाने के लिए मन-शुद्धि की एकसरसाइज करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त  
त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज आप सबका सन्देश लेकर अमृतवेले बाबा के पास पहुँची, जैसे ही मैं बाबा के पास पहुँची तो बाबा के पास बहुत बड़ा सुन्दर फूल रखा हुआ था, फूल में बहुत सी पत्तियाँ थी और एक-एक पत्ते पर विदेश के भिन्न-भिन्न सेन्ट्रों व गीता पाठशालाओं के नाम लिखे थे और फूल की डंडी पर लिखा था यू.के., फूल के बीच में जो बूर होता है, उसमें यू.के. के विशेष निमित्त दादी जानकी, जयन्ति बहन, सुदेश बहन व जो भी निमित्त हैं, उन सभी के छोटे-छोटे फोटो थे। बाबा एक-एक पत्ते को प्यार से दृष्टि दे रहे थे और जो बीच में थे उन्हें भी दृष्टि दे रहे थे, तो साकार रूप में फ़रिश्ते रूप में सभी इमर्ज होते गये। पहले तो सिर्फ नाम थे फिर साकार रूप में जब इमर्ज हुए तो एक चन्द्रमा फिर दूसरा, तीसरा, चौथा चन्द्रमा, अर्ध चन्द्रमा के रूप में बहुत बड़ा संगठन बाबा के सामने इकट्ठा हो गया।

हम बाबा के साथ ही खड़ी थी, यहाँ चन्द्रमा की लाइट इतनी नहीं होती परन्तु वहाँ ५-६ चन्द्रमा एक दूसरे के पीछे बड़े सुन्दर लग रहे थे। बाबा प्यार से सभी को दृष्टि भी दे रहे थे और सभी के मस्तक पर वरदान का हाथ घुमा रहे थे। बाबा ने कहा क्या समाचार लाई हो ? मैंने सुनाया इस समय का विदेश का चक्कर यू.के. में आकर सम्पन्न हो रहा है, अभी हम मधुबन जा रहे हैं। बाबा ने कहा बच्ची, देखा मेरे अमूल्य रत्न कोने-कोने में कहाँ छिप गये थे, बिछुड़कर। बाबा ने कोने-कोने में छिपे हुए रत्नों को इकट्ठा किया है और रत्नों की कितनी सुन्दर रिमझिम हो गई है। डबल विदेशी भाई व बहनों को पूछना कि बाबा का कौन सा नाम विदेश सेवा से प्रैक्टिकल में सिद्ध हुआ है ? बाबा ने कहा विश्व-कल्याणकारी। पहले तो सिर्फ भारत की सेवा हुई। बाबा को भारत कल्याणकारी नहीं, विश्व-कल्याणकारी कहा जाता है। बच्चे विदेश से निकले तथा वहाँ सेवा करके बाबा का नाम बाला किया। विदेशी बच्चे जहाँ भी जाते उन्हें उमंग रहता कि बाबा का सन्देश देना है, स्थान ज़रूर बनाना है। यह बच्चों का उमंग विश्व-कल्याण कर रहा है और आगे भी विश्व-कल्याण का कार्य होता रहेगा, जैसे साइंस वाले जहाँ भी जाते अपने देश का झण्डा लहराते उसी प्रकार बाबा के बच्चे बाबा का झण्डा लहराते हैं। इसलिए डबल विदेशी बच्चों को बापदादा पद्मगुणा से भी ज़्यादा विशेष सेवा के रिटर्न में यादप्यार दे रहे हैं। बाबा ने सभी लाइले बच्चों को प्यार से नयनों व हृदय में समा लिया।

बाबा ने कहा-बच्ची देश-विदेश में कौन सी बात चल रही है ? संसार में कौन सी बात आवश्यक समझते हैं ?

बाबा ने बताया आज संसार में सभी मानते हैं कि एक्सरसाइज़ बहुत ज़रूरी है। दवा छूटती जायेगी, एक्सरसाइज़ बढ़ती जायेगी।

तुम बच्चों की एक्सरसाइज़ कौन सी है ? मन की एक्सरसाइज़ तुम लोगों को आती है ? मन की एक्सरसाइज़ उसी प्रकार इज़ी हो जाए जैसे शरीर की। जैसे हाथ को जहाँ इशारा देंगे वहाँ टिक जायेगा, उसी प्रकार मन व बुद्धि भी ऐसी एक्सरसाइज़ के अनुभवी हो जाएं तो जहाँ भी जिस स्थिति में जितना

समय स्थित होना चाहो हो जाओ—कभी बीजरूप, कभी फ़रिश्ता रूप, कभी कर्मयोगी।

जब भी फ़ुर्सत मिले मन की एक्सरसाइज़ करते रहो तो आत्मा शक्तिशाली हो जायेगी। यह एक्सरसाइज़ आती है ? करते हो ? अच्छा अभ्यास हो गया है या नहीं ? जब भी मन या बुद्धि फ़्री हो तो यह एक्सरसाइज़ करो इसके लिए स्थान ढूँढने की भी ज़रूरत नहीं है।

बाबा ने सभी बच्चों को आकार रूप में इमर्ज किया तथा कहा डबल विदेशी, राजऋषि, वरदान के अधिकारी बच्चे—ऐसे कहते बाबा ने सभी बच्चों को यादप्यार दिया। आप सबकी सेवा व उमंग-उत्साह पर बाबा खुश थे। उमंग-उत्साह में सदा उड़ते रहो और दूसरों को भी उमंग-उत्साह के पंख देकर उड़ाओ।

22-10-94

## शेवा का प्रोग्राम और स्व प्रोग्रेस दोनों के थैलेन्स से थ्लैसिंग की प्राप्ति

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त  
त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो सामने से ही बापदादा मधुर मुस्कान से स्नेही मूर्त से बोले, आओ बच्ची क्या-क्या नया समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आजकल तो बहुत अच्छी मीटिंग चल रही है। सभी को ज्ञान सरोवर की ओपनिंग का बहुत ही उमंग-उत्साह, खुशी है। बापदादा बोले – यह ज्ञान सरोवर तीन विशेषताओं सम्पन्न त्रिवेणी सरोवर है।

१. एक तो ब्राह्मण बच्चों की स्व-उन्नति और एशलम का स्थान है।

२. दूसरा विश्व सेवा के सर्व प्रकार की आत्माओं की सेवा में सदा बिज़ी रहने के साधन का स्थान है।

३. तीसरा अनेक सहयोगी आत्माओं की जन्म भूमि का स्थान है। इसलिए आदि से हर ब्राह्मण की बूंद-बूंद के सहयोग से सरोवर बना है। बच्चों ने प्रोग्राम भी अच्छा बनाया है। लेकिन प्रोग्राम वा प्लैन को सदा प्लेन बुद्धि बन प्रैक्टिकल में लाने से अर्थात् प्रोग्राम और स्व-प्रोग्रेस के बैलेन्स से ही सर्व की, बाप की ब्लैसिंग से सहज सफल होना है। आजकल समय के परिवर्तन की गति तीव्र देख रहे हो तो ब्राह्मणों को भी संस्कार मिलन से संसार परिवर्तन की गति को तीव्र करना पहली सेवा है।

बापदादा हर्षित हो रहे हैं कि सब बच्चे विघ्न-विनाशक बन उमंग-उत्साह से सम्पन्नता की ओर उड़ रहे हैं और उड़ते रहेंगे। दोनों मीटिंग के बच्चों को सेवा के सहयोगी बनने, स्नेह शक्ति से समाप्ति की मुबारक हो। एवररेडी बनने की मुबारक हो। उसके बाद बाबा बोले, बच्चे विदेश में भी जो वैल्यूज की टॉपिक पर स्व प्रति और औरों के प्रति प्रोग्राम्स चल रहे हैं, यह सेवा भी अच्छी दोनों की उन्नति का साधन है। बापदादा देख रहे हैं कि सब अथक बन उमंग से कर रहे हैं। इसलिए सब बच्चों को नाम और विशेषता सहित मुबारक हो। आगे भी स्व और सेवा का बैलेन्स रखते, संगठन को शक्तिशाली बनाए एक दो को हिम्मत देते एक दो के बिचारों के समीप आना है क्योंकि ब्राह्मणों के संगठन की समीपता ही सफलता का साधन है। तो डबल विदेशी बच्चों को बापदादा विशेष बाप के स्नेह और सेवा के स्नेह का रिटर्न दिलाराम रूप से दिल का अविनाशी स्नेह दे रहे हैं। सदा मर्यादा पुरुषोत्तम बन संगठन को परिपक्व करते चलो।

इसके बाद बाबा ने भारत के बच्चों को याद किया। बाबा बोले भारत के बच्चों का भी जो परिवर्तन का कार्य चला उसको देख बाप खुश हैं। मैजारटी टीचर्स और विद्यार्थियों ने आज्ञाकारी बनने का पार्ट अच्छा बजाया और लाभ दिया और लिया। साथ-साथ हर बच्चे को अपनी मनोवृत्ति का चार्ट देखने का



दर्पण भी मिला कि कितना सेवा स्थान वा सेवा के साथियों, साधन के लगाव से उपराम वृत्ति में स्थित रह सकते हैं। फिर भी आज्ञाकारी बन परिवर्तन कर लिया, इस वरदान के अधिकारी बन गये और बनते रहेंगे।

इसके बाद बापदादा ने सर्व मधुबन निवासियों को याद किया। उसमें भी विशेष ज्ञान सरोवर वालों को याद देते बाबा बोले निमित्त बनी हुई आत्माओं को तो बापदादा अथक और तीव्रगति के कार्य के मदद की मालिश सदा करते रहते हैं। बच्चों ने भी हिम्मते बच्चे मददे बाप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया है इसलिए पद्मगुणा स्नेह सम्पन्न मुबारक हो। साथ में मधुबन निवासी तो बैकबोन हैं ही और ४ भुजायें – सेवाधारी, हॉस्पिटल, तलहटी, आबू निवासी सबके सहयोग से सफलता है और रहेगी। हर एक अपने नाम सहित विशेष यादप्यार स्वीकार करें।

लास्ट में बाबा ने दादी जी, जानकी दादी और अन्य दादियों को, विशेष भाईयों को भी बड़े स्नेह से दुबारा याद दी और कहा निमित्त आत्माओं के उमंग और स्नेह, सम्मान के आधार से ही सफलता समीप आनी है। विजय तो निश्चित है ही। खास दादी और दादी जानकी को इमर्ज करके स्नेह की दृष्टि दी और कहा कि निमित्त बनने के कारण दुआओं की पात्र आत्मायें हैं। ऐसे रूह-रूहान करते मिलन मनाते मैं स्थूल वतन पहुँच गई।

23-1-95

## सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्षफल का अनुभव करना

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त  
त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज विशेष बापदादा के पास अपनी मीठी दादी जानकी का सन्देश लेकर गई और बापदादा को लंदन के म्यूज़ियम की ओपनिंग की खुशखबरी सुनाई।

बापदादा बहुत मीठा-मीठा मुस्कराये और ऐसे लगा कि बापदादा कुछ समय के लिए लंदन ही पहुँच गये। बाबा के नयनों में बच्चे समाये हुए थे और सबको बहुत-बहुत स्नेह और मुबारक की दृष्टि दे रहे हैं। उसके बाद बाबा बोले, बच्चों ने हिम्मत बच्चे मददे बाप का अच्छा एग्जाम्पल दिखाया है। बापदादा यह देख रहे हैं कि बच्चों ने दिल से सेवा का साधन बनाया है। जैसा नाम है “इण्टरनेशनल इन्फॉर्मेशन सेन्टर” वैसे ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता की इन्फॉर्मेशन देने के लिए यह म्यूज़ियम निमित्त बनेगा। अनेक आत्माओं के टेन्शन समाप्त हो अपने बाप की तरफ अटेन्शन जायेगा। अनेक सुख-शान्ति-खुशी के लिए भटकने वाली आत्माओं को सच्चा सहारा मिलेगा। अनेक आत्माओं के भाग्य का सितारा चमकेगा। साथ-साथ बच्चों को भी सन्देश देने का गोल्डन चांस मिलेगा क्योंकि सेवा करना अर्थात् प्रत्यक्ष फल अनुभव करना। यह रूहानी खज़ाना बाँटना अर्थात् बढ़ाना है। इसलिए सर्व बच्चों को बापदादा इनएडवांस सेवा की मुबारक दे रहे हैं। साथ में सर्व बच्चों ने सहयोग दिया है तो सर्व को यादप्यार दे रहे हैं क्योंकि बाप देख रहे हैं कि हर एक बच्चे ने अपना सहयोग दिया है। कोई ने तन से, कोई ने धन से, कोई ने मन की शुभ भावना से, कोई ने सहयोग के भाव अर्थात् मन की वृत्ति वा दृष्टि द्वारा दिया है। इसलिए सर्व के सहयोग से सेवा का साधन बनना है और सेवा तो होनी ही है। सभी विदेश के सेन्टर्स के बच्चों को भी शुभ भावना के सहयोग की मुबारक हो।

24-6-95

## “प्रत्यक्षता होना अर्थात् संगमयुग की समाप्ति होना”

(मीठी जगदम्बा माँ के स्मृति दिवस पर – अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश)

आज बापदादा के पास विशेष आप सबकी यादप्यार और साथ में हमारी

मीठी सर्व की प्यारी बड़ी दादी का और सबके दिल का संकल्प मीठी मम्मा के प्रति यादप्यार लेकर वतन में गई। बापदादा ने दूर से ही बहुत मीठा मुस्कराया और कहा – आओ मेरे मीठी मम्मा के आदि साथी स्थापना के आदि रत्न और ऐसे कहते ही हमारी पुरातन दादियां इमर्ज हो गई। बाबा बीच में बैठे थे और एक तरफ़ मम्मा थी, दूसरी तरफ़ दीदी और सामने दादी जी, दादी जानकी और सब दादियां थी। मम्मा सबसे मीठी-मीठी मुस्कान से मिलन मना रही थी और बोली आफरीन है आप मीठे साथियों की जो साकार रूप में शक्तियों की प्रत्यक्षता में हीरो पार्ट बजा रहे हो। हमारा तो गायन ही है कि सरस्वती गुप्त है तो वही पार्ट बजा रही हूँ। दीदी बोली – बाबा हमारा पार्ट भी आपने आदि (ओम मण्डली) में गुप्त चतुर-सुजान रूप से रखा। इन सखियों के समान प्रत्यक्ष नहीं रखा तो अब अन्त में भी ये प्रत्यक्ष स्टेज पर हैं और हम गुप्त पार्ट बजा रहे हैं। ऐसे आपस में सखियों की मीठी रूह-रूहान चल रही थी और बापदादा मुस्कराते हुए हर एक को दृष्टि दे रहे थे। यह दृश्य चलते दादी और दादी जानकी ने बड़े हुज़्ज़त से बाबा को कहा “बाबा, अब कब तक ये गुप्त रहेंगे?” इन्हों को प्रत्यक्ष तो होना चाहिए! बाबा मुस्कराये और बोले बच्चे इन्हों को भी उमंग बहुत आता है कि अब कुछ करें लेकिन प्रत्यक्षता होना अर्थात् संगमयुग की समाप्ति होना, तो बोलो अभी समाप्ति के लिए आपके सर्विस साथी सम्पन्न बने हैं? सर्व राज्य-अधिकारी, राज्य-परिवार, प्रजा सब रेडी हैं? बापदादा तो सेकण्ड में ताली बजायेगा और पर्दा खुल जायेगा लेकिन अभी तो बच्चे कभी हलचल की लहरों में, कभी आराम से, कभी तीव्रगति से भिन्न-भिन्न रूप से चल रहे हैं। अचल अडोल बने हैं? क्योंकि सभी बच्चों की नम्बरवार सम्पन्न स्थिति ही समाप्ति की घण्टी बजायेगी। जैसे घड़ी की घण्टी सुईयों के आधार पर खुद ही समय पर बज जाती है, ऐसे बेहद ड्रामा की घड़ी में सम्पन्नता की सुई समाप्ति की सैटिंग है। तो बोलो, सैटिंग हो गई है? क्योंकि प्रत्यक्षता, चाहे आप साकार रूप में हो व एडवांस सेवा अर्थ जाने वाले बच्चे, दोनों की एक ही समय साथ में होने वाली है। अब आप कहो हाँ जी

बाबा, और सेकण्ड में कमाल देखो, ऐसे रूह-रूहान कर रहे थे तो सभी बच्चे हँसते-हँसते कह रहे थे कि बाबा, आप तो हो ही चतुर-सुजान। बहुत होशियारी से अपने को छुड़ा लेते हो, हमारे ऊपर ही रख देते हो। बाबा बोले-बच्चे, आप ही बताओ कि इस बेहद घड़ी की सुईयां कौन हैं – बाबा या बच्चे? तो आप सुईयां जब तक सम्पन्नता के १२ बजे तक नहीं आती तो समाप्ति की घण्टी कैसे बजे? बाबा तो बार-बार आपसे ही पूछते हैं कि कब घण्टी बजाते हो? ऐसे ही मम्मा और सब मुख्य अलौकिक सेवाधारी एडवांस पार्टधारी आत्मायें और सब दादियां बहुत रमणीक रूप से एक दो से मिल रहे थे और चिट-चैट कर रहे थे, जो दृश्य बहुत ही प्यारा था और उसके बाद सभी ने बापदादा के साथ बहुत अच्छी पिकनिक की और ये दृश्य समाप्त हो गया।

उसके बाद बाबा को दादी जानकी की तरफ से लण्डन के सेवा की खुशखबरी सुनाई कि त्रिमूर्ति सेवाकेन्द्र बहुत अच्छी सेवा कर रहे हैं। बाबा बोले, त्रिमूर्ति बाप द्वारा मास्टर त्रिमूर्ति बच्चों को तीनों सेवा स्थान त्रि-वरदान सम्पन्न मिले हैं। इसीलिए तीनों स्थानों के सेवा के वृद्धि की मुबारक हो, मुबारक हो। हर एक स्थान की विशेषता अपनी-अपनी है। ग्लोबल हाउस, ग्लोब की आत्माओं को ज्ञान की गुह्यता और योग की महीनता तरफ आकर्षित कर रहा है और करता रहेगा। साथ-साथ बच्चों को भी नये नये प्लैन मनन करने और याद सहित सेवा में मग्न रहने का अनुभव करा रहा है। ब्रह्माकुमारियां भी हाइएस्ट अथारिटी हैं ये प्रत्यक्ष कर रहा है - रिट्रीट हाउस जो आत्माओं को आत्मिक मन की रेस्ट, मन के अन्तर्मुखता का और बाप के समीप सम्बन्ध में आने की अनुभूति करा रहा है। अनुभव कराने का अनुभूति स्थल है। दो वर्ष की रिजल्ट को देख बापदादा सेवा के निमित्त बच्चों को सेवा की मुबारक दे रहे हैं। नये-नये रत्न जो पैदा हुए हैं उन्हीं को भी पद्मापद्म भाग्यवान बनने की बर्थ डे मुबारक दे रहे हैं। सदा उड़ते रहो और उड़ाते रहो – इस विधि से वृद्धि करते रहो। बाकी छोटा सा लेकिन सेवा में बड़ा निमित्त बना हुआ म्यूज़ियम भी चेतन सन्देश वाहक है। परिचय और प्रत्यक्षता के निमित्त है। नाम फैलते-फैलते

नाम बाला हो ही जायेगा। वहाँ के छोटे और अति सिकीलधे लाड़ले बच्चों को अविनाशी भव के साथ स्नेह सम्पन्न मुबारक हो। सदा फास्ट और फर्स्ट आने के लक्ष्य को सदा याद रखना। ऐसे सभी बाबुल के नये-नये खुशबूदार फूलों को बापदादा ने बहुत-बहुत यादप्यार दी। बाद में सभी लण्डन के सेवाधारी बच्चों को भी खास याद दी और बोले लंदन वालों ने हिम्मत और हुल्लास से हाँ जी का पाठ पक्का किया है, इसीलिए जहाँ हिम्मत है वहाँ बाप की मदद का वरदान सदा सहज मिला है और मिलता रहेगा। साथ में सर्व विदेश के भाई बहिनों को बहुत-बहुत यादप्यार दी और बोले – सभी उमंग-उत्साह से डायमण्ड बनने और डायमण्ड जुबली मनाने में आगे बढ़ रहे हैं। एक दो से कम नहीं हैं, एक-दो से आगे हैं। इसीलिए सब अपना-अपना नाम विशेष जान विशेष याद स्वीकार करना जी। साथ में भारत के बच्चों को भी बापदादा ने दिल व जान सिक व प्रेम से याद किया और कहा कि भारत में भी योग शिविर की अच्छी सेवा द्वारा अच्छे-अच्छे सहयोगी स्नेही आत्मायें बना रहे हैं। और भारत से ही शिव शक्तियों का झण्डा लहराने का अच्छा लक्ष्य रख प्लैन और प्रैक्टिकल कर रहे हैं। भारत के चारों ओर के खुशनुमः खुशनसीब बच्चों को खुशी के सर्व खज़ानों सम्पन्न यादप्यार और नमस्ते।

7-8-95

## ‘विश्व-रक्षक मेरा भाथी है – इसी रूहानी फ़ख़ुर में रहो’

(रक्षाबन्धन प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

विश्व-कल्याणकारी बापदादा के सर्व लाडले, राईट हैण्डस बच्चों को त्रिमूर्ति बाप की त्रिमूर्ति रूप से सेवा करने की राखी मुबारक हो।

पहली स्व-रक्षक, दूसरी विश्व की आत्माओं के रक्षक, प्रकृति के रक्षक साथ में आप सबके रक्षक तो डायरेक्ट बापदादा हैं ही। हर समय हर कर्म में यही

अनुभव करो कि विश्वरक्षक बाप की रक्षा का हाथ सदा हमारे मस्तक पर है ही है और इसी रूहानी फ़ख़ुर में रहो कि “विश्वरक्षक ही मेरा सदा साथी है”। बोलो, जहाँ सदा रक्षक बाप है वहाँ और कुछ विघ्न नज़दीक आ सकते हैं? इसीलिए निर्विघ्न बन रक्षक के साथ उड़ते चलो और बापदादा की समय प्रति समय कराई हुई प्रतिज्ञाओं को प्रत्यक्ष रूप में लाते चलो।

सभी बच्चों को डायमण्ड जुबली मनाने का उमंग-उत्साह तो है ही। तो अवश्य बापदादा के दिल पसन्द डायमण्ड बन स्वयं को भी और विश्व को भी चमकाते रहो। बाप के सर्वश्रेष्ठ आशाओं के दीप जगाते चलो, अच्छा हर बच्चे को विशेष बाप के सहयोग की दुआओं सहित यादप्यार और मुबारक।

21-9-95

## हिम्मत रखने से हिम्मत के फल की प्रत्यक्ष प्राप्ति

(अव्यक्त बापदादा का मधुर दिव्य सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत रमणीक रहस्य युक्त मुस्करा रहे थे और मैं भी मुस्करा रही थी कि बाबा ने कितने समय के बाद अपने पास बुलाया। बापदादा तो सब दिल की बात जानते हैं लेकिन जानते भी भोलानाथ बन पूछते बच्ची, क्या सोच रही हो? ड्रामा में आज ही मिलना था तो मिल रहे हैं। मैं तो कुछ बोल न सकी, मुस्कराती रही। फिर बाबा ने समाचार पूछा, मैंने सुनाया – बाबा डायमण्ड जुबली के निमित्त देश-विदेश के बच्चों ने मिलकर मधुबन में कानफ्रेन्स, डायलाग आदि के सब प्रोग्राम बहुत उमंग-उत्साह से बनाए हैं। तो बाबा बोले, बापदादा बच्चों को देख हर्षित हो रहे थे कि बाप से और बाप की श्रीमत् से कितना स्नेह है! सबने हिम्मत और हुल्लास से प्लैन बनाया यह देख बाप भी दिल से शाबास दे रहे हैं।

अब बोलो, चतुर-सुजान बाप से क्या बोलें। चुप रह मुस्कराती रही। उसके बाद फिर बाबा को सुनाया कि दादी जी, मोहनी बहन, ईशू बहन विदेश यात्रा पर जा रहे हैं। तो बाबा बोले, ये त्रिमूर्ति विशेष सबको तीन अनुभव करायेंगी। दादी शक्ति और बापदादा के स्नेह के समीपता का अर्थात् शक्ति और स्नेह के बैलेन्स की ब्लैसिंग का अनुभव करायेंगी, वरदान देंगी। मोहनी बच्ची तो है ही रमणीक बच्ची, तो सबको सदा हर्षित रहने का राज़ बताए खुशी का विशेष अनुभव करायेगी और ईशू बच्ची तो सदा ज्ञान रत्नों में तथा सम्पत्ति में भरपूर रहती है। इसीलिए सभी को सम्पन्नता का और साथ-साथ बाप से और सेवा से कान्फ़ीडेंशियल रहने का अनुभव करायेगी। यह सटिफ़िकेट तो साकार बाप द्वारा भी बच्ची को मिला हुआ है। तो तीनों अपनी-अपनी विशेषता से सब तरफ उमंग-उत्साह में उड़ायेंगी, दिल से नचायेंगी।

बापदादा सर्व डबल विदेशी बच्चों के सेवा के उमंग से बहुत खुश हैं कि सबने यथा शक्ति वैरायटी रमणीक रूप से मौरल-वैल्युज़ (Moral-Values) का कार्य बहुत अच्छा किया।

अमेरिका वालों ने भी विशेष प्यार से हिम्मत रखी और हिम्मत दिलाई है इसलिए सेवा का प्रत्यक्ष फल स्वरूप ये त्रिमूर्ति विदेश यात्रा पर पहुंच रही है।

भारतवासी बच्चे भी चारों ओर भिन्न-भिन्न सेवा के स्थानों से आगे बढ़ते जा रहे हैं और आगे बढ़ते जायेंगे। उसके बाद चीन में जो सभी ने बहुत लगन से और युक्ति से सेवा की है उसके लिए खास उन बच्चों को बाबा ने मीठी दृष्टि द्वारा यादप्यार दी। और कहा कि कोरिया में भी निमित्त बच्ची ने अच्छा चांस लिया और जगदीश बच्चे ने भी थोड़े समय में सर्विस में सफलता का अनुभव किया और कराया। ऐसे बाबा एक एक बच्चे को इमर्ज कर याद दे रहे थे।

उसके बाद हमारी तबियत का समाचार पूछा – हमने कहा बाबा मधुबन में सभी बच्चों ने स्नेह से आपके साकार में आने का आह्वान किया है, सभी ने विशेष योग किया है।

बाबा बोले, बच्ची बाबा जानते हैं कि मधुबन निवासी व सभी बच्चों का बाप से मिलन मनाने का कितना स्नेह है। बापदादा के पास सबका संकल्प और दिल का प्यार अवश्य पहुँचता है इसलिए देश विदेश के चारों ओर के बच्चों को अलग-अलग नाम सहित बापदादा यादप्यार दे रहे हैं।

18-7-96

## एक थाप दूभरा न कोई - इश अनुभव से सेवाओं का विस्तार

(हृदयपुष्पा दादी के निमित्त भोग तथा दिव्य सन्देश)

आज जब दादी हृदयपुष्पा के प्रति विशेष भोग लेकर वतन में पहुँची तो क्या देखा कि दादी हृदयपुष्पा बाबा के साथ बैठी कुछ बातचीत कर रही थीं, मैं भी जब सामने जाकर पहुँची तो दोनों (बाबा और दादी) ने मुझे देखा और बाबा बोले, देखो बच्ची, आपके लिए मधुबन से यह बच्ची ब्रह्मा भोजन लेकर आई है। तो दादी ने देखा और मुस्कराई। मैं भी जाकर दोनों के पास बैठ गई। मैंने कहा मधुबन से सभी दादियों ने, सभी भाई बहिनों ने आपको बहुत-बहुत यादप्यार दिया है और ब्रह्मा भोजन भेजा है। तो दादी (हृदयपुष्पा) मुस्कराई और कहा दादी ठीक हैं? हमने कहा हाँ दादी तो बिल्कुल ठीक हैं। आप कैसे हो? तो कहा मैं तो अभी बिल्कुल ठीक हूँ। बाबा के पास बैठी हूँ। मैंने कहा दादी आप बहुत जल्दी आ गई। तो बोली मैं तो तैयार बैठी थी कि जब बाबा बुलाये तब आ जाऊँ, मेरी यही दिल थी कि मैं एक बार बड़ी दादी से जरूर मिलूँ तो दादी मेरे से मिलने आईं, सब लेन-देन की। फिर तो मैं तैयार बैठी थी, बाबा के बुलाने का ही इंतजार कर रही थी।

फिर मैंने कहा अभी आप बाबा से क्या बातें कर रही थी? तो मुस्कराने लगी। कहा बाबा से पूछो। मैंने बाबा से पूछा तो बाबा ने कहा इनसे ही पूछो।



तो फिर मुस्कराने लगी। मैंने कहा दादी क्या प्राइवेट बात कर रही थी। बोली हॉं प्राइवेट बात है। बाबा से ही पूछो। तो बाबा ने कहा बच्ची कहती है – बाबा अभी मैं कहीं नहीं जाऊंगी, जैसे आप ऊपर बैठकर सेवा करते हो, ऐसे मैं भी यहाँ से सेवा करूँगी। यही विशेष मेरे से मीठी चिटचैट कर रही थी कि हमें अभी यहाँ ही रहकर सेवा करनी है। और बाबा कहते कि बच्ची तुम तो आदि रत्न हो, तुमको तो एडवांस पार्टी में जाकर बहुत बड़ी सेवा करनी है। बाबा तो आपका साथी है ही, बाबा ऊपर से सेवा करेंगे, बाकी आपको अभी नीचे जाकर सेवा करनी है। बाबा तो अभी तन ले नहीं सकते, तो कह रही है कि मैं क्यों तन लूं! बाबा ने कहा बच्ची अभी तो तुम्हारा सब हिसाब-किताब चुक्त हो गया, बाकी तुम्हें अभी सिर्फ निमित्त नई दुनिया की स्थापना में मददगार बनना है। तो बोली बाबा छोटा बच्चा क्या सेवा करेगा। बाबा ने कहा छोटे बच्चे तो बहुत सेवा करते हैं, आप आँख खोलेंगी, मुस्करायेंगी तो लोगों को साक्षात्कार होगा।

फिर हमने कहा दादी, आपको तो बाबा बहुत बड़ी सेवा के लिए भेज रहे हैं। तो बोली अच्छा जैसे बाबा कहे, उसमें ही मैं राज़ी हूँ।

बाबा ने कहा यह बच्ची बहुत भोली है। इस बच्ची का शुरू से ही सिवाए बाबा के कुछ नहीं रहा। बाबा, बाबा ही था। इसने अपने जीवन में शिवबाबा को ही प्रत्यक्ष किया, देखो कितना बड़ा शिवलिंग बनाया। दूर से जो देखेगा उसे शिव बाबा ही दिखाई देगा। जैसे बच्ची ने शिवबाबा को अपने अन्दर रखा ऐसे यादगार भी शिवबाबा का बनाकर आई। यह बहुत सयानी बच्ची है जो केवल बाबा का ही यादगार नहीं बनाया, इसने तो बाप-दादा और अपनी सखियों का भी यादगार बना दिया। यह है बाप से प्रीत, दादा से प्रीत और परिवार से प्रीत। इसी की निशानी राजयोग भवन में बनाकर आई है। यह है राजयोगी, राजऋषि आत्मा, इसने एक बाबा दूसरा न कोई, यह सबूत दिया जो आज इतनी सरलता, सहजता से कनार्टक ज़ोन में सेवाओं का विस्तार हुआ। जिससे कितने बच्चे ज्ञान में आ गये। इनकी ही शुभ भावना, शुभ कामना से इतनी सेवा की वृद्धि हुई है। विस्तार हुआ है। तो यह सुनते हुए बोली, कि बाबा मैंने थोड़ेही

कुछ किया, यह तो आपने कराया। तो बाबा बोले ऐसे ही अभी भी सेवा पर भेज रहा हूँ। तो फिर बोली बाबा, अभी योग भवन कौन सम्भालेगा। तो बाबा ने कहा अच्छा आप ही बताओ किसको भेजें। तो बोली नहीं बाबा आप ही बताओ कि योग भवन किसको सम्भालने के लिए देंगे? बाबा ने कहा बच्ची, अच्छा फिर बतायेंगे। ऐसे बहुत हर्षित मुख होकर आपस में चिटचैट चल रही थी।

फिर बाबा ने कहा देखो मधुबन से ब्रह्मा भोजन आया है, हमने कहा खास दादी ने यादप्यार दिया है और भोग भेजा है। तो कहने लगी दादी ने भेजा है... फिर बाबा ने उसे बहुत प्यार से दृष्टि देते हुए गिट्टी खिलाई, जल पिलाया। तो दादी जैसे प्यार में खो गई और कहा सभी को हमारी बहुत-बहुत याद देना। फिर बाबा दृष्टि देने लगे और दादी एकदम सूक्ष्म होते दूर-दूर जैसे लाइट में बिन्दू स्वरूप होते समाती गई। फिर बाबा ने हमें भी वही साइलेन्स की दृष्टि देते हुए नीचे भेज दिया।

8-11-96

## दादीपावली – तीन स्मृतियों का यादगार

(अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज विशेष बापदादा ने बुलाया और मिलन मनाते पूछा, बच्ची शान्तिवन का क्या समाचार है? हमने बोला बाबा सब निमित्त बने हुए बच्चे तलहेटी वाले, मधुबन वाले सब बहुत जोर-शोर से तैयारी में लगे हुए हैं। बाबा बोले, बच्ची बापदादा भी चक्कर लगाते रहते हैं और जो भी अलग-अलग डिपार्टमेंट सम्भालने वाले हैं उन सबको प्यार और दिल से मुबारक देते रहते हैं कि हर एक कितना उमंग-उत्साह और निश्चयबुद्धि बन कार्य में लगे हुए हैं। बापदादा ने खास आज उन बच्चों को याद कर अरजेन्ट बुलाया।

बाबा देख रहे हैं कि बच्चे छोटी-छोटी बातों से न्यारी स्थिति में और बाप की प्यारी स्थिति से तैयारी कर रहे हैं। ऐसे बच्चों को बापदादा आफरीन दे रहे हैं कि सदा ऐसे न्यारी प्यारी स्थिति में रहो और तैयारी करते आगे बढ़ते चलो। “निश्चय की विजय है ही”। साथ-साथ बापदादा बच्चों को दीपावली सो यज्ञ स्थापना की भी बधाईयाँ दे रहे थे। बाबा ने कहा देखो, बच्ची दीपावली तीन स्मृति की यादगार है –

१. वर्तमान संगम पर ज्योति जगाने की
२. फिर भविष्य ताजपोशी की और
३. भक्ति मार्ग के लक्ष्मी पूजा व लक्ष्मी आह्वान की।

तो तीन यादगार का कम्बाइण्ड दिन है। त्रिमूर्ति बाप भी विशेष एक-एक बच्चे को ऐसे उत्सव की नाम सहित याद-प्यार दे रहे हैं। अगर एक-एक का नाम लें तो अनगिनत बच्चे हैं। ऐसे कहते बाबा के नयनों में जैसे एक-एक बच्चा समाया हुआ था और बापदादा सबको बहुत मीठी-मीठी याद प्यार दे रहे थे। ऐसे शान्तिवन वालों को याद-प्यार देते बापदादा ने साकार वतन में भेज दिया। ऐसे लग रहा था जैसे अर्जेन्ट काल जल्दी समाप्त हो गई। साथ में स्थापना के समय पर आई हुई दादियों को भी खास न्यारे अलौकिक बर्थ डे की यादप्यार और बधाईयाँ दी।

13-3-97

## “अचानक के हर दृश्य में एयररेडी रहो”

(११ मार्च १९९७ दादी चन्द्रमणि जी ने पुराने शरीर का त्याग किया,  
उनके निमित्त विशेष भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश)

आज अपनी दादी चन्द्रमणि के प्रति वतन में उनसे मिलने जाना हुआ। जैसे ही मैं वतन में पहुँची तो बाबा को अकेले ही देखा, बाबा बहुत ही रहस्ययुक्त मीठा मुस्करा रहे थे और बाबा ने दूर से ही नयनों से स्वागत करते हुए कहा,

आओ बच्ची आओ। बेहद के खेल में खेल देखते सोच रही हो क्या ? तो मैंने कहा बाबा आपने तो वण्डरफुल ड्रामा दिखा दिया। जो स्वप्न में भी नहीं था, वह आपने साकार में कर लिया। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बच्ची अभी समय प्रमाण बाबा ने दो-तीन बार इशारा दिया है – कि अभी ऐसे ही जो भी दृश्य होंगे, वह अचानक ही होंगे। जब समय पूछकर नहीं आना है, समाप्ति पूछकर नहीं आनी है तो जो भी दृश्य होंगे, चाहे सेवा में, चाहे जो भी ब्राह्मण परिवार में वह सब अचानक होंगे। तो यह जो बच्ची का पार्ट चला, यह दो बातों का सिम्बल है।

एक तो अचानक में हर आत्मा को कैसे एवररेडी रहना है। बाबा ने कहा देखो, सेवा में भी आपने देखा कि दिल्ली के प्रोग्राम में सब अचानक ही सफलता हुई और तब से बाबा के इशारे प्रमाण जो भी बातें हो रही हैं वह अचानक ही हो रही हैं और आगे चलकर भी अचानक ही होनी हैं। तो एक सिम्बल बच्ची का अचानक एवररेडी का देखा। अन्त में उसको कोई सेवा का भी याद नहीं आया। नहीं तो सेवास्थान पर थी और दिन तक सेवा करती रही, सेवा के संस्कार ले गई लेकिन अन्त घड़ी में अपने योगबल से शरीर का थोड़ा बहुत जो हिसाब था, उसे चुक्त्तू करने में और याद में एवररेडी के पार्ट में पास हो गई। तो बाबा ने कहा एक तो बच्ची का सिम्बल है – अचानक एवररेडी रहने का और यह एक्ज़ाम्पल है कि अन्त में कोई भी बात याद नहीं आवे।

दूसरी बात – बाबा ने कहा कि यह बच्ची का एक्ज़ाम्पल, समय की समीपता की लाल झण्डी दिखा रहा है। समय अभी समीप तो है लेकिन अचानक ही होना है। तो एक अचानक एवररेडी का और दूसरा समय के समीपता की लाल झण्डी बच्ची ने दिखाई। साथ में बाबा ने यह भी कहा कि बच्ची, अच्छी सहज पास होकर मेरे पास आई। जब यह बाबा बोल रहे थे – तो बाबा ने कहा बच्ची आओ, तुम्हारी सखी मिलने आई है, आओ। पहले दादी बाबा के साथ नहीं थी लेकिन जैसे ही बाबा ने कहा आओ बच्ची, तुम्हारी सखी आई है, तो फ़ौरन ही दादी को बाबा के साथ देखा। तो दादी ऐसे मुस्करा

रही थी, जैसे साकार में मुस्कराने की सूरत सदा ही थी, लेकिन ऐसे मुस्करा रही थी जो उनके चेहरे से लग ही नहीं रहा था कि मैं कोई ऐसे शरीर से अलग होकर आई हूँ। जैसे यहाँ कहती थी ना गुलज़ार तुम कैसे हो! ऐसे ही बात की। मैं गम्भीर थी और वह मुस्करा रही थी। तो उसने कहा देखा गुलज़ार, मैं सोचती थी कि यह वतन में कैसे जाती हूँ, प्रैक्टिकल में बाबा से कैसे मिलती हूँ – हम भी योग में तो जाती थी। लेकिन अभी मैं भी वतन का अनुभव कर रही हूँ। बाबा ने बुलाया, आ जाओ बच्ची, मैं आ गई। मुझे तो बड़ा मज़ा आ रहा है। वह ऐसे बोल रही थी जो जरा भी उसकी शक्ल में, बुद्धि में नहीं था कि मैं एडवांस पार्टी में आ गई हूँ। इसी रूप से दादी हमसे मिली। तो जब हम आपस में हम रूहरिहान कर रहे थे, तो बाबा यह रूहरिहान सुनते मुस्करा रहे थे। तो मैंने बाबा को कहा कि यह अचानक ही क्यों बुलाया! तो बाबा ने कहा कि ब्रह्मा बाबा को जब बुलाया था या दूसरों को बुलाया तो क्या बताकर बुलाया था! सभी अचानक आये हैं। अभी तो बाबा इशारा दे रहा है कि जितना आगे बढ़ेंगे उतना अचानक ही असम्भव से सम्भव होना है। जो ख्याल में भी नहीं होगा, वह अचानक होना है।

मैंने दादी को कहा कि सभी आपको याद कर रहे हैं, तो दादी ने कहा मेरी भी सबको याद दे देना, मैं बड़े मज़े में हूँ। तो मैंने देखा कि उसको यह संकल्प ही नहीं है कि मैं कोई शरीर छोड़कर आई हूँ। बार-बार कहे तुमको वतन में क्यों मज़ा आता है, अभी मैंने समझा। बाबा ने भी उसे याद नहीं दिलाया।

तो बाबा ने ऐसे मुलाकात कराई और लास्ट में कहा कि देखो बच्ची पेपर दो प्रकार के होते हैं एक प्रैक्टिकल एक्ज़ाम्पल बनने और दूसरा देखने सुनने में। यह प्रैक्टिकल पेपर है। तो यह बच्ची प्रैक्टिकल पेपर का एक्ज़ाम्पल है और एक्ज़ाम्पल बनने वाले को एक्स्ट्रा मार्क्स मिलती हैं। इसीलिए इस बच्ची का पहले भी बहुत जमा है और अभी एक्ज़ाम्पल बनने में इसने एक्स्ट्रा मार्क्स ले ली। ऐसे कहते ही बाबा ने दादी को अपनी गोदी में लिया। जैसे ही बाबा ने उसको गोदी में लिया तो वह मर्ज हो गई और मैं बाबा से छुट्टी लेकर आ गई।

## बच्चों को दृढ़ संकल्प रूपी धागा बांध आप की आशाओं को पूरा करो

(रक्षाबन्धन निमित्त अव्यक्त बापदादा का विशेष दिव्य सन्देश)

आज बापदादा से मिलन मनाने गई। बापदादा ने मीठी दृष्टि देते हुए मिलन मनाया और बोले, “आओ मेरी विश्व-कल्याणकारी बच्ची आओ”, ऐसे कहते ही बाबा ने हमें अपनी बांहों में समा लिया। बस कुछ समय तो उसी अति प्यारी और न्यारी अनुभूति में लवलीन थी, बोलो, आप सब भी उस अनुभूति में खो गये हो ना! कितना अतीन्द्रिय सुख है उन अलौकिक दिव्य बांहों में..अस्तु।

उसके बाद बाबा फिर बोले बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं तो उसी अनुभव में लवलीन थी। कुछ समय बाद मैं बोली बाबा आज चारों ओर का समाचार लाई हूँ। चारों ओर के बच्चों में बहुत अच्छी लहर है कि अब बापदादा की आशाएँ सब प्रैक्टिकल में पूर्ण करनी हैं, सब तरफ भट्टियाँ और तीव्र पुरुषार्थ की लहर अच्छी है। मधुवन में भी बहुत अच्छी रूहानी लहर है। वायुमण्डल बहुत पावरफुल है। साथ में क्रोधमुक्त का भी सब तरफ़ अच्छा अटेन्शन है।

बापदादा मुस्कराते हुए बोले – संकल्प तो अच्छा है। बाप के पास भी वायुमण्डल पहुंचता है। बाबा मुबारक भी देते हैं लेकिन इस संकल्प को सदा प्रैक्टिकल में लाने के लिए बच्चों को अब अपने मुख्य “मन-बुद्धि के मालिकपन की अथॉरिटी में सेंट परसेन्ट रहना आवश्यक है।” क्योंकि मन-बुद्धि ही सदाकाल अचल बनने में विघ्न डालती है वा सदा एवररेडी बनने नहीं देती। अब तो प्रकृति भी अपने नज़ारे रिहर्सल रूप में दिखा रही है और समय भी सूचना दे रहे हैं, तो अब पावरफुल लहर संगठन में बढ़ती रहनी चाहिए।

उसके बाद मैंने कहा बाबा अब तो राखी बंधन आने वाला है। सभी सन्देश

को याद कर रहे हैं। बाबा बहुत स्नेह रूप में बोले, बाप तो सदा बच्चों के लिए हाँ जी, हज़ूर हाज़िर है। और कुछ समय बाद स्नेह के सागर बाप बोले, इस बारी की राखी बच्चों को साधारण रूप में नहीं मनानी है लेकिन पावरफुल बन्धन में अपने को बांधना है। अन्य आत्माओं को तो पवित्रता के बन्धन में बांधते हो, अब पहले स्व को बन्धन में बांधना है। स्व रक्षक बनना है जो भी बाप से वायदे किये हैं और जो बाप की शुभ आशायें हैं वह सम्पूर्ण करने का दृढ़ संकल्प रूपी धागा मन से बांधना है। हर एक बच्चा एक दो को और अपने को उमंग-उत्साह की राखी बांधे कि “मुझे सम्पूर्ण बाप समान बनना ही है।” कोई भी सरकमस्टांश बड़े ते बड़ा विघ्न आवे लेकिन वायदा निभाना है। क्या, क्यों, कैसे, कब यह बोल वा संकल्प मन की डिक्शनरी से ही समाप्त करना है। अब तो प्रकृति, समय आप सबका आह्वान कर रहा है – आओ हमारे मालिक आओ, समाप्ति का घण्टा जल्दी बजाओ। सर्व आत्मायें भी आप विश्व रक्षक आत्माओं को – रक्षा करो, रक्षा करो, शान्ति देवा दया करो.....ऐसे दिल से पुकार रही हैं। बोलो बच्ची–यह आवाज सुनने नहीं आता ? ओ आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के दीपकों अब सबकी आशायें पूर्ण करो। सदा यही अटल निश्चय रखो कि करना ही है, होना ही है। हुआ ही पड़ा है। यही मन और कर्म की राखी बांधो और बंधवाओ। ऐसे कहते बाबा जैसे सभी बच्चों के बीच चले गये और सबको देख-देख बहुत स्नेह और शक्ति की दृष्टि दे मिलन मना रहे थे।

कुछ समय बाद हमने विदेश वालों की याद दी। बाबा बोले, बच्चे अच्छे याद और सेवा की लगन से उड़ते रहते हैं, उड़ते रहेंगे। सबको यही कहना कि सदा बाप के नयनों में समाये हुए नूरे रत्न जहान के नूर बच्चे हो। सभी को राखी की इनएडवांस मुबारक है।

इसके बाद मैंने शान्तिवन का समाचार सुनाया कि वायदे प्रमाण तैयारी कर रहे हैं। बाबा बोले जो बाप के प्यार में दिन रात लगन से सेवा करते, उन्हीं को बापदादा हिम्मत का प्रत्यक्षफल रोज़ खिलाते हैं। अच्छी मुहब्बत से मेहनत का

सबूत दे रहे हैं। फिर मैंने वर्गीकरण के सेवा की रिजल्ट सुनाई कि प्रोग्रामस सब बहुत अच्छे चल रहे हैं। बाबा बोले वर्गीकरण के सेवा की विधि बनी बनाई विशेष आत्माओं के लाने की विधि है, इसलिए सिद्धि सहज मिल रही है। जो सेवा के निमित्त बने हैं उन्हों को आपसे पहले बापदादा दिलखुश मिठाई खिलाते रहते हैं। मधुबन वाले भी अच्छे मन-वचन-कर्म से सेवा कर रहे हैं। ज्ञान सरोवर, हॉस्पिटल वाले सब बच्चों को विशेष यादप्यार देना और सबसे ज्यादा मेरी सिरताज निमित्त दादी को बांहरों में समाने का प्यार देना, जो निमित्त बन सबको उमंग-उत्साह द्वारा आगे बढ़ा रही है। साथ में सभी दादियों, मुख्य पाण्डवों को भी याद देना।

7-8-97

## “पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ्टी का साधन”

(अफ्रीका निवासी भाई बहिनों प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

परमप्रिय बापदादा के स्नेही, सहयोगी केनिया निवासी सर्व बाबुल के लाडले, सिकीलथे बच्चों को बापदादा का यादप्यार स्वीकार हो।

आपकी तरफ से समाचार मिला। बापदादा को सुनाया। बापदादा ने मुस्कराते हुए सुनते ही आप सभी को सूक्ष्म में इमर्ज किया और आप सबके ऊपर अति स्नेह का हाथ छत्रछाया समान रखते हुए बोले बच्चे, “हिम्मत बच्चे मददे बाप” तो है ही। आप सभी बच्चे भी अच्छी हिम्मत से अब तक वायुमण्डल का सामना करते आये हो।

बापदादा ने तो पहले ही सुनाया है कि दिन-प्रतिदिन ये सब बातें व ये हालातें तो अति में जानी ही हैं। ऐसे समय पर तो आप ब्राह्मण बच्चों को पावरफुल योग के कवचधारी बनना ही सेफ्टी है। जैसे वी.आई.पी. लोग चारों ओर सेक्यूरिटी के घेरे में रहते हैं। ऐसे बच्चों को अब समय अनुसार



शक्तिशाली योग द्वारा चारों ओर लाईट के कार्ब में चलना है। इसमें ही सेफ्टी है।

साथ-साथ शरीर की सिक्युरिटी भी रखना ज़रूरी है। लाईट के कार्ब में रहने से डरेंगे नहीं, लेकिन चारों ओर का अटेन्शन भी रखना ज़रूरी है और धीरे-धीरे जब जैसे सहज हो तो अपने को भारत में सेट करते चलो। जल्दबाजी में नुकसान में नहीं आना है। सदा त्रिकालदर्शी की स्टेज पर बैठ नथिंगन्यु की नालेज से फ़िकर से फ़ारिग रहने वाली आत्मायें हो। बोलो, ऐसे अनुभव करते हो ना ?

अच्छा हर बच्चे को नाम सहित सिर पर बाप के स्नेह का हाथ और साथ सहित यादप्यार स्वीकार हो। अन्त में बापदादा ने वेदान्ती बहन और सर्व साथी बहनों को खास यादप्यार दी।

27-8-97

## बालक और मालिकपन के थैलेन्स से सफलतामूर्त बनो

(मीटिंग के प्रति अव्यक्त बापदादा का सन्देश)

आज विश्व समाचार की मीटिंग का समाचार सुनाने बापदादा से मिलन मनाने गई तो क्या देखा, आज बापदादा विश्व के ग्लोब पर खड़े हुए सारे विश्व के चारों ओर की ब्राह्मण आत्माओं को बहुत पावरफुल लाइट, माइट की दृष्टि दे रहे हैं। बापदादा के नयनों से एक तरफ़ अति स्नेह, दूसरे तरफ लाइट माइट का बहुत सुन्दर अनुभव हो रहा था। कुछ समय बाद बापदादा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची क्या समाचार लाई हो ? मैं बोली बाबा आज विश्व समाचार की मीटिंग का समाचार लाई हूँ। बाबा बोले, बच्ची बापदादा जानते हैं कि दोनों तरफ के बच्चों ने स्नेह सम्पन्न बहुत अच्छा पार्ट बजाया। अपने-अपने विचार स्पष्ट रखने का सबको अधिकार है। लेकिन यह पाठ पक्का है और सदा रहना

चाहिए कि “राय देने के समय मालिक बन राय देना और फाइनल होने के समय बालक बन स्वीकार करना” –यही मीटिंग की विधि और सिद्धि है। बापदादा जानते हैं कि विदेश वा देश के बच्चों को सेवा को बढ़ाने के लक्ष्य से उमंग-उत्साह बहुत है। ऐसे लक्ष्य से सोचते हैं लेकिन सेवा के साथ-साथ इस पुरानी दुनिया के दोनों तरफ के लॉज (कानून) भी ध्यान में रखना पड़ता है।

बापदादा जानते हैं कि विदेश के बच्चों की दिल में सेवा की ही भावना है क्योंकि सेवा की उछल बहुत आती है। बाप और सेवा से बहुत-बहुत प्यार है इसलिए सेवा का लव और दोनों तरफ़ के लॉज, दोनों का बैलेन्स रखना आवश्यक है, इससे ही सेवा में ब्लैसिंग मिलती है। बच्चे समझदार हैं। बापदादा के ईशारे को दूरादेश बुद्धि से समझने वाले हैं। ऐसे बोलते बाबा जैसे मधुबन में और विदेश में चक्र लगाने चले गये और कुछ समय बाद बोले, बापदादा ने डायरेक्ट दोनों तरफ़ के बच्चों को स्नेह सम्पन्न यादप्यार की दृष्टि दे दी है। और मैं भी मिलन मनाते साकार दुनिया में आ गई।

12-3-98

## होली थनकर होलीएस्ट थाप के साथ बच्चों होली मनाओ

(सतगुरुवार के दिन होली तथा दादी चन्द्रमणि जी के  
निमित्त भोग – दिव्य सन्देश)

आज सतगुरुवार भी है और साथ-साथ होली का रंग-बिरंगा दिवस भी है, ऐसे समय पर जब हम वतन में पहुंचे तो वतन की शोभा भी न्यारी थी। आज वतन भी इन्द्र धनुष के समान रंग बिरंगा सजा हुआ दिखाई दे रहा था। बहुत प्यार से मीठे बाबा से नयन मुलाकात की और बाबा बोले आओ मेरे सिरताज बच्चे, आओ। बाप वतन में आप बच्चों का इन्तजार कर रहा है। ऐसे कहते जैसे बाबा ने अपनी बांहों में समा लिया और वह समाने का सुख भी ऐसा मीठा

प्यारा सुख था, वर्णन नहीं कर सकते हैं। बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लेकर आई हो ? मैंने कहा बाबा आज यहाँ जितने कलर हैं आज उतने ही समाचार हैं। इतने ही सन्देश हैं। मैंने कहा बाबा आज सतगुरुवार भी है, होली भी है, दादी चन्द्रमणी का दिन भी है और भी सन्देश हैं। तो बाबा बोले बाप के पास तो सदा ही उत्सव है। उमंग-उत्साह है। कोई भी बात के दुःख की अशान्ति की लहर जो नीचे की दुनिया में होती है, यहाँ वह कुछ नहीं है। बाबा ने कहा बच्चे जो आत्मायें गई हैं उनको भी बाबा वतन में इमर्ज करके हर प्रकार से रिफ्रेश करता है, मधुबन का समाचार भी सुनाता है, चक्र भी लगवा देता है। मैंने कहा आखिर दादी चन्द्रमणि कहाँ है। बाबा बोला अगर मैं बता दूँ तो तुम क्या करोगी ? हमने कहा सबको बताऊंगी। तो बाबा ने कहा कि ड्रामा में बाबा ने यही गुप्त राज रखा है। कितनी दादियां गई हैं, बाबा किसी का भी नहीं सुनाता। अगर सुना दे तो सब वहाँ पहुँच जाएँ और जिसके घर में जन्म लिया है वही परेशान हो जाएँ। तो यह नूँध नहीं है। लेकिन अन्त समय में आप सबको साक्षात्कार होगा कि यह फ़लानी है, यह फलानी है। उस समय मिलने की इच्छा नहीं होगी। दोनों ही स्थापना के कार्य में निमित्त हैं। तो वह अपना पार्ट बजायेंगे और आप अपना पार्ट बजायेंगे। उस समय ऐसी भासना आयेगी कि यह फलानी आत्मा है। जो भी एडवांस पार्टी में जाते हैं उनकी ड्युटी बाबा सम्भालता है। तो बाबा बच्चों को हर रीति से बहलाता है, घुमाता है, अनुभव कराता है। नई नई प्वांटस देता है। कोई बात की कमी नहीं रहती।

फ़िर बाबा ने कहा अच्छा होली मनाने आई हो ना। होली में क्या करेंगे ? रंग डालेंगे। लेकिन बाबा ने कहा होली में पहले जलाते हैं। तो बच्चो को कहना जो कुछ भी है उसे जलाओ, खत्म करो। जब तक खत्म नहीं किया है, हो ली, यानी पास्ट को पास्ट नहीं किया है तब तक सच्ची रीति से मिलन नहीं मना सकेंगे। तो आज बच्चों को कहना कि जो भी व्यर्थ है उस सबको योग अग्नि में खत्म कर दें, ऐसा जला दें जो राख हो जाए, ज़रा भी नाम-निशान न रहे। ऐसे खत्म करें जैसे पास्ट इज़ पास्ट, न मन में रहे, न चित्त में रहे, न वर्णन

में रहे। ऐसे खत्म कर दें जैसे था ही नहीं। शूद्र पन के जीवन की बातें खत्म, ब्राह्मण जीवन की फरिश्ता जीवन की बातें, देवता जीवन की बातें यही बुद्धि के अन्दर स्मृति में रहें। यही चिन्तन-वर्णन रहे तो बच्चे खुशी में उमंग-उत्साह में उड़ते रहेंगे। तो बाबा ने कहा कि बाबा चाहता है इतना ज्ञान का, प्रेम का, शान्ति का, आनंद का रंग चढ़े जो उसके ऊपर कोई दूसरा पुरानी दुनिया का रंग चढ़े ही नहीं। अभी तक कोई-न-कोई रंग चढ़ जाता है, वह चढ़े ही नहीं ऐसा रंग यहाँ से चढ़ाकर जाओ। आपका रंग दूसरों पर चढ़े, वह रंग आपके ऊपर न चढ़े ऐसा दृढ़ संकल्प करके ऐसा रूहानी रंग में रंगकर जाओ। बाबा बच्चों को रूहानी रंग में रंगता है और रोज मीठी मीठी बातें सुनाकर बच्चों का मुख मीठा करता है।

तो बाबा ने कहा बच्चों को कहना कि पद्मापद्म भाग्यवान बच्चे हो जो भगवान के साथ होली मना रहे हो। तो होली मनाना है होलीएस्ट बाप के साथ होली बनकर।

ऐसे कहते बाबा के हाथ में एक छोटा सा जैसे फाउन्टेन होता है, ऐसे फाउन्टेन था और उससे चारों तरफ़ लाइट के रंग दूर दूर तक बिखर गये। जैसे फ्लावरवाज़ की तरह था लेकिन बाबा ने उसे उठाया तो उससे कई तरह के रंग गोलाई से गुलदस्ते की तरह चारों तरफ़ बिखर गये। जैसे लाइट के अन्दर अक्षर चमकते हैं लिखते मिटते हैं। ऐसे उसके अन्दर प्रेम, आनंद, शान्ति.... शब्द लिखते जायें, मिटते जायें। तो बाबा ने कहा कि बाप इन रूहानी रंगों में बच्चों को रंगता है जो दूसरा कुछ दिखाई ही नहीं दे। बाबा चाहता है कि सभी बच्चे इस रूहानी रंग के अन्दर छिपे रहें, दिखाई ही न दें।

बाबा ने कहा सबको कहना कि यह अन्तिम समय है, नाटक पूरा होने जा रहा है। जो भी आत्मायें हैं चाहे ज्ञान में हैं या नहीं हैं लेकिन सब बाबा के बच्चे हैं, सभी बच्चों को बाबा वापस घर ले जाने वाला ही है। सबको अपना हिसाब-किताब पूरा कराके ले जायेगा। आप बच्चे तो ज्ञान योग बल से अपना एकाउण्ट खत्म करके बाबा की अंगुली पकड़कर जायेंगे, बाकी सब आत्मायें भी अपना

हिसाब पूरा करके जाने वाली हैं। कल्याणकारी बाप सर्व आत्माओं का कल्याण करता है, ऐसा निश्चित समझो।

मैंने कहा बाबा – कोई कोई ने आज जीते जी मरने का भोग लगवाया है। तो बाबा ने कहा जीते जी मरने का अर्थ ही है पुराने को भूल जाना। वैसे भी आज होली है, तो हो ली अर्थात् पुराना खत्म। अब नया जीवन, नये संस्कार, नई बात, पुराने को खत्म करना है। आज का दिन मरने का नहीं लेकिन ऐसे समझें मेरे अलौकिक जन्म दिन है। इस जन्म दिन को याद रखना कि हमने भगवान की गोद में अपना नया जन्म लिया है। फिर हमने बाबा को भोग स्वीकार कराया। बाबा ने सभी को याद दिया और मैं नीचे वतन में आकर पहुँच गई।

16-3-98

## विशेष आत्माओं के हर कदम में सेवा

(दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा का मधुर सन्देश)

आज बापदादा के पास दादी जी की और सर्व की याद लेते हुए गई तो बापदादा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और कहा आओ बच्ची, क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा, दादी जी का आपरेशन बहुत अच्छा हो गया। बाबा मुस्कराते बोले, बच्ची बापदादा तो ऑपरेशन थियेटर में सारा कार्य देख ही रहे थे। बाबा के पास तो सहज साधन हैं। ऐसे कहते बाबा दादी को इमर्ज कर बहुत राजयुक्त मुस्कराते हुए नैन मिलन मना रहे थे। हम देख-देख खुश हो रही थी फिर बाबा बोले निमित्त विशेष आत्माओं की हर बात में सेवा समाई हुई है। सर्व को भिन्न-भिन्न प्रकार से पाठ पढ़ाती हैं। जैसे मन से मनोबल भरती हैं वैसे तन के हिसाब में भी अशरीरी और खुशी से पार्ट बजाने में भी सबको प्रैक्टिकल पाठ पढ़ाती हैं। धन से भी एक तरफ़ बड़ी दिल साथ में एकानामी का पाठ

पढ़ाती हैं। ऐसे हर कदम में पाठ पढ़ाती रहती हैं। ऐसे मिलते और महावाक्य उच्चारण करते सर्व बच्चों को यादप्यार दी।

7.4.98

## भैया के साथ-साथ स्व-उन्नति का बैलेन्स रखो

(मीटिंग प्रति अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज जैसे ही मैं वतन में बाबा के पास गई तो देखा बाबा बहुत मीठा मुस्करा रहे थे और मैं जितना आगे जाती रही उतना बाबा की मुस्कराहट में जैसे भिन्न-भिन्न राज़ से चेन्ज आती जाती थी। मैं भी देख-देख मुस्करा रही थी। तो जब मैं आगे पहुँची तो बाबा ने कहा – आओ मेरे सर्विसएबुल बच्चे, आओ। ऐसे कहते बाबा ने कहा बच्ची, आज सर्विस का समाचार लाई हो! तो मैंने कहा बाबा आपके पास तो पहले ही पहुँच जाता है, अभी मैं क्या सुनाऊँ। तो बाबा ने कहा कि बच्ची मीटिंग तो मैं भी देखता हूँ और इस साल बच्चों ने दो थीम रखी हैं – एक स्व-उन्नति की और दूसरे तरफ विशाल प्रोग्राम्स की। वैसे दोनों ही इकट्ठी चलनी चाहिए, उसके लिए बाबा ने कहा कि वर्ष के मास भिन्न-भिन्न हैं तो भिन्न-भिन्न मास में प्रोग्राम को बाँटो। कुछ मास विशेष स्व उन्नति की लहर फैले, उसमें फिर विशाल प्रोग्राम नहीं रखो। उसमें भी साल में बरसातों के दो मास हरेक अपने-अपने एरिया के हिसाब से ऐसे रखो जो स्व उन्नति के सिवाए कोई और बड़ा प्रोग्राम उस समय नहीं हो। बाकी छोटे-छोटे प्रोग्राम की बात दूसरी है लेकिन जो विशाल प्रोग्राम रखते हैं जिसमें सब तरफ़ की बुद्धि लगानी पड़ती है तो उसमें फिर स्व-उन्नति नहीं हो सकती है। इसीलिए बाबा ने कहा कि इस वर्ष बैलेन्स का अभ्यास ज़रूर करो। विशेष स्व-उन्नति के दो मास में सर्विस कोई भी विघ्न नहीं डाले। और जब सर्विस करते हो तो स्व-उन्नति की स्थिति तो चाहिए ही।

तो बाबा ने कहा कि इस साल कुछ नवीनता तो करेंगे ना, क्योंकि नवीनता के बिना तो मज़ा भी नहीं आता है। तो बाबा ने एक काम तो दिया ही है कि मुक्ति वर्ष में १८ जनवरी में मैं सबसे पूछूँगा – कौन-कौन मुक्ति वर्ष में मुक्त हुआ? यह तो बाबा ने डेट फ़िक्स कर दी है। लेकिन इस वर्ष बाबा मीटिंग वालों को खास कहते हैं क्योंकि सब सेन्टर्स की विशेष आत्मायें आई हुई हैं। तो इस साल बाबा बैलेन्स देखना चाहते हैं। जो बच्चे कहते हैं कि सेवा में लग गये इसलिए स्व-उन्नति के तरफ़ अटेंशन कम हो गया। तो इस वर्ष बाबा यह नहीं सुनना चाहता कि सेवा के कारण स्व-उन्नति पर ध्यान कम हो गया। इसलिए बाबा इस साल किसी भी रीति से बैलेन्स का देखना चाहते हैं। तो स्व उन्नति भी साथ-साथ रहे और सेवा भी हो।

उसके बाद बाबा ने कहा कि सभी मीटिंग वाले बच्चों का एक गुण देखकर बाबा को बहुत प्यार आ रहा है। वह कौन-सा गुण? बाबा ने कहा एक गुण यह है कि जब प्रोग्राम बनता है, तो सब बड़े उमंग-उत्साह से पहुँच जाते हैं। अपने सरकमस्टांश को किनारे कर, मधुबन से दादी का जब बुलावा होता है तो एवररेडी बन बुलावे पर एक्यूरेट पहुँच जाते हैं, यह गुण सभी का बहुत अच्छा है। इस गुण को देख करके बाबा मुबारक देते हैं। तो जैसे इस समय यह गुण बहुत प्रिय लग रहा है, ऐसे जब भी बड़े निमित्त बने हुए कोई सेवा के लिए भी आर्डर देवें तो आप समय प्रमाण, डायरेक्शन प्रमाण वहाँ पहुँच करके वह कार्य करो। तो यह भी एक बड़ों को रिगार्ड देना है, हाँ जी का पाठ पढ़ कर बड़ों की बहुत दुआयें लेनी हैं, इसलिए बाबा इस गुण के ऊपर हरेक बच्चे को अरब गुणा, खरब गुणा मुबारक देते हैं।

बाकी बाबा की दृष्टि में तो सब समाये हुए ही थे, और जब मैं वतन में जाती हूँ तो बाबा की आँखें ही मेरे लिए टी.वी. होती हैं। और बाबा का जो एक-एक बच्चे प्रति प्यार है, वह प्यार की तस्वीर बाबा के आँखों की टी.वी. से ही मैं देखती रहती हूँ।

## समय की समीपता आप के समीपता का अनुभव कराती है

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त  
त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत मीठी मुस्कान से ही दृष्टि दे रहे थे। मैं दृष्टि से मिलन की सृष्टि में खो गई और थोड़े समय के बाद देखा कि बापदादा के पास मेरे साथ-साथ देश विदेश के अनेक बच्चे भी पहुँच गये और बापदादा हर एक के माथे पर वरदानी हाथ घुमा रहे थे और हाथ घुमाते ही वह लाइट की छत्रछाया बन गई। साथ-साथ बाबा जो दृष्टि दे रहे थे उससे ऐसा अनुभव हो रहा था कि बापदादा के दिल की मुबारक मिल रही है। वह दृश्य भी अलौकिक था। हर एक खुशी के झूले में झूल रहे थे। उसके बाद बाबा बोले, बच्ची सब बच्चों की दिल के उमंग का गीत बाबा के पास पहुँच गया है। बापदादा तो अमृतवेले से मीठा-मीठा गीत सुन खुश होते हैं जो बापदादा के दिल के विचित्र टेप रिकार्ड में भरा हुआ है।

ऐसे कहते ही बाबा ने एक ताली बजाई तो क्या देखा, बाबा के दिल में भरा हुआ हम बच्चों का आवाज शब्दों में नहीं लेकिन वण्डरफुल ट्युन की आवाज में सुनाई देने लगा, लेकिन ट्युन में भी ऐसा स्पष्ट था जो समझ में आ रहा था। यह थी वतन की जादूगरी। अब हम सब बच्चों का क्या गीत था वह जो हमने सुना वह आप भी सुनो। सबका यही साज़ भरा हुआ गीत था –

१- बाबा हमें तो अब विश्व में आपको प्रत्यक्ष करना ही है।

२- स्वयं को बाप समान बनाना ही है।

३- विश्व की दुःख, अशान्तमय आत्माओं को मुक्त करना ही है।

ऐसे अपने ही दिल के आवाज़ अव्यक्त साज़ों में सुन हम सब भी बहुत खुश हो रहे थे कि वाह बाबा आपके दिल का अलौकिक टेप रिकार्ड भी कितना विचित्र न्यारा और प्यारा है!



उसके बाद बाबा बोले, बच्ची इस वर्ष बापदादा ने देखा कि अनेक बच्चों को स्व परिवर्तन और सेवा प्रति बहुत उमंग भरा दृढ़ संकल्प है और यह दोनों का बैलेन्स ही हर एक के लिए स्व प्रति ब्लैसिंग बन रहा है और विश्व को भी वायब्रेशन द्वारा ब्लैसिंग की सकाश मिल रही है। फिर बाबा ने पूछा बच्ची और क्या समाचार लाई हो ?

मैं बोली बाबा, अभी अमेरिका में आवाज़ बुलन्द करने लिए विशेष वी.आई.पीज़ और विशेष टीचर्स की मीटिंग हो रही है और इस वर्ष के रिफ्रेशमेंट के अनुभव भी बच्चों के बहुत सुन्दर हैं। बाबा मुस्कराते हुए बोले बच्ची समय की समीपता भी बाप की समीपता का अनुभव करा रही है। बाबा के पास सबके अनुभव पहुँच गये हैं। बाप ऐसे बच्चों को परिवर्तन की मुबारक भी दे रहे हैं और वरदान भी दे रहे हैं कि सदा परिवर्तन भव। १. मिलन के अनुभव, २. परिवर्तन के अनुभव, ३. सेल्फ रियलाइज़ेशन के अनुभव तथा ४. सेवा में उमंग-उत्साह से दृढ़ता के अनुभव को बढ़ाते चलो, बढ़ते रहो, अमर रहो।

ऐसे कहते बाबा ने कहा कि विदेश में भी बच्चे मीटिंग कर रहे हैं। यह बापदादा देख-देख हर्षित होते हैं। दृढ़ता की चाबी तो बच्चों के पास है ही तो सफलता का खजाना भी प्राप्त है ही। बाप का साथ और हाथ हर बच्चों को अनुभव है और होता रहेगा। देश में मधुबन में भी मीटिंग बहुत अच्छी उमंग-उत्साह की रही, बापदादा तो सब सुनते हर्षित होते कि वाह मेरे सेवा के निमित्त बने हुए बच्चे वाह! आगे बढ़ते रहो और बढ़ाते रहो, उड़ाते रहो। कितना प्यार बापदादा दिल से बच्चों को करते हैं वह बाप ही जाने और बच्चे ही जानें और न जाने कोई। बस ऐसे कहते ही बापदादा बच्चों के स्नेह में ऐसे समा गये जो मैं देखते ही रह गई। बस यही दिल से निकला – इतना प्यार करेगा कौन! यही सोचते, मिलन मनाते मैं साकार दुनिया में पहुँच गई।

19-6-98

## बेहद के वैराग्य वृत्ति से विश्व- परिवर्तन का कार्य सम्पन्न करो

(ब्रह्मा वत्सों प्रति अव्यक्त वतन से प्राप्त  
त्रिकालदर्शी बापदादा का अव्यक्त सन्देश)

आज बापदादा के पास गई तो बापदादा बहुत ही स्नेह और शक्ति रूप से दृष्टि देते मधुर मिलन मना रहे थे। मैं आगे बढ़ते ही दृष्टि में समा गई। बाबा बोले आओ मेरे विश्व-परिवर्तक बच्चे आओ। जानते हो आज बाबा के पास कौन आये हैं? मैं देखने लगी तो क्या देखा, बड़े आदर भाव से हाथ में मालायें लिए हुए प्रकृति के ५ तत्व सूक्ष्म रूप धारण किये हुए बापदादा को प्रणाम कर रहे हैं और बापदादा उन्हें दृष्टि दे रहे हैं। बाबा ने हमें साथ में सामने आने के लिए इशारा दिया और मैं बाबा के साथ सामने पहुँच गई। बाबा बोले बच्ची जानती हो यह क्या कहना चाहते हैं? मैं मुस्कराई तो बाबा बोले, प्रकृति पूछती है कि अब तो हम अलग-अलग स्थानों में एक-एक तत्व द्वारा हलचल मचा रहे हैं लेकिन सब इक्के हो हलचल मचाने के लिए कब आर्डर है? कब तक समाप्ति समारोह मनायेंगे? तो बोलो बच्ची कब तक आर्डर दें? क्योंकि आप प्रकृति पति बच्चों के तीव्रगति के सम्पन्न बनने का पुरुषार्थ ही परिवर्तन का आधार है। मैं बोली बाबा, अब चारों ओर पुरुषार्थ की लहर तो है। मुक्ति वर्ष मनाने का अटेन्शन तो है ही। बाबा मुस्कराते बोले, क्या संगठित रूप में विश्व परिवर्तन के कार्य में सब एवररेडी हैं? क्योंकि स्थापना में तो सर्व आत्माओं का साथ चाहिए, राज्य तो तब ही स्थापन होगा। अब तो बाप बच्चों से यही चाहते हैं कि अब हर एक बच्चे को अपनी दिल से बेहद का वैराग्य उत्पन्न हो तब यह लहर तीव्रगति से प्रत्यक्ष दिखाई दे। सेवा से, संगठन से वैराग्य नहीं लेकिन पुरानी दुनिया, पुराने संस्कार और पुरानी दुनिया की वस्तुओं से वैराग्य हो। हर एक में ऐसा सर्व प्रकार का वैराग्य है? सर्व कमजोरियों से अंश मात्र तक मुक्ति है? क्योंकि आप विश्व मास्टर रचयिता आत्माओं के आधार से ही विश्व

परिवर्तन होना है। आप ब्राह्मणों की वर्तमान की मुक्त स्थिति से ही विश्व की सर्व आत्माओं को दुःख, अशान्ति से मुक्ति मिलनी है। इतनी बड़ी जिम्मेवारी सभी बच्चों पर है।

ऐसे कहते बाबा जैसे वतन से ही सर्व बच्चों को ज्ञान सूर्य रूप से शक्तिशाली किरणें दे रहे थे। मैं भी बाबा के साथ उसी रूप में समाई हुई थी, कुछ समय के बाद बाबा मुस्कराते बोले और क्या समाचार है? मैं बोली बाबा आजकल तो मधुबन, शान्तिवन और ज्ञान सरोवर में जोर-शोर से सेवायें चल रही हैं और हमारी दादी और साथी दादियां भाई-बहनें सब बहुत अथक बन सेवा कर रहे हैं। बाबा बोले, बाबा भी बच्चों को देखकर खुश होते हैं और सेवा की मुबारक पद्मगुणा दे रहे हैं। साथ में सदा एकरस स्थिति द्वारा बढ़ते रहो, बढ़ाते रहो का वरदान भी दे रहे हैं। मधुबन के साथ चारों ओर भारत और विदेश के हर बच्चे को सूक्ष्म में बहुत-बहुत प्यार दे रहे हैं। और यही आशा बच्चों से रख रहे हैं कि सदा स्व-स्थिति और सेवा का बैलेन्स आवश्यक है और दोनों साथ-साथ हों, प्रकृति भी आप प्रकृतिपति बच्चों का आह्वान कर रही है कि कब इन श्रेष्ठ आत्माओं का विजय माला से स्वागत करें, सुखमय संसार में सेवाधारी बन सेवा करें।

उसके बाद मैंने अपनी दादी और अपने विदेश जाने का समाचार सुनाया। सुनते ही जैसे बाबा के सामने दादी इमर्ज थी और बाबा स्नेह से बोल रहे थे बच्ची (दादी) बहुत आलराउण्ड सर्विस के प्लैन बनाती रहती है। सेवा प्रति शुभ संकल्प का मंथन अच्छा चलता है। जनक बच्ची का ज्ञान मंथन ज़्यादा चलता, सेवा का भी चलता है। दादी का सबको बिजी करने का संकल्प अच्छा चलता और बापदादा भी टच करता। बच्ची कैच कर प्रैक्टिकल में लाने में अच्छा पार्ट बजा रही है क्योंकि विश्व के निमित्त है। बापदादा अथक भव और न्यारे प्यारे भव का सदा वरदान देते रहते हैं।

उसके बाद बाबा ने एक नये प्रकार की मसाज़ दादी को की, पहले दादी को की फिर जानकी दादी को की, वह क्या थी? बाबा के दोनों नयनों से दो

रेज़ (किरणें) लाइट की निकल रही थी जो एक बहुत शक्तिशाली थी, दूसरी शीतल थी। वह प्रकाश का रेज़ दादी के मस्तक में गोल-गोल हो घूम रहा था, और बहुत फ्रैश कर रहा था। ऐसे सारे शरीर में भी घूम रहा था और बहुत रिफ्रेश हो रहे हैं, ऐसा अनुभव दादी के चेहरे से हमें भी हो रहा था। पहले शक्तिशाली रेज़ घूमी फिर बाद में शीतल प्रकाश की रेज़ घूमी, ऐसे दोनों दादियों को मसाज़ की। सच तो सीन बड़ी विचित्र थी और ऑटोमेटिक बहुत रमणीक भी थी, मैं तो साक्षी हो देखते ही खुश हो रही थी कि वाह हमारी दादियां।

फिर उनके बाद मैंने दादी और अपने फारेन जाने का सुनाया। बाबा बोले मेरे निमित्त बच्चों के कदम में पदम हैं, डबल फ़ायदा है एक तो अनेक विशेष लोगों को सन्देश मिल जाता, सम्बन्ध में समीप आते हैं, माइक बन जाते और दूसरा ब्राह्मण तो उड़ जाते हैं। फिर मैंने लंदन के लिए सुनाया कि अचानक जा रहे हैं। बाबा मुस्कराये और बहुत राजयुक्त रूप में बोले आदि अनन्य बच्चों का आपस में दिल का, ज़िगर का प्यार है और सहयोग की भावना है, उसी विशेषता से कारोबार चल रही है। बापदादा यह देख हर्षित होते कि एक दो को समय पर हाँ जी और समीपता अच्छी है। जनक बच्ची सदा सहयोगी रही है और हर आलराउण्ड सेवा में हाज़िर होती है तो हज़ूर भी सदा हाज़िर साथ है। बच्ची को रेस्ट करना भविष्य लिए और वर्तमान लिए आवश्यक है। सर्व फारेन के सेवाधारी बच्चों को भी बहुत यादप्यार देना। यह था समाचार।

25-6-98

**“4 गेट और उनसे पार होने की  
विधि - छेहद का वैराग्य”**

(मम्मा के प्रति भोग तथा दिव्य सन्देश)

आज आप सबकी याद प्यार लेते हुए बाबा के पास वतन में पहुँची तो

वतन में क्या देखा कि सामने बाबा मम्मा और मम्मा के साथ जो हमारी विशेष आत्मायें सेवा अर्थ गई हैं वे भी साथ में खड़े थे और ऐसे खड़े हुए थे जो लगता ही नहीं था कि यह कोई गई हुई आत्मायें हैं। जैसे साकार में बाबा मम्मा और बच्चे संगठित रूप में कभी घूमने जाते थे, कभी संगठित रूप में खड़े होते थे, बाबा दृष्टि देते थे। तो ऐसे ही लग रहा था जैसे वतन नहीं है लेकिन साकार सृष्टि में ही हम देख रहे हैं। हमको देख करके सभी बहुत राजयुक्त मुस्करा रहे थे, जो भी हमारे अनन्य गये हैं, जैसे दीदी हैं, दादी चन्द्रमणि हैं.. सभी मुस्करा रहे थे तो मैं सोच रही थी कि इन्हीं की मुस्कराहट बहुत राजयुक्त है, इसका क्या मतलब है? मेरा संकल्प चला तो मम्मा ने कहा, बच्ची क्या सोच रही हो? मैं तो चुप रही तो मम्मा ने कहा कि यह सब आपसे पूछ रहे हैं कि आखिर भी हम लोगों का यह एडवांस पार्टी का पार्ट कब तक है? मैं मुस्कराई और मैंने मम्मा को कहा कि मम्मा यह आप ही सुनाओ आखिर भी आपका यह पार्ट और हमारा साकार सृष्टि का पार्ट कब तक है? तो मम्मा ने कहा कि यह आप लोगों को समय को समीप लाना है, हम तो एवररेडी हैं ही। हम तो सिर्फ स्थापना के कार्य में गुप्त रूप से आप लोगों के मददगार हैं लेकिन हमारा कर्मबन्धन तो पूरा हुआ है, हमारे हिसाब-किताब तो क्लीयर हैं, आप लोगों को तैयार होकर आना है। हम तो पहले से ही तैयार हैं तो बाबा सुनकर मुस्करा रहे थे। तो बाबा को मैंने देखा, बाबा को जैसे उन्होंने अपने साथ मिला लिया था। तो बाबा ने भी कहा बच्ची मम्मा को जवाब दो ना। मैंने कहा क्या जवाब दें? बाबा ने कहा, कहो हम भी जल्दी-जल्दी आपको एडवांस पार्टी से मुक्त करेंगे और हम भी मुक्त हो जायेंगे। मम्मा तो होशियार है ना! तो मम्मा ने कहा कब तक? डेट बताओ ना। मैंने कहा कि डेट तो अभी निश्चित ही नहीं की है, डेट कौन सी बतायें? तो दीदी और चन्द्रमणि दादी दोनों मुस्कराकर बोली – अरे गुलज़ार तुम डेट नहीं बता सकती हो? जैसे साकार में दीदी और चन्द्रमणि दादी बोलती थी ना कि अरे बताओ ना! क्यों नहीं बता सकती हो? मैंने कहा कि मैं अकेले थोड़े ही बता सकती हूँ। अकेले मैं कहूँ कि मैं तो तैयार हो जाऊँगी तो भी बाबा

कहेंगे कि संगठन चाहिए। तो मैं कैसे बताऊंगी, यह तो बाबा बताये। तो सभी मुस्कराने लगे। तो बाबा ने कहा बच्चे यही कहो कि मम्मा हम अभी आये कि आये। मैंने कहा कि अभी आये कि आये की तो बात ही नहीं है। तो ऐसे चिटचैट चल रही थी। मम्मा तथा सभी दादियां साड़ी पहने हुए ऐसे लग रहे थे जैसे उड़ते फ़रिश्ते होते हैं ना। फिर मम्मा ने कहा कि बच्चे तो सभी याद आते ही हैं। मम्मा ने जैसे कहा कि बच्चे याद तो आते ही हैं तो इतने में मैंने देखा कि काफ़ी बड़ा संगठन वतन में इमर्ज हो गया और मम्मा एकदम जैसे मिलेट्री का कमाण्डर होता है ना आफ़िशियल, उसी रूप में जैसे जगत माता रूप में सभी बच्चों को दृष्टि भी दे रही थी और वरदान का हाथ भी घुमा रही थी।

थोड़े समय के बाद मम्मा ने कहा आज हम सभी भी आये हैं और यह सभी भी आये हैं तो वतन में इन्हों को खेल कराते हैं। तो बाबा बहुत मुस्कराया और कहा मम्मा आज मम्मा डे पर बच्चों को खेल कराने चाहती है, प्यार होता है ना माँ का। तो बाबा ने कहा कि मम्मा आप भले खेल कराओ। तो पहले जब मम्मा दृष्टि दे रही थी उस समय मम्मा का आफ़िशियल रूप था फिर जब कहा कि खेल कराते हैं तो बिल्कुल ही होमली रूप हो गया। दीदी और चन्द्रमणि दादी जो थी और भी थे, तो वह भी कहने लगे कि हाँ बहुत दिन हो गया है, खेल नहीं किया है, तो आज खेलेंगे। तो सभी खेलने के लिए तैयार हो गये।

तो क्या देखा कि सामने लाइट्स के गेट्स बने हुए थे और वो लाईन में थे। गेट के पीछे गेट, गेट के पीछे गेट। बीच में थोड़ी-थोड़ी मार्जिन थी, ऐसे चार गेट्स थे। चार गेट्स के बाद बहुत छोटे-छोटे विमान के मुआफ़िक बहुत हल्के से जैसे सिंहासन होते हैं, ऐसे बहुत विमान थे।

फ़िर मम्मा ने चन्द्रमणि दादी को कहा कि आप पहले ड्रिल कराती थी ना तो आज तुम ही सीटी बजाओ। सीटी बजते ही हर एक को उन चारों गेट्स से पास होना था, तो दादी चन्द्रमणि ने सीटी बजाई और सभी गेट्स से पास होने लगे। उन गेट्स पर बहुत सुन्दर लाइट्स से लिखा था –

१. पुरानी दुनिया से मुक्त, २. लौकिक और अलौकिक सम्बन्ध से मुक्त, ३. पुराने स्वभाव-संस्कार से मुक्त तथा ४. पुरानी दुनिया के पदार्थों से मुक्त।

तो इन चारों गेट्स से हम सभी को जाना था। तो दादी चन्द्रमणि तो हंसती जाएं कहे कि मम्मा क्या यह सब पार हो जायेंगे? तो मम्मा ने कहा कि तुम देखो ना। इन्हों को चलाओ। तो एक एक करके चलते गये, एक-एक गेट से क्रास करते गये। आखरीन में रिज़ल्ट यह हुई कि कोई किस गेट में अटक गया, कोई किस गेट में ठहर गया। आखिर आधे से थोड़े ज़्यादा दो गेट से तो क्रास कर गये लेकिन तीसरा गेट जो स्वभाव-संस्कार वाला था वहाँ थोड़ा टाइम अटके लेकिन पुरुषार्थ करके निकल गये और विमान में जाकर बैठ गये, विमान ऊपर उड़ गया और उड़ते हुए जैसे बादल होते हैं वैसे बादलों के बीच में फरिश्ते रूप में समाते जाते थे। जैसे बादलों में फ़ेश दिखाई देता था, सारा शरीर नहीं दिखाई दे रहा था। ऐसे यह खेल पूरा हुआ तो मम्मा ने कहा बाबा इन्हों को तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। एवररेडी बनने के लिए तीव्रगति का पुरुषार्थ, बेहद की वैराग्य वृत्ति का दिल से वैराग्य – अभी तो यह पाठ पढ़ना पड़ेगा। बाबा ने कहा हाँ मम्मा अभी यह पाठ रह गया है।

बेहद की वैराग्य वृत्ति, कर्म करते हुए, सेवा करते हुए कोई लगाव नहीं। किसी से भी लगाव नहीं। वैराग्य वृत्ति और कर्म वा सेवा में सफलता। ऐसे नहीं वैराग्य वृत्ति माना छोड़कर बैठ जाँ। नहीं। लेकिन कर्म में भी बेहद की वैराग्य वृत्ति से सफलता और सेवा में भी सफलता और संगठित रूप से सम्बन्ध में आने में भी सफलता। बाबा ने कहा मम्मा अभी बच्चों को वर्तमान समय यही पाठ अटेन्शन में लाना है। जिससे ही कब होगा, यह क्वेश्चन मार्क खत्म हो जायेगा। ऐसे यह खेल पूरा हुआ।

फ़िर बाबा ने कहा मम्मा आज तो विशेष आपके प्रति भोग आया है। तो मम्मा ने कहा कि बाबा पहले तो आप स्वीकार करो। तो मम्मा ने भोग लेकर बाबा को गिट्टी खिलाई और बाबा ने अपने हाथ से मम्मा को गिट्टी खिलाई और साथ में जो आत्मायें थीं उन्हों को भी बाबा ने अपने हाथ से खिलाया।

हमको मम्मा ने अपने हाथ से खिलाया और बाकी जो थे दीदी, चन्द्रमणि दादी उन सबने हमको हाथ मिलाकर कहा कि आप हमारे तरफ़ से सबको यादप्यार देना और कहना कि हम आप लोगों का इन्तज़ार कर रहे हैं कि आप जल्दी-जल्दी सम्पन्न हो जाओ तो हमारा एडवांस पार्टी का पार्ट भी पूरा हो जाए और हम सब साथ में अपने राज्य में चलें। फिर बाबा ने सभी को बहुत स्नेह से विदाई दी।

फ़िर बाबा को हमने आप सबकी और दादी जानकी की याद दी तो बाबा ने कहा कि बीच-बीच में यह भी खेल में खेल दिखाती है और खेल पूरा हो जाता है तो वैसे की वैसे हो जाती है। तो अभी भी यह खेल हो रहा है और बच्ची में हिम्मत और विल पावर है इसलिए फिर वैसी की वैसी हो जायेगी। दादी को बाबा और मम्मा ने बहुत प्यार दिया। आप सभी की याद हमने दी तो बाबा ने कहा कि वर्तमान समय डबल फ़ारेनर्स जो हैं उन्हों का अपने तरफ़ अटेन्शन अच्छा है। अटेन्शन के साथ सेवा का भी उमंग है। बाकी जिस समय योग में बैठते हैं उस समय तो गुम हो जाते हैं। याद और सेवा का परसेन्टेज़ में बैलेन्स है लेकिन अभी परसेन्टेज़ को बढ़ाना चाहिए। बाबा को डबल फ़ारेनर्स, लंदन निवासी और चारों ओर के जो बच्चे हैं वे सिकीलधे हैं, प्यारे हैं। बाबा अमृतवेले हर बच्चे को बहुत-बहुत स्नेह और शक्ति देता रहता है, बच्चे भी नम्बरवार लेते रहते हैं। इसलिए बच्चों को मुबारक देना और कहना आप फ़ारेनर्स का भिन्न-भिन्न फूलों का गुलदस्ता बाबा सदैव सामने रखता है। बाबा के सामने आप सभी गुलदस्ते के रूप में हाज़िर हैं। बाबा सदा स्नेह करता रहता और दृष्टि देता रहता है।



## “शुद्धि से उपराम रह अथ घर चलने की तैयारी करो”

(दीदी जी के निमित्त भोग तथा वतन का दिव्य सन्देश)

आज जब मैं बाबा के पास वतन में भोग लेकर गयी तो हमने देखा कि दीदी और बाबा आपस में कोई बात करते मुस्करा रहे थे ऐसे लगता था जैसे दीदी बाबा को कोई बात कह रही हो और बाबा हाँ बच्ची, हाँ बच्ची कह रहे हों। तो जैसे ही मैं आगे बढ़ी तो बाबा ने कहा देखो बच्ची मधुबन से तुम्हारे लिए भोग आया है। तो दीदी ने हमें देखा और कहा अच्छा तुम आ गई। हमने कहा हाँ दीदी, आपको सबने बहुत-बहुत याद दिया है। मधुबन में समर्पित भाई आये हुए हैं, मधुबन निवासी, शान्तिवन, ज्ञान सरोवर, आबू निवासी, कुमारियाँ सबने याद दी है। तो दीदी मुस्कराते बाबा को देखे और मेरे को देखे। तो मैंने कहा कि दीदी आप हम लोगों को याद नहीं करती हो क्या? तो बोली मैं क्या करूंगी याद करके। हमने कहा क्यों हम आपके सेवा साथी हैं, आप हमें याद नहीं करती हो! तो कहा जब बाबा मुझे वतन में बुलाता है और सारा समाचार, सुनाता दिखाता है, बताता है तो अपनी सखियाँ अपना मधुबन यह सब याद तो आता है। फिर बोला दादी कैसे है? हमने कहा दादी ने तो आपको बहुत-बहुत याद दिया है। तो दीदी बोली अभी दादी अकेली हो गई है। मैंने कहा आप तो दादी को छोड़कर चली आई ना। तो बोला बाबा ने मुझे बुला लिया तो मैं आ गई। मैंने कहा आप आ गई तो दादी अकेली हो गई लेकिन दादी को और सखियाँ तो हैं ना। बोला सखियाँ भले हों पर दीदी जैसी सखी नहीं है। दीदी-दीदी थी, मैंने कहा यह तो दीदी जरूर है, दीदी और दादी दो शरीर थे लेकिन प्राण तो एक ही थे। तो दीदी ऐसे चिटचैट कर रही थी। मैंने कहा दीदी देखो आपके पीछे इतना बड़ा ज्ञान सरोवर बन गया, शान्तिवन बन गया। तो दीदी बोली हाँ मुझे पता है, मैंने देखा है। जो कुछ भी होता है तो बाबा हमें चक्र जरूर लगवाता है। सारा समाचार सुनाता है। हम कोई

बात से अंजान नहीं हैं।

फ़िर मैंने कहा दीदी हम लोगों के लिए आपकी क्या प्रेरणा है? तो दीदी मुस्कराई। बोली बाबा देखो प्रेरणा पूछती है। आप इतनी प्रेरणा देते रहते हो, अभी मेरी प्रेरणा पूछती है। मैंने कहा नहीं दीदी आपने तो यह सब क्रास किया है ना। तो बोली देखो बाबा ने हमें अन्तिम दिनों के अन्दर एकदम उपराम कर दिया था। बस मेरे को यही था कि अब घर जाना है। अब घर जाना है। मेरे को यही एक रट लगी हुई थी, चलते चलो, चलते चलो .... कोई बात, कोई परिस्थिति आती है उसको देखो नहीं, खड़े नहीं हो, आगे चलो, बढ़ते चलो। तो बस मेरी बुद्धि के अन्दर दो बातें थी – एक था चलते चलो, खड़े नहीं हो और दूसरा था अब घर जाना है। तो मेरी वृत्ति हर बात से उपराम हो गई। जैसे कोई राम-राम का अजपाजाप जपता है तो बस मेरे को भी यही चलता था – “अब घर जाना है।” भल मेरे को बाबा ने हिसाब-किताब चुक्ती कराया लेकिन दुःख दर्द की अनुभूति नहीं होने दी। यह भी बाबा का मेरे ऊपर विशेष प्यार रहा जो बाबा ने इन बातों से मुझे न्यारा रखा और मैं सदा देखती थी कि मैं बाबा की गोद में बैठी हुई हूँ। मैं बाबा से अलग नहीं हूँ, मेरा आदि से लेकर अन्त तक ऐसा ही पार्ट रहा, भले मैं सखियों के साथ, सबके साथ पार्ट बजाती थी लेकिन मेरे जो सर्व संबंध थे वह एक ही बाबा से थे। मैं उसी रीति से बाबा के साथ जैसे व्यवहार में, कार्य में आती थी कि बाबा मेरा ही सब कुछ है और जो बाबा मुझे कहे वही करना है। तो बाबा ने मेरी अंगुली पकड़कर सब सिखाया, सब पढ़ाया और बाबा ने मेरे सब संस्कारों को बदल दिया। तो इतने बड़े यज्ञ को बाबा के साथ से मैंने चलाया, बनाया और अन्त में बाबा ने मुझे इतना न्यारा कर दिया जैसे यह मेरी ड्यूटी है, ड्यूटी बजाई और न्यारे हो गये। मेरा किसी भी चीज़ में, किसी भी व्यक्ति में लगाव झुकाव नहीं रहा। अन्त समय मेरी अवस्था ऐसी थी – जैसे मैं न्यारी प्यारी बाबा की गोदी में बैठी हूँ। तो मैं चाहूंगी कि बाबा का हर एक बच्चा अन्दर से इतना न्यारा और प्यारा बनें, सिवाए एक बाप के और कोई याद न आये। दूसरा बाबा ने देखो बार-बार

इशारा दिया है कि अचानक कुछ होगा, बच्चे रेडी रहो। तो सभी अपने दिल से पूछो कि मैं इतना नष्टोमोहा हुआ हूँ? मेरे सर्व सम्बन्ध एक बाबा से हैं या किसी देहधारी में बुद्धि जाती है? घर चलने की तैयारी है या अभी यहाँ बैठने की, रहने की इच्छा है? घर चलने की तैयारी होगी तो बुद्धि सदा उपराम रहेगी। कार्य करते हुए भी न्यारे और प्यारे होंगे। ऐसे ही अनुभव होगा जैसे मैं निमित्त मात्र कार्य कर रहा हूँ लेकिन उपराम हूँ, यह अवस्था न केवल आपको ही अनुभव होगी लेकिन आस-पास वालों को भी अनुभव होगी।

फिर दीदी ने कहा देखो अभी सब बिखरे हुए हो तो इतना बड़ा संगठन दिखाई नहीं देता है लेकिन जब एक वृत्ति वाले, एक संस्कार वाले, एक की याद वाले, एकरस रहने वाले .. ऐसे जब एक समान झुण्ड दिखाई देगा तो लोग कहेंगे अरे यह क्या। जैसे देखो फरिश्ते झुण्ड में उड़ते हैं तो सब देखते हैं, पंछी भी जब झुण्ड में उड़ते हैं तो सबकी नज़र आकाश में जाती है, अकेला उड़ता है तो कोई की नहीं जाती। तो आप लोगों का संगठन भी ऐसा हो। जो वह कान्स्ट्रास्ट महसूस करें, अभी समझते हैं यह भी हमारे जैसे हैं। लेकिन उनको आप लोगों से प्रेरणा मिले। तो ऐसे सैम्पल बनकर दिखाओ। अभी बाबा भी यही चाहता है कि सैम्पल बनें।

फिर मैंने कहा दीदी कुमारियाँ आई हुई हैं, सबने याद दी है? तो बोली – अरे कुमारियों को तो बाबा बहुत प्यार करता है, उनके ऊपर तो बाबा की बहुत नज़र रहती है। तो कुमारियों को कहना कि कुमारी कोमल नहीं बनो, कुछ कमाल करो। शक्ति रूप बनो। अभी नाज़-नखरे छोड़कर न्यारी प्यारी बनो। यह समय ऐसा है जबकि बाबा छोटे-छोटे बच्चों को भी इतनी मदद दे रहा है, जो छोटे बच्चे भी अपने अन्दर इतनी खुमारी महसूस करते हैं जो बस .. तो जब यह छोटे बच्चे भी मैदान में आयेंगे तो देखना इनकी रौनक क्या होगी। तो यह बाबा के ज्ञानी योगी तू आत्मा बच्चे हैं, इनको कहो डरो नहीं, हिम्मत रखो आपकी हिम्मत से, आपके माँ-बाप भी आप पर बलिहार जायेंगे और आपको ईश्वरीय सेवा करने की छुट्टी दे देंगे। आपकी हिम्मत नहीं देखते हैं, तो वह भी

समझ जाते हैं कि यह अभी प्रभाव में है लेकिन अपने पैर पर खड़ी नहीं हैं। तो दीदी ने कहा कुमारियों को कहना कि अपने पैर पर खड़े होकर अपनी हिम्मत से, अपनी शक्ति से उनको ऐसा अनुभव करावें, जो वह कहें कि यह मेरी लड़की नहीं है लेकिन शक्ति है। तो शक्ति-पन का, न्यारे-पन का, दुनियावी आकर्षण से दूर का अनुभव करावें।

तो दीदी के अन्दर जैसे बहुत ज़्यादा उमंग था। दीदी बोलती जाती थी और बाबा बीच-बीच में दीदी को देखता था। तो मैंने कहा बाबा दीदी बहुत दिनों के बाद मिली है ना, तो दीदी के अन्दर जो भरा है वह सारा सन्देश तो देगी। बोला – बाबा मेरे को बहुत दिल होती है कि यह सब जल्दी-जल्दी तैयार हो जाएँ। ऐसा झुण्ड, ऐसा संगठन दिखाई दे जो लोग देखते रह जाएँ कि इन्होंने तो गुप्त अण्डरग्राउण्ड रहकर इतनी बड़ी सेना तैयार कर ली है। तो मेरी दिल है कि बाबा मैं यह सीन देखूँ कि विशाल शिव शक्ति पाण्डव सेना तैयार हो गई है, तब लोगों की आँखें खुलेंगी कि हाँ यह तो बहुत शक्तिशाली योगयुक्त फरिश्ते हैं और तभी फिर जयजयकार का नगाड़ा बजेगा। अभी नहीं बजता है इसका कारण कभी कैसे हैं, कभी कैसे हैं। एकरस अवस्था नहीं है। फिर दीदी ने बाबा को कहा, बाबा जैसे हर एक से आप पूछते हो ना कि इनकी रिज़ल्ट क्या है? तो इन लोगों को भी दिखाओ ना कि तुम्हारा माला में कौन सा नम्बर है? तो बाबा बोले बच्ची अगर मैं यह दिखाऊँ कि माला में कौन-सा नम्बर है तो एक भी नहीं ठहरें, अभी हार्टफेल हो जाएँ। तो बाबा हार्टफेल थोड़े ही करेगा, बाबा तो उमंग-उत्साह दिलायेगा। अन्दर से तो अपने पुरुषार्थ अनुसार बच्चे समझते हैं कि मेरा नम्बर कौन-सा है लेकिन अगर बाबा बता दे तो बच्चे बाबा की रिज़ल्ट नहीं सुन सकते हैं। इसलिए बाबा बच्चों का उमंग-उत्साह बढ़ाता है लेकिन बच्चों की वर्तमान रिज़ल्ट या फ़ाइनल रिज़ल्ट बाबा कभी नहीं देगा। संगठन में बाबा बोल देगा कि बच्चे यह यह पुरुषार्थ करो क्योंकि बाबा किसी को कहे और बच्चा ना करे तो विकर्म बन जायेगा। तो बाबा विकर्म कराने के निमित्त कभी नहीं बनेगा। बाबा हमेशा बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए इशारा

देगा, उमंग-उत्साह भरेगा, शक्ति देगा, सकाश देगा। लेकिन पुरुषार्थ करना बच्चों का काम है। लास्ट में बच्चे खुद अपनी रिज़ल्ट देखेंगे। ऐसे कहते बाबा को भोग स्वीकार कराया और बाबा ने दीदी को खिलाया, दीदी ने बाबा को खिलाया। बाबा ने हम सबको खिलाया। फिर बाबा ने सबको यादप्यार दिया और कहा कि बच्चों को कहना कि मधुवन में आते हो, संगठन में आते हो और इतने अनुभव करते हो, सेवा लेते हो तो सेवा का रिटर्न स्वरूप बनकर दिखाना, ऐसा दृढ़ संकल्प लेकर जाओ। ऐसा बाबा ने इशारा दिया और हम साकार वतन में आ गये।

22-8-98

## “रियाइज़ के साथ-साथ उभे थार-थार रियाइज़ करो तो परिवर्तन थार्ड हो”

(अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज बापदादा के पास गयी तो देखा कि बापदादा बहुत बिजी थे मैं आगे बढ़ते जब नजदीक पहुँची तो बापदादा की दृष्टि हमारे ऊपर पड़ी। बाबा बोले बच्ची आओ, मेरे सहयोगी-साथी आओ। क्या समाचार लाई हो? मेरे मन में तो यही था कि बाबा सुनाये कि किसमें बिजी थे, तो मेरे संकल्प को जानकर बाबा मुस्कराये और बोले कि बच्ची बाबा विश्व की हालत देखते सोच रहे थे कि हालतें तो फ़ास्ट गति से बदल रही हैं, परन्तु मेरे बच्चों के परिवर्तन की गति क्या है? दोनों के अन्तर को देख रहे थे। प्रकृति तो आर्डर के लिए इन्तजार में है। हालतें अति में जा रही हैं, उस अनुसार बच्चों का क्या हालचाल है? बाबा देखते हैं कि बच्चे चाहते भी हैं और परिवर्तन हो भी रहा है लेकिन समय अनुसार बापदादा की शुभ आशाओं के अनुसार अभी भी बापदादा और अधिक

फ़ास्ट गति देखने चाहते हैं। ऐसे बहुत थोड़े बच्चे हैं जो उड़ रहे हैं। बाबा तो बच्चों का पुरुषार्थ देख खुश भी होते हैं जैसे अभी राखी पर सभी ने बहुत अच्छे दृढ़ संकल्प बाप से किये परन्तु वो संकल्प अविनाशी, एकरस, तीव्रगति में नहीं रहते। इसका कारण है रियलाइज़ करते हैं लेकिन बार-बार अपने आप से रिवाइज नहीं करते कि हमने किससे संकल्प किया है! और न करने से नुकसान क्या है! इसलिए बीच-बीच में दृढ़ता की गति कम-ज़्यादा होती रहती है। अब ऐसे संकल्पों को दृढ़ता से और अविनाशी बनाने की आवश्यकता है। बाप तो हरेक बच्चे को अब जल्द से जल्द तीव्रगति से उड़ते हुए देखने चाहते हैं। यह बोल बोलते बापदादा इतना बच्चों के प्यार में समा गये और हरेक को इतने लाड-प्यार से देख रहे थे जो बात मत पूछो। दिल से यही गीत निकल रहा था कि इतना प्यार से सर्वश्रेष्ठ बनाने वाला और कोई नहीं। इसके बाद बाबा बोले, आप समाचार सुनाओ। तो मैं बोली बाबा दादी ने सबकी तरफ से बहुत सिक व प्रेम से याद दी है। दादी को भी सबका बहुत ध्यान रहता है कि जल्दी से बाबा को कुछ करके दिखायें। बहुत दिल से सुनते हुये दादी को सामने देखते हुए बहुत ही जिगरी दादी को प्यार देते हुए बाबा बोले, बच्ची तो आदि से

१. निमित्त भाव, २. निर्माण भाव, ३. निःस्वार्थ भाव, सहनशीलता मूर्त – इन वरदानों की प्राप्त आत्मा है। विशेष सेवा की साथी बनी है।

उसके बाद मैंने जानकी दादी के आपरेशन का समाचार सुनाया। बाबा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची हिम्मत हुल्लास वाली है इसलिए सब सहज होना है। बच्ची का भी वण्डरफुल पार्ट है। एक तरफ देह का हिसाब चुकतू हो रहा है और दूसरी तरफ़ आत्मा शक्तिशाली बन सभी को उमंग-उत्साह में लाने की सेवा कर लास्ट समय तक सेवा का पुण्य जमा कर रही है। यह भी बच्ची की खूबी है क्योंकि बच्ची को १. अनेक आत्माओं प्रति स्नेह, समय देने के फलस्वरूप बहुत शुभकामनायें प्राप्त हैं। २. सर्व को हिम्मत दिलाने के फलस्वरूप दुआयें जमा हैं। ३. बड़ी दिल से सेवा व हर कार्य करने से हर

वस्तु की सदा भरपूरता (सम्पन्नता) है। ४. अटल निश्चय से हर कार्य करने से सहज सफलता प्राप्त है। यह भी ड्रामा में विशेष आत्माओं की विशेषतायें हैं। बापदादा तो यही कहते हैं कि हरेक बच्चे को यह विशेषतायें अपने में चेक करने और उसको अपने में धारण करने का अटेन्शन अब देना है क्योंकि हर विशेषता पर ही मार्क्स जमा होते हैं और पास विद् ऑनर बनते हैं। हरेक बच्चे को अपने जमा का खाता सदा चेक करना और उसको बढ़ाना ज़रूरी है क्योंकि समय अपनी चेतावनी दे ही रहा है।

उसके बाद बापदादा ने जानकी दादी को इमर्ज किया और बहुत प्यार और पावरफुल दृष्टि से रेजेज़ दे रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे सारा शरीर लाइट की छत्रछाया के अन्दर है। कुछ समय के बाद बाबा बोले, विदेश के निमित्त सेवा की भुजायें बहुत अच्छी उमंग से सेवा कर रही हैं। उन सबको एक-एक को नाम सहित बापदादा की याद स्वीकार हो। भारत में भी बहुत अच्छे प्लैन बना रहे हैं तो बापदादा भी दादी के साथ-साथ सेवा में निमित्त सभी मधुबन के पाण्डवों, शक्तियों को याद दे रहे हैं। प्रोग्राम्स तो सभी बहुत अच्छे बना रहे हैं, उमंग-उत्साह भी अच्छा है। साथ में बापदादा की श्रीमत सबको याद है कि कम खर्च बालानशीन करना है। अनेक आत्माओं को सहयोगी बनाने का लक्ष्य रखना है और वातावरण में स्थूल शो न हो लेकिन सिम्पल और आध्यात्मिक, अव्यक्त और ब्युटीफुल हो। यही नवीनता है। बाकी शो तो दुनिया वाले भी बहुत करते हैं। नवीनता यह हो जो आते ही हर एक की आध्यात्मिक वृत्ति बन जाये।

उसके बाद बाबा ने कहा जहाँ-जहाँ भी प्रोग्राम्स कर रहे हैं – उन सबको खास बापदादा की तरफ़ से एडवान्स मुबारक देना। और लास्ट में बाबा ने रतनमोहिनी बहन और मनोहर बहन को खास याद किया और कहा बच्चियाँ भी बहुत सहयोगी हैं। ऐसे ही मुलाकात करते मैं अपने स्थूल वतन पहुँच गयी।

## सफलता का आधार – ब्राह्मणों के शुभ संकल्प

(अव्यक्त बापदादा का दिव्य-सन्देश)

आज जब मैं वतन में गई तो क्या देखा, बाबा सामने खड़े थे और बाबा के नयनों से लाइट की किरणें ऐसे निकल रही थी – जो गोल्डन छत्रछाया के रूप में बनी हुई थी और दोनों ही दादियां आगे थी। साथ में कुछ मुख्य बहनें और मुख्य भाई उस छत्रछाया के अन्दर खड़े थे। बापदादा बहुत मीठा मुस्कराते सबको दृष्टि देते, नयनों की भाषा में स्नेह की भासना दे रहे थे। फिर बाबा बोले बच्ची क्या समाचार लाई हो? बापदादा तो पहले ही सब बच्चों को सेवा का प्रत्यक्ष फल खिला रहे हैं। आओ तुम भी खाओ, ऐसे कहते बाबा ने अपनी बांहों में समा लिया। तो दोनों दादियां भी बांहों में आकर समा गईं। बाबा बोले, बच्ची बाप तो जानते ही हैं कि अन्त में विजय बच्चों की ही है। लेकिन ड्रामा में हर कार्य का समय निश्चित है तो समय तक बच्चों को भाग-दौड़ करते सेवा के निमित्त बनना ही है, लेकिन समय आने पर जो भूलभुलैया का खेल दिखाई देता था उससे भी कोई न कोई रास्ता निकल ही आता है और सहज ही हो जाता है। उसमें जिन-जिन बच्चों ने डायरेक्ट, चाहे इनडायरेक्ट प्रत्यक्ष रूप में वा गुप्त रूप में सहयोग दिया है, उन सबको बापदादा मुबारक दे रहे हैं और मेहनत का फल खुशी स्वतः ही मिल रही है। सब निमित्त महारथियों के शुभ संकल्प ने अच्छा सहयोग दिया है। कोई ने मन्सा से किया, कोई ने भाग-दौड़ साकार रूप में की, सबके एक निश्चय बुद्धि का रिज़ल्ट सामने आ गया है। बापदादा भी सभी निमित्त बने हुए बच्चों को बहुत-बहुत पद्मगुणा मुबारक दे रहे हैं। समय अनुसार अनेकों को अनेक आत्माओं की सेवा का चांस मिला। यही ड्रामा का खेल बच्चों ने देखा। ऐसे कहते बापदादा ने मीठा मुस्कराते विदाई दी।



## दूसरा सन्देश

बापदादा को फ़ारेन की बहनों की मीटिंग का समाचार सुनाया, बापदादा बहुत खुश हो रहे थे और मुस्कराते बोले निमित्त बने हुए बच्चों को बापदादा विशेष स्नेह और मुबारक दे रहे हैं। मधुबन के वायुमण्डल का भी बच्चों को सहयोग अच्छा मिला है। साल में एक बार सर्व टीचर्स को स्व-उन्नति और सेवा के प्लैन मंथन करने का चांस अच्छा मिला है। साथ-साथ ईश्वरीय डिप्लोमेन की तरफ़ भी इशारा अच्छा मिल जाता है।

और बच्चों ने दिल से सुनाया भी है और सुना भी है। बापदादा जानते हैं कि ऐसे समय सब बच्चों को दिल में उमंग है कि स्व-उन्नति और सेवा में आगे बढ़ना ही है और ऐसे निश्चय और हिम्मत वालों को बापदादा की मदद तो सदा ही है। दादियां भी बहुत दिल से सेवा कर रही हैं। रिटर्न तो हर बच्चों को देना ही है। अच्छा सभी बच्चों को विशेष यादप्यार और दिल से बाप की दुआयें स्वीकार हो।

20-3-99

## समीप और समान भव

(दादी जी के प्रति अव्यक्त बापदादा का सन्देश)

दादी आपको बाबा ने सोने-चांदी की थालियाँ भर-भरकर यादप्यार दिया। बाबा ने एक दृश्य दिखाया जिसमें एक बहुत सुन्दर लाइट का सफ़ेद चबूतरा था, उसमें दादी जी बैठी हैं। और ऊपर बादलों में बहुत सारे ब्राह्मण थे, सभी के हाथों से अलग-अलग तरह की लाइट निकल रही थी, जिससे दादी जी के ऊपर एक सुन्दर छतरी जैसी बन गई थी। जिसमें किसी के हाथ से सोने की, किसी के हाथ से मोतियों की, किसी के हाथ से फूलों की लड़ियों जैसी लाइट निकल रही थी। बाबा ने कहा – यह सभी ब्राह्मण आत्माओं की दुआयें दादी को मिल रही हैं।

उसके बाद बाबा ने एक दृश्य दिखाया – जिसमें ब्रह्मा बाबा का हाथ था जिससे सफेद पर्दे पर बाबा लिख रहा था – “समीप और समान भव”।

6-4-99

## थार-थार पोज थढ़लने के थजार अपनी पोजीशन में रहो

(मीटिंग में आये हुए भाई-बहिनों प्रति अव्यक्त बापदादा दिव्य सन्देश)

आज अमृतवेले जब मैं बाबा के पास पहुँची तो जैसे सदैव बाबा नयनों से मुलाकात भी करते हैं और प्यार से स्वागत भी करते हैं। तो मैं जब आगे बढ़ते बाबा को देख रही थी तो बाबा की जो मुस्कराहट थी वह बड़ी प्यारी भी थी और साथ-साथ रहस्य भरी हुई थी। मैं उस रहस्य को जानने की एम से ही आगे बढ़ती गई। तो बाबा मेरे को देखकर और ही ज़्यादा मुस्कराने लगे, जब मैं नजदीक पहुँच गई तो बाबा ने कहा – “आओ मेरे स्व-परिवर्तक, विश्व-परिवर्तक बच्चे आओ।” तो मैं मुस्कराने लगी लेकिन मेरे अन्दर तो क्वेश्चन था कि बाबा आज किस रहस्य से मुस्करा रहा है! बाबा मेरे इस संकल्प को जानते हुए भी पूछने लगा कि बच्ची क्या समाचार लाई हो ?

तो मैंने कहा – बाबा, आज तो मीटिंग का समाचार लाये हैं। इस सीज़न में आपने जो महावाक्य उच्चारण किये, प्रेरणायें दी उसके प्रति सभी आपको थैंक्स और याद-प्यार दे रहे हैं। तो एक घड़ी के लिए बाबा जैसे एकदम कहाँ चला गया हो, ऐसे मुझे अनुभव हुआ। एक सेकेण्ड के बाद फिर बाबा ने कहा – अच्छा, और क्या समाचार है? तो मैंने कहा बाबा आप यहाँ थे? तो कहा नहीं मैं बच्चों के पास गया था। बच्चों की सभा देखी, बहुत अच्छी सभा लगी फिर बाबा बहुत मुस्कराने लगा। मैंने कहा – बाबा, आज आप बहुत मुस्करा रहे हैं, रहस्य क्या है? तो बाबा ने मुस्कराते हुए कहा कि – बच्चे सुनते और सोचते बहुत अच्छा हैं। बाबा बच्चों का सुनना और सोचना देख करके बहुत

खुश होता है। फिर बाबा जैसे चुप हो गया। तो मैंने कहा बाबा परन्तु..... तो बाबा ने कहा कि बाबा सिर्फ यह नोट कर रहा था कि सुनना और सोचना बहुत अच्छा होते भी करने में क्या कारण आता है? बच्चे स्वयं भी महसूस करते हैं कि बाबा जो कहता है जैसे कहता है वैसे नहीं है।

तो मैंने कहा – बाबा, यह भी हो जायेगा ना! बाबा ने कहा होना तो है और बाबा को भी निश्चय है, कि यही बदलने वाले हैं और बच्चों को भी निश्चय है कि हम ही बदलने वाले हैं। लेकिन बाबा ने कहा सिर्फ कारण क्या है कि बार-बार जो सोचते या संकल्प करते हैं, तो जिस समय संकल्प करते हैं उस समय थोड़ा समय उसका असर रहता है और फिर धीरे-धीरे कोई-न-कोई कारण से थोड़ी परसेन्टेज कम होने लगती है। इसका कारण है कि बच्चे जो शुभ संकल्प परिवर्तन का करते हैं, उसे बार-बार अपने आपसे रिवाइज़ नहीं करते हैं। कई बच्चे रियलाइज़ भी करते हैं कि यह नहीं होना चाहिए लेकिन रियलाइज़ करने के बाद जो दृढ़ संकल्प रखकर रोज़ वह रिवाइज़ करें कि हमको यह करना ही है, करना ही है.... इसकी कमी है। तो बाबा ने कहा जैसे कोई भी चीज़ का कमरे आदि का फाउण्डेशन डालते हैं तो उसको इतना कूटते हैं जो वह धरनी पक्की हो जाए। तो बाबा ने कहा ऐसे जो रियलाइज़ करते हो उसे बार-बार रिवाइज़ करो। उसकी कमी होने के कारण धीरे-धीरे कोई बातें आती हैं तो वह बातें परसेन्टेज़ को कम कर देती हैं।

ऐसा कहते बाबा फिर मुस्कराये। मैंने कहा बाबा अभी भी आपके अन्दर कोई बात है जो आप बहुत मुस्करा रहे हैं। तो बाबा ने कहा – हाँ, मैं बच्चों की दो बातों को देखता हूँ – १. बाबा बच्चों को पोजीशन पर खड़ा करता है, बच्चे उस पोजीशन पर खड़े भी होते हैं लेकिन पोजीशन के साथ-साथ, २. अपने पोज़ (मूड) बहुत बदलते हैं। अभी-अभी देखो तो बहुत पावरफुल योग में, नयन और सूरत ऐसे लगती है जैसे सचमुच फ़रिश्ता हो गये हैं। और अभी-अभी कोई बात आ गई तो एकदम शक्ल में फ़र्क आ जाता है, पोज़ बदल जाता है। तो बाबा जो भिन्न-भिन्न पोज़ देखता है, उस पर बाबा को हँसी

आ रही है।

फ़िर बाबा ने कहा बच्चे कहते हैं हमको बाबा से, दादियों से बहुत प्यार है। तो बाबा ने कहा प्यार का अर्थ क्या है? प्यार का अर्थ है – जिससे प्यार है वह जो चाहता है वह करना। साकार में दादियों से जो प्यार मिलता है – उसका रिटर्न क्या दिया? तो हमने कहा बाबा रिटर्न तो सब दुआयें दे रहे हैं। तो बाबा ने कहा- दुआयें तो दे रहे हैं लेकिन प्यार माना जो वह कहें, वह करें। प्यार माना जो उनकी शिक्षायें हैं उसके प्रति समर्पण। तो दादी को और अन्य सभी दादियों को बाबा जैसे सामने इमर्ज करके बहुत मीठी दृष्टि दे रहे थे।

फ़िर बाबा बोले – बाबा अभी यह देखना चाहते हैं कि कहाँ से भी कोई ऐसी कमज़ोरी की बात नहीं हो। शक्तिशाली पुरुषार्थ, शक्तिशाली सम्बन्ध-सम्पर्क और शक्तिशाली सेवा करते आगे बढ़ते रहें। बाबा शक्तिशाली सेवा उसे मानते हैं जिसमें स्व की उन्नति, साथियों की उन्नति और जिनकी सेवा करते हैं उनकी भी उन्नति की रिज़ल्ट नज़र आवे। ऐसे कहते-कहते फ़िर बाबा का रूप थोड़ा चेंज हुआ। तो बाबा ने कहा – बच्ची, बाबा तो जानता है कि ऐसा दिन तो आना ही है लेकिन बाबा सोचते हैं कि समय के पहले मेरे बच्चे एकदम सज़े-सज़ाये गुणों की माला पहने हुए इस सृष्टि मंच पर प्रत्यक्ष हों। अभी वह दिन लायेगा कौन? तो बाबा ने कहा वह दिन भी लाने वाले भी बच्चे हैं और बाबा तो मददगार है ही। फ़िर बाबा ने कहा कि बाबा का बच्चों से प्यार है इसीलिए बार-बार बच्चों को कहता है। अगर बाबा कहेंगे नहीं तो बच्चों का अटेन्शन कैसे जायेगा, इसीलिए बाबा को बार-बार कहना पड़ता है। लेकिन बाबा को निश्चय तो क्या, बाबा निश्चित है कि यह मेरे ही बच्चे एक दिन ऐसा बनेंगे। तो बाबा ने एक सेकेण्ड में सारी सभा इमर्ज की और जैसे गुलाब के पुष्प होते हैं, ऐसे बहुत खुशबूदार दिव्य गुणों की बहुत सुन्दर-सुन्दर मालायें इमर्ज हो गईं और जैसे कोई ऑटोमेटिक मशीनरी थी जो सबके गले में वह चमकती हुई मालायें पड़ गईं। ऐसी सभा लग रही थी जैसे राजाओं की रॉयल सभा हो गई। तो बाबा ने कहा बस, यही दृष्य बाबा देखने चाहता है। ऐसे ही दिव्य गुणों

की माला से सजे सजाये रहो।

उसके बाद बाबा ने कहा कि सभी निमित्त बने हुए सेवाधारी बच्चों को सदा यह प्वाइंट याद रखनी चाहिए कि हम विश्व सेवा की स्टेज पर हैं। सेन्टर पर नहीं हैं लेकिन विश्व के सेवा की स्टेज पर हैं। तो स्टेज पर कितना अटेन्शन से रहते हैं, ऐसी कोई चाल-चलन नहीं हो जो देखने वाले इशारा करें। इसीलिए इन बच्चों को यह अटेन्शन विशेष रखना चाहिए कि हम सेन्टर पर नहीं हैं लेकिन हम विश्व को परिवर्तन करने की स्टेज पर हैं। तो स्टेज याद होने से अपनी स्टेज भी याद रहेगी और सदा बाबा की जो स्टेज है, वह सामने रहेगी। तो स्टेज शब्द कभी भी नहीं भूलना। स्टेज पर हैं, स्टेज बनानी ही है और बाबा की स्टेज जैसा बनना ही है – यह स्मृति में रहने से अटेन्शन रहेगा कि हमारे से ऐसा कोई संकल्प भी न हो जो उसका प्रभाव दूसरों पर पड़े। फिर बाबा ने कहा कि इस सीजन की लास्ट मुरली में भी बच्चों को इशारा दिया है कि बच्चे मेहनत मुक्त बनो, तो दादियों को भी अभी मेहनत से मुक्त करो और स्वयं भी मेहनत मुक्त बनो। ऐसा मेहनत मुक्त वर्ष मनाओ।

फिर बाबा ने कहा – बच्ची, सभी बच्चों को बहुत-बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार देना और कहना कि मीटिंग बहुत अच्छी चल रही है, मेहनत भी अच्छी की है। जगदीश जी को भी याद दी और दादियों को भी विशेष याद दी और कहा कि मेहनत अच्छी की है और मेहनत का फल तो निकलना ही है लेकिन बाबा सभी बच्चों को एक बात ही कहते हैं कि बच्चे खुद को भी माया की युद्ध से मुक्त करो और दादियों को भी मेहनत से मुक्त करो। ऐसे कहते बाबा ने छुट्टी दी और हम साकार वतन में आ गईं।

21-4-99

## “वरदानों और दुआओं से प्रकृति का हिंसात्मक-किताब सहज चुकतू हो जाता है”

(प्यारे अव्यक्त बापदादा का दिव्य सन्देश)

आज विशेष अपनी प्यारी दादी जी के आपरेशन का समाचार लेकर बापदादा के पास गई तो सदा बाबा मुस्कराते मिलते ही हैं, मधुर मिलन मनाने के बाद बाबा बोले आज चलो तो एक दृश्य दिखाऊँ – मैं बाबा के साथ-साथ गई तो क्या देखा – सामने दो पहाड़ थे जो चांदनी की लाइट समान बहुत सुन्दर चमक रहे थे लेकिन एक पहाड़ सारा गोल्डन फूलों से सजा हुआ था और दूसरा पहाड़ गुलाब के फूलों से सजा हुआ था। दोनों के ऊपर दादी जी खड़ी थी और दादी जी का वरदानी हाथ चारों ओर वरदान दे रहा था। देखने में यह दृश्य दिल को बहुत आकर्षित करने वाला था, मैं देखती रही। बाबा ने पूछा बच्ची इसका रहस्य जानती हो? मैं मुस्कराई, बाबा बोले बच्ची यह गोल्डन फूलों का पहाड़ जो है, यह बच्ची को बापदादा द्वारा इतने जो वरदान मिले हैं, यह उन्हीं वरदानों का पहाड़ है। दूसरा है बाप और सर्व द्वारा जो दुआयें मिली हैं - उन दुआओं का पहाड़, जो गुलाब के फूलों से सजा हुआ है। तो जिस आत्मा को इतने वरदान और इतनी दुआयें मिली हुई हैं उसके लिए यह प्रकृति का हिसाब क्या बड़ी बात है, सहज ही है। थोड़ा बहुत दर्द होता है लेकिन बच्ची को तो विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा पावर्स की विल मिली हुई है। (ब्रह्मा बाबा ने लास्ट में दादी का हाथ पकड़ते हुए बहुत पावरफुल दृष्टि दी थी) इसलिए कोई बड़ी बात नहीं है। सब सहज हो जाता है। यह प्रकृति का हिसाब भी सूली से कांटा बन जाता है। ऐसे कहते बाबा ने दादी को बहुत-बहुत स्नेह की दृष्टि दी और सभी की यादप्यार देते और लेते हुए मैं साकार वतन में आ गई। ओमशान्ति।

29-4-99

## ‘‘यह समय है – हिम्मत से उड़ने का, घबराने का नहीं’’

आज बापदादा के पास इस सीज़न का प्रोग्राम पास कराने जाना हुआ। बापदादा ने देखा और मीठा मुस्कराया। मैं भी बापदादा को देख रही थी, बाबा मीठी दृष्टि देते हुए बोले बच्ची प्रोग्राम तो ठीक बनाया है लेकिन बच्चे जानते हैं कि आजकल के समय प्रमाण प्रकृति भी अपनी हलचल मचाने का कार्य बीच-बीच में दिखाती रहती है इसलिए इस खेल को साक्षी दृष्टा की सीट पर सेट बच्चे ही हिम्मत से पास करते रहते और करते रहेंगे क्योंकि प्रकृतिपति, नालेज़फुल ब्राह्मण बच्चे हैं इसलिए नर्थिंगन्यु समझ हलचल में अचल बन आगे बढ़ते चलो। अब तो हिम्मत से उड़ने का समय है, घबराने का नहीं। योगयुक्त बन वाइसलेस बुद्धि द्वारा बापदादा की श्रीमत को कैच करने वाले बच्चे ही सब खेल देखते फ़रिश्ते बन उड़ते रहेंगे और हर समय सफल होंगे। सभी बच्चों को दिलाराम बाप की बहुत-बहुत दिल व जान से यादप्यार देना। ओमशान्ति।

10-5-99

## ‘‘थीती को थिन्दी लगाओ और थिन्हु थन परमात्म-स्मृति में रहो’’

आज विशेष अपनी बड़ी दादी जी, जानकी दादी और साथ में आप सभी देश-विदेश के भाई-बहनों का यादप्यार लेते हुए जब मैं वतन में पहुँची तो क्या देखा, बापदादा बहुत ऊँची लाइट की पहाड़ी पर खड़े हैं और चारों ओर लाइट हाउस समान दृष्टि दे रहे हैं, मैं नज़दीक जाते देखती रही। कुछ घड़ी के बाद बापदादा ने हमें देख मुस्कराया और बोला ‘‘आओ मेरे निश्चित और निश्चित विजयी स्थिति में रहने वाले बच्चे आओ’’। ऐसा कहते बापदादा ने बहुत मीठी दृष्टि दी और मैं ऊपर बापदादा के पास पहुँच गई, तो क्या देखा ?

बापदादा को ऊपर खड़े हुए चारों ओर के बच्चे दिखाई दे रहे थे। ऐसे लग रहा था जैसे नज़दीक से बहुत स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। मैं बोली बाबा ये तो बहुत अच्छा दृश्य है जोकि एक ही स्थान से चारों ओर के सभी बच्चे दिखाई दे रहे हैं। बाबा मुस्कराये और बोले बच्ची, आज बापदादा देख रहे थे कि बच्चे दुनिया की बातों में हलचल में आ रहे हैं या अचल हैं? मैंने कहा बाबा आपने क्या रिज़ल्ट देखी? तो

बाबा बोले अभी बच्चों में अचल, अडोल, एकरस स्थिति में स्थित होने का अभ्यास बहुत चाहिए। भय तो थोड़े बच्चों में रहा, लेकिन व्यर्थ संकल्प चलना कि क्या होगा, कुछ होगा व नहीं होगा, ये हो जाये तो क्या करेंगे....ऐसे व्यर्थ संकल्प भी पावरफुल याद में रहने नहीं देते। अभी-अभी याद, अभी-अभी व्यर्थ संकल्प का खेल चलता रहता है, ये ही बापदादा देख रहे थे। बापदादा तो सदा बच्चों के भिन्न-भिन्न खेल देख मुस्कराते रहते। एक तरफ बच्चों में सेवा का उमंग-उत्साह भी बहुत अच्छा है। दिल से सेवा में लगे रहते हैं, दूसरी तरफ कोई छोटी-मोटी बात आई तो फौरन टेन्शन में आ जाते हैं इसलिए बच्चों का टेन्शन आत्माओं को बाप की तरफ अटेन्शन खिंचवाने में देरी कर रहा है। बाप बच्चों से पूछते हैं कि – “हे मायाजीत, प्रकृतिजीत बच्चे आपने ही तो प्रकृति को आर्डर दिया है कि अब विश्व की सफ़ाई करनी है। वह मास्टर रचयिता का आर्डर मान धीरे-धीरे कुछ-न-कुछ करती रहती है। तो आप आर्डर देने वाले भी हलचल में आयेगे तो प्रकृति अपना कार्य कैसे सम्पन्न करेगी।” बाप कहते हैं कि अब तो चाहे प्रकृति की हलचल हो, चाहे माया भिन्न-भिन्न रॉयल रूप से हिलाने वाली हो लेकिन बच्चे सदा साक्षी दृष्टा की, आराम की सीट पर सेट रहो। कभी सेट, कभी अपसेट यह खेल बहुत खेला, अब तो समय इंतज़ार कर रहा है बाप की प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का। फिर भी मेरे हीरो पार्टधारी बच्चे सदा सर्व शक्ति सम्पन्न एवररेडी नहीं बने हैं इसलिए डबल खेल खेलते रहते हैं। अब बाप कहते हैं – **बीती को बिन्दी लगाओ, बिन्दी बाप समान बिन्दु स्वरूप बन परमात्म-स्मृति स्वरूप सदा रहो।** ऐसे ऊँची-ऊँची पहाड़ी पर ये रूह-रूहान होते हुए बहुत-बहुत आनन्द आ रहा था।

उसके बाद बाबा को दादी की तबियत की खुशख़बरी सुनाई। बाबा बोले – बच्ची को तो बापदादा की सकाश चलाती, उड़ाती रहती है। दादी जानकी की सेवा का चक्कर का समाचार भी सुनाया। बाबा बोले बच्ची को बाबा सदा मस्त फ़रिश्ता कहते हैं। हिम्मत से मदद मिलती है फिर भी दोनों दादियों को अपने रेस्ट व सेवा का बैलेन्स रखना ज़रूरी है।

उसके बाद फ़ारेन वालों की खास याद दी तो बापदादा सुनते सभी को दिल से बहुत-बहुत यादप्यार दे रहे थे। उस समय ऐसे लग रहा था जैसे बाप बच्चों के स्नेह में ही समा गये और बोले, सभी बच्चे सदा सर्विसएबल, सेन्सीबुल और इसेंसफुल का बैलेन्स रखते ब्लैसिंग लेते समीप और समान बनते चलो। बच्चों का उमंग-उत्साह देख बापदादा खुश होते रहते हैं। फिर बाबा ने भारतवासियों को विशेष याद दी और कहा भारत में भी बहुत अच्छे-अच्छे महावीर बच्चे बाप के दिलतख़्तनशीन हैं। बाप की दुआयें और सर्व की दुआओं से उड़ते रहो और उड़ाते रहो।

ऐसे कहते बापदादा ने नयनों में समाये हुए हर बच्चे को बहुत-बहुत यादप्यार दी। ऐसे ही हम भी बापदादा से मिलन मनाते अपने साकार देश में पहुँच गईं। ओमशान्ति।



